



उद्देश्य

नमस्ते दोस्तों...

दोस्तों यह ईबुक **SHARESMIND_HINDI** प्रस्तुत है, जोकि हम लोगो ने पूरी रिसर्च करके बनाई है, इस ईबुक में हमने लगभग शेयर मार्केट की सभी जानकारी देने की कोशिश की है। अगर आपको शेयर मार्केट का कुछ भी नॉलेज नहीं है, या फिर आपको थोड़ा बहुत नॉलेज है, तो यह ईबुक आपके लिए बेस्ट है। यह ईबुक पढ़ने और समझने के बाद आपको शेयर मार्केट का पूरा नॉलेज मिलेगा। और आप इन्वेस्ट भी कर सकोगे, हम आपको यह सलाह देंगे की ईबुक को पूरा पढ़े और समझे अधूरा नॉलेज लेकर शेयर मार्केट में इन्वेस्ट न करें। और हाँ आपको ईबुक में DEMAT ACCOUNT ओपन करने का प्रोसेस दिया है, DEMAT ACCOUNT की जरूरत शेयर मार्केट में इन्वेस्ट करने के लिए होती है। इन्वेस्ट बाद में करो लेकिन DEMAT ACCOUNT ओपन करलो, इससे आपको जो ANGEL BROKING का DEMAT ACCOUNT का DASHBOARD है। वोह समझ में आएगा और हर टॉपिक समझ में आएगा, तो पहले DEMAT ACCOUNT जरूर ओपन करें।

COPYRIGHT: ALL RIGHTS RESERVED. NO PORTION OF THIS BOOK MAY BE PRODUCED IN ANY FORM, DON'T COPY ANYTHING FROM THIS BOOK OR DON'T SHARE THIS BOOK WITH ANYONE WITHOUT PERMISSION OF AUTHOR.

INDEX

- 1) शेयर मार्केट क्या है
- 2) शेयर बाजार के फायदे
- 3) Stock Market की जरूरत क्यों है ?
- 4) शेयर मार्केट के भाव कम ज्यादा क्यों होते है
- 5) BSE और NSE क्या होता है ?
- 6) INVESTING क्या होता है?
- 7) TRADING क्या होता है ?
- 8) Stock Market में INVESTMENT की शुरुआत कब करे ?
- 9) INVESTMENT में ध्यान देने वाली बातें
- 10) Demat Account क्या है, कैसे खोलें
- 11) TRADING ACCOUNT क्या होता है
- 12) IPO – Initial Public Offering क्या है ?
- 13) शेयर मार्केट में INDEX क्या है ?
- 14) SENSEX क्या है ? और SENSEX की पूरी जानकारी
- 15) NIFTY क्या है ? और NIFTY की पूरी जानकारी
- 16) शेयर ट्रेडिंग कितने तरह के होते हैं ?
- 17) स्विंग ट्रेडिंग (Swing Trading)
- 18) SHORT TERM TRADING क्या होता है ?
- 19) LONG TERM INVESTING क्या होता है ?
- 20) BULLS और BEARS स्टॉक मार्केट
- 21) मार्केट कैपिटलाइजेशन MARKET CAPITALIZATION
- 22) स्माल कैप , मिड कैप, और लार्ज कैप SMALL CAP MID CAP LARGE CAP
- 23) ब्लू चिप शेयर क्या होता है
- 24) FACE VALUE क्या होता है?
- 25) Stock Split | स्टॉक स्प्लिट क्या होता है ?
- 26) Dividend क्या होता है
- 27) बोनस शेयर क्या होता है ?
- 28) RIGHT ISSUE क्या होता है ?
- 29) शेयर बायबैक क्या है ?

- 30) EPS क्या होता है ?
- 31) PRICE EARNING RATIO किसे कहते है ?
- 32) Short Selling क्या होता है ?
- 33) Penny Stocks क्या होता है ?

Technical Analysis

- 1) Technical Analysis और स्टॉक मार्केट
- 2) Technical Analysis – क्या है ?
- 3) TECHNICAL ANALYSIS के फायदे
- 4) TECHNICAL ANALYSIS की सबसे बड़ी विशेषता
- 5) ASSUMPTION IN TECHNICAL ANALYSIS (TECHNICAL ANALYSIS की अवधारणा)
- 6) Technical Analysis के मूल तत्व
- 7) TECHNICAL ANALYSIS CHART TYPE
- 8) TECHNICAL ANALYSIS TREND
- 9) Candlestick chart and Pattern
- 10) TECHNICAL ANALYSIS- MARUBOZU
- 11) TECHNICAL ANALYSIS- SPINNING TOP
- 12) TECHNICAL ANALYSIS- DOJI
- 13) TECHNICAL ANALYSIS PAPER UMBRELLA HAMMER
- 14) PAPER UMBRELLA – HANGING MAN
- 15) MULTIPLE CANDLESTICK PATTERN – ENGULFING PATTERN
- 16) BEARISH ENGULFING PATTERN
- 17) GAP UP AND GAP DOWN OPENING CONCEPT
- 18) कैंडलस्टिक पैटर्न के सम्बन्ध में कुछ ध्यान देने वाली बातें
- 19) Volume (वॉल्यूम)- Technical Analysis
- 20) Moving Average मूविंग एवरेज
- 21) Exponential Moving Average (EMA -एक्सपोनेंशियल मूविंग एवरेज)
- 22) Moving Average Crossover System
- 23) Indicators [इंडीकेटर्स] Technical Analysis

शेयर मार्केट क्या है

शेयर क्या है ?

शेयर्स को कुछ दुसरे नामों से भी जाना जाता है – जैसे STOCK -स्टॉक, और EQUITY -एक्युइटी,



STOCK, SHARE, या EQUITY तीनों एक ही होता है ,

शेयर मार्केट क्या है What Is Share Market :

Share का मतलब ,किसी कंपनी की पूँजी को, छोटे-छोटे बराबर हिस्से में बांटने पर, जो पूँजी का सबसे छोटा हिस्सा आता है , उस हिस्से को शेयर (SHARE) कहते है .”

जैसे – एक ABC कंपनी की कुल पूँजी 1 करोड़ है, और कंपनी अपनी 1 करोड़ की पूँजी को, 1 लाख अलग-अलग, बराबर मूल्य के हिस्से में बाँट देती है, अब बांटा गया हर एक

हिस्सा, कंपनी की पूँजी का एक सबसे छोटा भाग है जिसकी कीमत अब 100 रुपये है, पूँजी के इसी छोटे भाग को ही **SHARE** कहा जाता है,

इस तरह ABC कंपनी की पूँजी SHARE में बाँट दिए जाने पर अब कंपनी की पूँजी **SHARE CAPITAL** कहलाएगी, जो इस प्रकार से होगी –

TOTAL NO of SHARE X SHARE PRICE = SHARE CAPITAL

1,00,000 (एक लाख SHARE) X 100 (एक शेयर)
 $= 1,00,00,000$ (1 करोड़ कुल शेयर कैपिटल)

शेयर कंपनी का एक हिस्सा - अब आप समझ गए की SHARE का अर्थ है, कंपनी की पूँजी का एक भाग , यानी जब भी आप SHARE खरीदते हैं, और पैसे चुकाते हैं, तो आप SHARE खरीद कर उस कंपनी को खरीदे गए SHARE के मूल्य के बराबर पूँजी दे रहे हैं,

और BUSINESS में पूँजी लगाने वाला BUSINESS का मालिक होता है, इस तरह आपके पास किसी कंपनी के जितने शेयर होते हैं, आप उन SHARES की कीमत के बराबर ,उस कंपनी में मालिक बन जाते हैं,

जैसे –

अगर आपके पास State Bank of India का 100 शेयर है और एक शेयर की कीमत अगर 300 रुपये है तो इसका अर्थ है की आपने State Bank of India में 100 शेयर X 300

= 30,000/- (तीस हजार रूपये) पूँजी के रूप में दिया हुआ है, और इस 30 हजार रूपये के ऊपर होने वाले लाभ और हानी में आप हिस्सेदार हैं, यानी आप 30 हजार रूपये के बराबर State Bank of India में मालिक हैं।

SHARE से लाभ – शेयर खरीदने और बेचने से किस तरह लाभ कमाया जाता है-

SHARE से पैसे बनाने के दो मुख्य तरीके हैं, वे हैं लाभांश (Dividend) कमाना, और Shares की कीमत बढ़ जाने पर उसे बेच कर लाभ कमाना यांनी Value Growth Income,

लाभांश – DIVIDEND

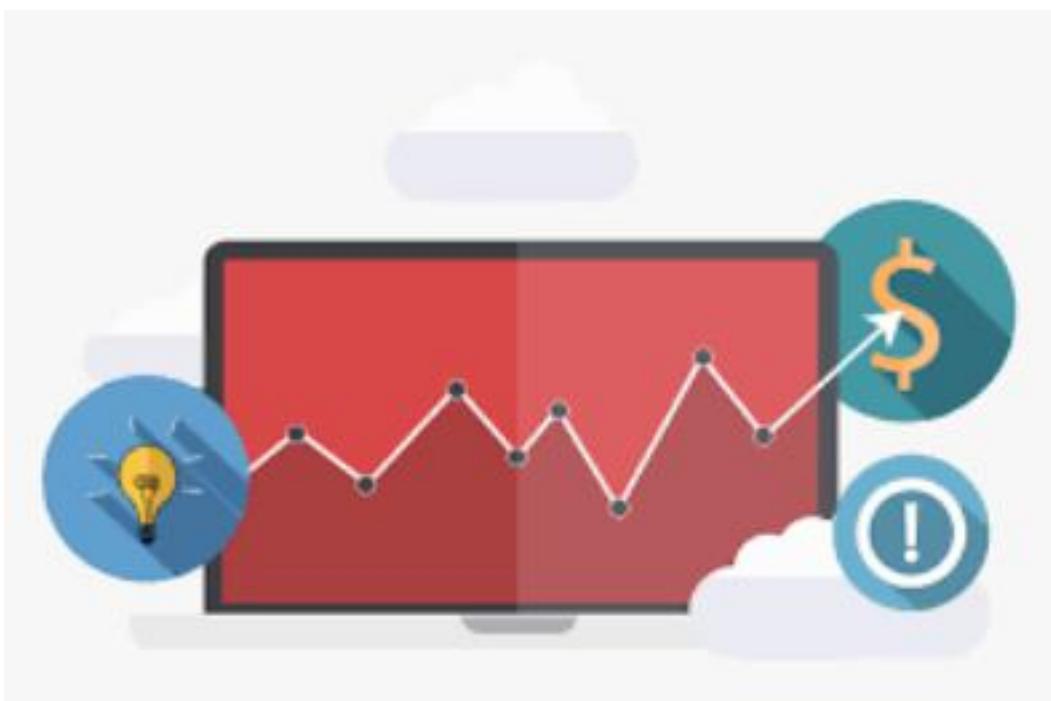
किसी भी BUSINESS में दो स्थिति हो सकती है लाभ और हानी, आपके पास जिस कंपनी के SHARE हैं, वो कंपनी भविष्य में जितना लाभ कमाएगी, उस लाभ यानी PROFIT में, कंपनी के मैनेजमेंट निर्णय के अनुसार, आपको लाभ के हिस्से के रूप में, लाभांश (DIVIDEND) प्राप्त होगा, और इस तरह आप कंपनी के SHARES में INVEST करके आप लाभांश के रूप में INCOME कम सकते हैं।

SHARE VALUE GROWTH

अगर कंपनी लगातार अच्छा BUSINESS कर रही है और लाभ कमा रही है तो इस से कंपनी की कुल वैल्यू बढ़ जाती है और इस तरह उस के पूँजी बढ़ने से SHARES की कीमत भी बढ़ जाती है और हानि की स्थिति में कंपनी की कुल कीमत में कमी आने की वजह से आपके SHARES की कीमत भी कम हो जाती है, और आप SHARE के भाव बढ़ जाने पर

SHARES को STOCK MARKET में बेच कर आप SHARE VALUE बढ़ने से लाभ कमा सकते हैं.

मार्केट क्या है ?



हम सभी मार्केट शब्द से अच्छी तरह से परिचित हैं, हिंदी में मार्केट को बाजार कहते हैं ,
मार्केट ऐसी जगह है जहा कुछ खरीदा और बेचा जाता है ,
जहा कई तरह के दूकानदार अपना – अपना सामान अपने दुकान पे लेके बैठे रहते हैं और खरीदार अपनी जरूरत का सामान खरीदने के लिए बाजार में आता है और दुकानदार से मोल भाव करके खरीदता है,
जैसे – आपके शहर या गाँव या गली का बाजार,

**मार्केट में दो लोगो का होना जरूरी है ,
पहला – खरीदने वाला , दूसरा – बेचने वाला**

SHARE MARKET या STOCK MARKET क्या है ?

बिलकुल आसन शब्दों में कहा जाये तो STOCK MARKET एक ऐसा MARKET PLACE है जहां SHARES की खरीद और बिक्री होती है,

SHARE MARKET एक ऐसा MARKET PLACE है जहां शेयरों के खरीदार और विक्रेता एक साथ, PHYSICAL या VIRTUAL रूप से SHARES खरीदने और बेचने आते हैं,

शेयर मार्केट में सौदे करने वाला प्रतिभागी एक छोटे से छोटा आम निवेशक और बड़े से बड़े Mutual Funds, FII, और DII कम्पनी या कोई भी और कही से भी हो सकता हैं.

निवेशक कोई भी शेयर BUY या SELL के ORDERS एक सिस्टम द्वारा STOCK EXCHANGE को देते हैं, और STOCK MARKET खरीद या बिक्री के ORDERS को पूरा कर देता है।

आज सभी ORDERS COMPUTERIZED SYSTEM से ही पुरे किये जाते हैं और सभी ORDERS को BEST POSSIBLES OFFERS से MATCH किया जाता है और TRADE को कम्प्लीट किया जाता है.

STOCK TRADING की यह ELECTRONIC SYSTEM प्रणाली अधिक पारदर्शिता प्रदान करती है क्योंकि यहाँ सभी BUY और SELL ORDERS को COMPUTER SCREEN पे दिखाती है.,

शेयर बाजार के फायदे



DIVIDEND INCOME – दोस्तों, DIVIDEND कंपनी द्वारा कमाए गए लाभ में एक हिस्सा होता है, जो हमें हमारे द्वारा कंपनी में लगाये गए पैसो के अनुपात में मिल जाता है , STOCK MARKET INVESTMENT से हमें DIVIDEND के रूप में निरंतर लाभ कमाने का मौका मिलता है, कंपनी को जिस तरह लाभ होता रहता है, वो हमें उसी तरह DIVIDEND देती रहती है,

सीमित दायित्व – STOCK MARKET में INVESTMENT में हमें हमारे द्वारा लगाये गए पैसों तक ही दायित्व रहता है,

Ownership in Business (ओनरशिप इन बिज़नेस) – STOCK खरीदने का अर्थ कंपनी में OWNERSHIP में एक हिस्सा खरीदना होता है, आप जितना ज्यादा हिस्सा खरीदते हैं, आप कंपनी के उतने बड़े मालिक बन जाते हैं,

कंपाउंडिंग का लाभ – STOCK MARKET में आप जितने समय के लिए चाहे, उतना INVESTMENT कर सकते हैं, और इस तरह आपको यहाँ चक्रवृधि यानी COMPOUNDING का लाभ मिलता है.

समय की आजादी – मार्केट में निवेश करना और उस से पैसा बनाना अगर आपको आता है, तो आपके पास काफी समय रहता है बाकी चीजों के लिए, क्योंकि एक हफ्ते में मार्केट 5 दिन, और एक दिन में 6 घंटे चालू रहता है, यानि आपको जिदगी जीने के लिए अधिक समय मिल जाता है,

जगह की आजादी – मार्केट में निवेश आप कहीं से भी कर सकते हैं, अपने घर से, ऑफिस से, समुंद्र के किनारे बैठ कर, यानी छुट्टियां एंजॉय करते हुए भी थोड़ा समय निकाल कर आप अपना काम कर सकते हैं, यहाँ तक की अगर आप बीमार हैं, लेकिन दिमागी हालत ठीक है तो आप बेड हॉस्पिटल से भी अपना काम कर सकते हैं, आपके पास इंटरनेट कनेक्शन और डिवाइस जिसमें आपका ट्रेडर का सॉफ्टवेयर चलता हो,

रिटायरमेंट उम्र की कोई लिमिट नहीं – आप किस उम्र के हैं इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता अगर आपके पास **DEMAT अकाउंट** और ट्रेडिंग अकाउंट हैं और आप ऑनलाइन बैंकिंग की फैसिलिटी हैं तो आप किसी भी उम्र में STOCK में INVESTMENT कर सकते हैं, यहां उम्र की कोई सीमा नहीं है और ना ही इस बात का बंधन कि आपको हमेशा यह काम करना ही है, यह पूर्णता आपके ऊपर ही कितना और कब स्टॉक मार्केट में काम करना चाहते हैं और कब नहीं,

बिजनेस की समझ – आप STOCK INVESTMENT से पहले जो भी COMPANY है उसके बारे में कुछ जानकारी हासिल करते हैं, जिस RESEARCH कहा जाता है, इसी RESEARCH से आपको तमाम कंपनियों के बिजनेस को समझने में मदद मिलती है, ऐसे में आपको इन बड़ी कंपनियों के बिजनेस के बारे में काफी सारी जानकारी हासिल होती है, की वह किस तरह काम कर रही है, क्यों कोई कंपनी या उसका बिजनेस आगे बढ़ता है, और कोई कंपनी क्यों फेल कर जाती है, इस तरह के विश्लेषण से आपको बिजनेस के तमाम पहलुओं के बारे में जानकारी हासिल होती है, जो आपको कुछ बिजनेस सीख देती है, और आपकी बिज़नेस की समझ बढ़ जाती है, कि कैसे आप अपने बिजनेस को आगे बढ़ा सकते हैं अगर आप किसी बिजनेस में हैं तो, या आपको कोई नया BUSINESS मौका मिल जाता है,

नो मनी इंवेस्टमेंट लिमिट – स्टॉक मार्केट में इन्वेस्टमेंट एक बिजनेस में INVESTMENT की तरह है, और स्टॉक मार्केट में इन्वेस्टमेंट में आपको यह आजादी मिलती है कि आपके पास जितने पैसे हैं, उतने से ही शुरू शुरू कर सकते हैं, अगर

आपके पास ₹1000 भी है, तो भी आप इन्वेस्टमेंट शुरू कर सकते हैं और अगर वह 1000 करोड़ पर करोड़ है तब भी आप शुरू कर सकते हैं, यहां पर इन्वेस्टमेंट करने के लिए कम से कम या अधिक से अधिक पैसों की कोई सीमा नहीं है, आप अपनी इच्छाअनुसार जब चाहे, जितना चाहे, जितना चाहे, पैसे लगा सकते हैं,

नो मनी इंवेस्टमेंट लिमिट – स्टॉक मार्केट में इन्वेस्टमेंट एक बिजनेस में INVESTMENT की तरह है, और स्टॉक मार्केट में इन्वेस्टमेंट में आपको यह आजादी मिलती है कि आपके पास जितने पैसे हैं, उतने से ही शुरू शुरू कर सकते हैं, अगर आपके पास ₹1000 भी है, तो भी आप इन्वेस्टमेंट शुरू कर सकते हैं और अगर वह 1000 करोड़ पर करोड़ है तब भी आप शुरू कर सकते हैं, यहां पर इन्वेस्टमेंट करने के लिए कम से कम या अधिक से अधिक पैसों की कोई सीमा नहीं है, आप अपनी इच्छाअनुसार जब चाहे, जितना चाहे, जितना चाहे, पैसे लगा सकते हैं,

पैसे से पैसा कमाना - कोई प्रोडक्ट नहीं-स्टॉक मार्केट इन्वेस्टमेंट पैसों से पैसा बनाने की जगह है, यहां पर आपको किसी तरह का कोई भी प्रोडक्ट खरीदना या बेचना नहीं होता है, आप सिर्फ अपने पैसों से स्टॉक्स खरीदते हैं और STOCKS बेचकर बेचकर पैसे प्राप्त करते हैं इसके अलावा किसी तरह का कोई दूसरा प्रोडक्ट नहीं खरीदना है,

प्रॉफिट और लॉस की कोई सीमा नहीं – यहां प्रॉफिट या लॉस की कोई लिमिट भी नहीं है, यह आपके ऊपर है कि आप कितना फायदा कब करना चाहते हैं, और लॉस की स्थिति में अपना LOSS कैसे सीमित रखना चाहते हैं, यह पूरा आपके

ऊपर निर्भर है, आप अपनी रिस्क के क्षमता अनुसार अपना लाभ और हानि दोनों भी डिसाइड कर सकते हैं,

LIQUIDITY ऑन इन्वेस्टमेंट – स्टॉक मार्केट में लगाए पैसे को आप आसानी से CASH में कन्वर्ट कर सकते हैं, जबकि किसी भी दूसरे बिजनेस में लगाए पैसे को CASH में बदलने के लिए काफी समय लग सकता है,

TAX में लाभ - अगर आप लॉन्ग टर्म इनवेस्टर हैं, तो आपको LONG TERM CAPITAL GAIN का लाभ मिलता है, और स्टॉक मार्केट में INVESTED रकम के ऊपर भी आपको टैक्स के बहुत सारे बेनिफिट्स मिलते हैं.

Stock Market की जरूरत क्यों है ?



अलग अलग नजर से देखते हैं कि STOCK MARKET की जरूरत क्यों है ?

सबसे पहले देखते हैं – देश की अर्थव्यवस्था की नजर से- SHARE MARKET देश के अर्थव्यवस्था में खून की तरह है, किसी भी देश का शेयर बाजार उस देश की प्रगति का सूचक होता है, शेयर बाजार देश की औद्योगिक प्रगति (Industrial Development) और आर्थिक व्यवस्था (Economy system) की स्थिति के बारे में भी बताता है, वैसे तो STOCK MARKET का देश की प्रगति में बहुत योगदान है, लेकिन इसके कुछ विशेष योगदान है जैसे –

देश की अर्थव्यवस्था में STOCK MARKET का योगदान –

- 1) औद्योगिक प्रगति (Industrial Development) के लिए पूंजी की कमी को दूर करना,
- 2) देश में आर्थिक संतुलन (Economy Stability) प्रदान करना,
- 3) सभी को Stock Market से लाभ उठाने का मौका देना,
- 4) पूंजी बाजार पर नियन्त्रण – Control On Capital Market

STOCK MARKET की जरूरत – निवेशक की नजर से

STOCK MARKET में SHARES की खरीद और विक्री होती है , और एक शेयर खरीदने वाले को शेयर बेचने वाले और इसी तरह बेचने वालों को खरीदने वाले की जरूरत होती है, और ये सब कुछ STOCK MARKET की मदद से बहुत ही आसानी से हो जाता है, STOCK MARKET के बगैर आम आदमी SHARES खरीदने और बेचने के बारे में सोच भी नहीं सकता, आइये देखते हैं STOCK MARKET से निवेशक को फायदे-

- 1) **MARKET PLACE** - शेयर खरीदने और बेचने के लिए एक MARKET PLACE , जो सब लोगों के लिए आसानी से उपलब्ध हो, STOCK EXCHANGE या STOCK MARKET की मदद से आसानी से ऐसा होना संभव है,
- 2) **EASY ACCESS TO COMMON MAN** - STOCK MARKET की मदद से आज कोई भी शेयर आप आसानी से कहीं से भी INTERNET की मदद से खरीद और बेच सकते हैं,

3) **LIQUIDITY - STOCK MARKET** की वजह से आपको STOCK INVESTMENT में CASH LIQUIDITY का बहुत बड़ा फायदा मिलता है, आप STOCK जब चाहे खरीद और बेच सकते हैं, और आपको CASH के बदले SHARE या SHARE के बदले CASH आसानी से मिल जाता है,

4) **DIGITAL STOCK WALLET - STOCK MARKET** की वजह से हमें SHARES के रख रखाव को लेकर कोई चिंता करने की जरूरत नहीं, हमारे सभी शेयर STOCK WALLET यानी DEMAT ACCOUNT में बिलकुल सुरक्षित होते हैं,

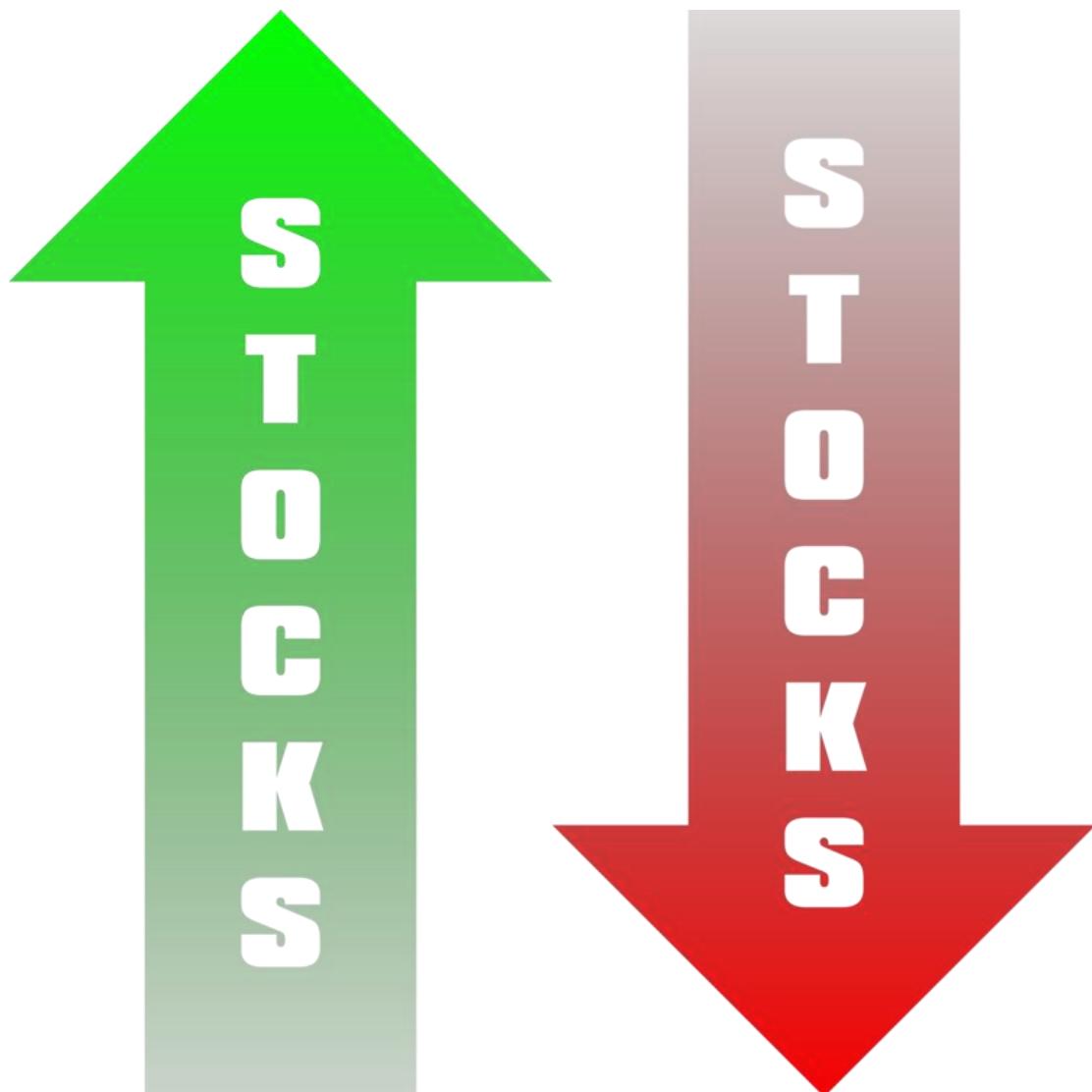
5) **लाभ का मौका –** देश का शेयर बाजार हर किसी को मौका देता है की वो STOCK MARKET में निवेश से अच्छा लाभ कमाए, STOCK MARKET की मदद से कोई भी कही से भी निवेश कर सकता है.

STOCK MARKET की जरूरत – व्यवसायी की नजर से
 STOCK MARKET आज हर बड़ी कंपनी के लिए पूँजी प्राप्त करने का सबसे बेहतर विकल्प है, आइये देखते हैं STOCK MARKET का किसी COMPANY के लिए क्या महत्व है-

1) **LONG TERM FINANCE – STOCK MARKET** द्वारा कंपनी को मिलने वाली पूँजी जब तक कंपनी रहेगी तब तक के लिए है, कंपनी पर किसी तरह की पूँजी वापस करने की कोई जिम्मेदारी नहीं होती, इस लिए कंपनी STOCK MARKET से प्राप्त पूँजी LONG TERM FINANCE होता है,

- 2) **पूंजी पे व्याज का बोझ नहीं** – STOCK MARKET से प्राप्त पूंजी LONG TERM पूंजी के साथ-साथ, ऐसी पूंजी होती है, जिस पे उसे किसी तरह का कोई व्याज नहीं देना होता, जबकि किसी भी अन्य तरह के LOAN पे कंपनी को व्याज देना पड़ता है,
- 3) **LIMITED RISK** – STOCK MARKET में LISTED कंपनी में जिस व्यक्ति के पास जितने SHARE होते हैं, वो व्यक्ति सिर्फ उन शेयर्स के मूल्य तक ही उत्तरदायी होता है, यानी उस कंपनी के शेयर होल्डर्स का रिस्क शेयर्स के मूल्य के हद तक सिमित होता है,

शेयर मार्केट के भाव कम ज्यादा क्यों होते हैं



दोस्तों, अक्सर मन में ये भी सवाल आता है, STOCK MARKET में स्टॉक का भाव कम ज्यादा क्यों होता है? ऐसा क्या है की शेयर्स के भाव घटते और बढ़ते रहते हैं?

आज हम इसी बात को समझेंगे की आखिर SHARE MARKET में होने वाले उतार और चढ़ाव, के पीछे क्या कारण हैं?

STOCK MARKET का सबसे मुख्य काम है, एक MARKET PLACE बनाना, जहा शेयर खरीदने वाले और बेचने वाले दोनों भी हमेशा मौजूद रहे,

और INDIAN STOCK MARKET में BSE और NSE बहुत सही तरह से अपनी भूमिका STOCK MARKET के रूप में निभा रहे हैं,

शेयर्स के भाव में बदलाव – DEMAND AND SUPPLY

STOCK MARKET एक ऐसा MARKET PLACE है, जहा शेयर खरीदने और बेचने के लिए हमेशा BUYER और SELLER की DEMAND बनी रहती है, जो शेयर्स खरीदना और बेचना चाहते हैं,

और किसी भी बाजार को चलाने में DEMAND (मांग) और SUPPLY (आपूर्ति) की मुख्य भूमिका होती है, और इस तरह DEMAND और SUPPLY के नियम से ही STOCK MARKET में उतार चढ़ाव देखने को मिलता है,

जब SHARES की DEMAND अधिक होती है, तो SHARES के भाव बढ़ जाते हैं, और जब DEMAND कम होती है तो SHARES के भाव घट जाते हैं,

और शेयर्स के भाव घटने और बढ़ने से बाजार का सूचकांक यानी BSE-SENSEX और NSE-NIFTY में भी उतार और चढ़ाव देखने को मिलता है ,

शेयर्स के भाव में बदलाव – शेयर के प्रति नजरिया

STOCK MARKET में सिर्फ आकड़ो और पिछले तथ्यों के आधार पर अनुमान लगाया जाता है, की SHARES के भाव

आगे क्या रहेंगे, एक ही STOCK के बारे में हर किसी की अलग अलग राय हो सकती है,

कोई उसे खरीदना चाहता है और कोई बेचना चाहता है, और इसी खरीदने और बेचने के अलग अलग नजरिये को लेकर ही लोग STOCK MARKET में STOCK खरीदने और बेचने का ORDER डालते हैं,

और लोगों के इन अलग अलग नजरिये और ORDERS के ऊपर DEMAND और SUPPLY के नियम से STOCK MARKET हमेशा काम करता रहता है, और डिमांड अधिक होने पे भाव बढ़ जाते हैं और DEMAND कम होने पे भाव कम हो जाते हैं,

STOCK MARKET में कोई भी व्यक्ति अपने अनुमान के हिसाब से सही हो सकता है या गलत भी, कोई भी हमेशा एकदम सही सही अनुमान नहीं लगा सकता, STOCK MARKET ही सब कुछ स्पष्ट करता है, बाकि कोई दूसरा STOCK MARKET में होने वाले उतार चढ़ाव को सही-सही नहीं बता सकता,

इस तरह हम समझ सकते हैं, की STOCK MARKET में जो लोग भाग लेते हैं, यानी STOCK खरीदने और बेचने वाले लोगों को लेकर एक STOCK MARKET बन जाता है और इन खरीदने और बेचने वालों के मध्य एक DEMAND और SUPPLY का नियम काम करने लगता है, जिसकी वजह से शेयर के भाव में उतार और चढ़ाव देखने को मिल जाता है,

STOCK MARKET में उतार -चढ़ाव के कुछ कारण-

वैसे तो STOCK MARKET में उतार चढ़ाव के बहुत सारे कारण हो सकते हैं, उसमें कुछ प्रमुख कारण इस प्रकार हैं,

1) **समाचार** – (POSITIVE और NEGATIVE NEWS FROM GOVERNMENT)- समय- समय पर सरकारे अपनी नीतियों द्वारा अलग क्षेत्रों के विकास की योजनायें बनाती हैं, जैसे ही ऐसी कोई NEWS आती है की सरकार किसी अमुक क्षेत्र में विकास की योजना बनाने वाली है तो उस क्षेत्र से जुड़े शेयर्स की तरफ खरीदने वाले ज्यादा आते हैं, क्योंकि इस से कंपनियों को ज्यादा लाभ होने की उम्मीद होती है, और ज्यादा लोगों के शेयर्स खरीदने की वजह से उस कंपनी के शेयर्स के भाव बढ़ जाते हैं, और ठीक इसके उलटे अगर कभी NEWS NEGATIVE हो यानी उस क्षेत्र के अनुकूल न होने पर उस क्षेत्र से जुड़े कंपनी के शेयर्स को लोग बेचना चाहते हैं, जिस से उस कंपनी के भाव कम हो जाते हैं,

1) **RESERVE BANK OF INDIA (RBI)**- की नीतिया
 2) **विश्व की अर्थव्यवस्था (GLOBAL ECONOMY IMPACT)**

1. **सरकार की नीतिया**
2. **कम्पनी के लाभ कमाने की क्षमता –**
3. **कंपनी की अपनी नीतिया -**
4. **कंपनी का MANAGEMENT-**

इस तरह अन्य बहुत सारे कारण हैं जो STOCK MARKET के उतार-चढ़ाव के अन्य बहुत सारे कारण हैं, जिसकी वजह से STOCK MARKET में हमेशा कुछ न कुछ होता रहता है और ये निरंतर चलता रहता है,

BSE और NSE क्या होता है ?



भारत में दो प्रमुख स्टॉक एक्सचेंज़:

**BSE यानि Bombay Stock Exchange
NSE यानि National Stock Exchange**

NSE और BSE की स्थापना :

BOMBAY STOCK EXCHANGE की स्थापना सन 1875 में हई थी.

NATIONAL STOCK EXCHANGE की स्थापना सन 1992 में हुई थी.

दोनों एक्सचेंज के सूचकांक (INDEX) :

NSE का सूचकांक NIFTY ('N' से NSE 'IFTY' FIFTY यानि NSE-50)। "NIFTY INDEX" NSE में सूचीबद्ध(LISTED) शेयरों का प्रतिनिधित्व(REPRESENT) करती है। और BSE का सूचकांक "SENSEX" ("सेंसिटिव इंडेक्स")। "SENSEX INDEX" BSE में सूचीबद्ध(LISTED) शेयरों का प्रतिनिधित्व(REPRESENT) करती है।

NSE और BSE INDEX में कितने शेयरों को शामिल किया जाता है ?

NSE का सूचकांक यानि NIFTY INDEX में सूचीबद्ध विभिन्न क्षेत्रों(SECTOR) की 50 बड़ी मार्किट कैप वाले शेयरों को शामिल किया जाता है। इसलिए इसे NIFTY-50 के नाम से भी जाना जाता है।

BSE के सूचकांक यानि SENSEX INDEX में BSE में सूचीबद्ध विभिन्न क्षेत्रों(SECTOR) की 30 बड़ी मार्किट कैप वाले शेयरों को शामिल किया जाता है।

NSE का बाजार पूंजीकरण :

NATIONAL STOCK EXCHANGE दुनिया का 11 वां सबसे बड़ा स्टॉक एक्सचेंज है। इसका बजार पूंजीकरण(MARKET CAPITALIZATION) अप्रैल 2018 तक 2.27 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया था।

BSE का बाजार पूंजीकरण :

BSE भारत का दूसरा और दुनिया का 12 वां सबसे बड़ा स्टॉक एक्सचेंज है। इसका बाजार पूंजीकरण(MARKET CAPITALIZATION) 2 ट्रिलियन डॉलर से अधिक है।

NATIONAL STOCK EXCHANGE क्या है ?

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड मुंबई में स्थित भारत की प्रमुख स्टॉक एक्सचेंज है। भारत में एनएसई की स्थापना 1992 में पहली बार इलेक्ट्रॉनिक एक्सचेंज सिस्टम के रूप में हुई थी। हमारे देश में एनएसई पहला ऐसा स्टॉक एक्सचेंज था जो पूरी तरह से स्वचालित स्क्रीन आधारित इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग सिस्टम प्रदान करने वाला एक्सचेंज था, जिसने निवेशकों को एक आसान व्यापार सुविधा प्रदान की। NSE में अनेक प्रकार के सिक्योरिटीज को सूचीबद्ध कराया जाता है।

जैसे – shares, bonds, debenture इत्यादि।

एनएसई में निफ्टी-50 इंडेक्स की शुरुआत 1996 में हुई थी। इस इंडेक्स में NSE में सूचीबद्ध शेयरों में से विभिन्न सेक्टर की 50 लार्ज कैप शेयरों को शामिल किया गया। यदि हम बात करें भारत की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था की तो निफ्टी इंडेक्स इसको मापने का सबसे अहम टूल है।

BSE यानि BOMBAY STOCK EXCHANGE क्या है ?

बीएसई भारत ही नहीं बल्कि एशिया का सबसे प्राचीन स्टॉक एक्सचेंज है। BOMBAY STOCK EXCHANGE की स्थापना 1875 में हुई थी। इसकी शुरुआत स्टॉक ब्रोकर एसोसिएशन के द्वारा की गयी थी। BSE को BOMBAY STOCK EXCHANGE SECURITIES

CONTRACT REGULATION ACT 1956 के तहत इसे देश के प्रमुख स्टॉक एक्सचेंज के रूप में स्थाई मान्यता दे दी गयी । यह भारत का प्रथम और एशिया का सबसे पूराना स्टॉक एक्सचेंज है ।

BSE का सूचकांक SENSEX है, जिसकी शुरुआत 1986 मव हुई थी । सेंसेक्स BSE में विभिन्न सेक्टर के 30 बड़े मार्किट पूंजीकरण वाले शेयरों से से मिलकर बना है । BSE में ऑनलाइन ट्रेडिंग की शुरुआत 1995 में हुई थी । BSE विभिन्न प्रकार की सेवाएं प्रदान करता है जैसे- RISK MANAGEMENT, MARKET DATA SERVICE, DEPOSITORY SERVICE, CDSL(CENTRAL DEPOSITORY SERVICES LIMITED) आदि ।

BOMBAY STOCK EXCHANGE और **NATIONAL STOCK EXCHANGE(NSE** और **BSE**)भारतीय कैपिटल मार्किट का एक अहम् हिस्सा हैं यानि ये दोनों एक्सचेंज भारतीय अर्थव्यवस्था को समझने का मापक या इंडिकेटर भी है.

INVESTING क्या होता है ?



Stock Market Investing करने में सबसे बड़े नाम INDIA में जो आता है वो राकेश झुञ्जुनवाला, और अमेरिका के वारेन वफे, अन्य भी बहुत सारे लोग हैं जिन्होंने Stock Market Investing बहुत सारी सफलता हासिल की है, लेकिन एक छोटे Investment से एक बहुत बड़ा पोर्टफोलियो बनाने के सम्बन्ध में इनके नाम सबसे ज्यादा लिए जाते हैं,

अगर बात की जाये तो Investing in Stock Market की, तो Market में Investor वो होता है जो किसी कंपनी के शेयर्स

इस उम्मीद के साथ खरीदता है कि भविष्य में उसके भाव बढ़ेंगे, और वो अपने Shares के ऊपर अपने अपेक्षित भाव तक वृद्धि के लिए इन्तेजार करता रहता है, शेयर्स के भाव में वृद्धि के लिए एक Investor ज्यादा समय यानी एक साल से लेकर कई सालों तक का इन्तेजार कर सकता है,

इस तरह के INVESTOR जो एक लम्बे समय के लिए अपना पैसा STOCK MARKET में लगाते हैं, वैसे INVESTOR दो तरह के होते हैं,

- 1) VALUE INVESTOR**
- 2) GROWTH INVESTOR**

VALUE INVESTING – वैल्यू इन्वेस्टिंग



VALUE INVESTING का उद्देश्य, उभरती हुई उद्योग और उभरती हुई INDUSTRY की पहचान करना होता है जो FUTURE में बहुत ज्यादा विकास करने वाली है,

वैल्यू इन्वेस्टिंग द्वारा, FUTURE में बहुत ज्यादा विकास करने वाले क्षेत्रों(सेक्टर), में आज काम शुरू करने वाली कंपनियों में,

FUNDAMENTALLY अच्छी कंपनी की पहचान करके, उनमें LONG TERM INVESTMENT करके बहुत अधिक लाभ कमाया जाता है। अगर आपको आज ये पता चल जाये की एक कंपनी है, जो आने वाले भविष्य में INFOSYS की तरह ही DEVELOPMENT करने वाली है, तो आप वैसी कंपनी में एक LONG TERM INVEST करके बहुत सारा पैसा बना सकते हैं, VALUE INVESTOR ऐसी कंपनी की पहचान जिनकरने में लगे रहते हैं, और जैसे ही उन्हें ऐसा मौका मिलता है, वो उन कंपनियों के विकास के शुरुआत में ही INVESTMENT कर देते हैं, भारत में इसका सबसे बड़ा उदाहरण है – 1990 में हिंदुस्तान यूनिलीवर, इंफोसिस, जिलेट इंडिया जैसी कंपनियों में वैल्यू इन्वेसिंग के लिहाज से LONG TERM INVESTMENT के लिए इनके शेयर्स खरीदना। इन कंपनियों ने भारत और विश्व में LIFE STYLE और TECHNOLOGY में हुए बदलाव की वजह से इतना अधिक विकास किया जिसकी सिर्फ कल्पना की जा सकती थी, इन कंपनियों के शेयर धारकों ने 10000 रूपये के INVESTMENT से भी करोड़ो रूपये बनाये हैं।

GROWTH INVESTING – ग्रोथ इन्वेस्टिंग



GROWTH INVESTING का उद्देश्य, उन कंपनियों में INVEST करना है, जो FUNDAMENTALLY अच्छी कंपनी है, और लगातार अच्छा काम कर रही है, लेकिन कभी कभी MARKET में किसी NEGATIVE NEWS या SHORT TERM में कुछ आर्थिक नीति, कंपनी के MANAGEMENT में या किसी भी अन्य वजह से कुछ समय के लिए उस COMPANY के SHARES के भाव गिर गए हो, उन INDUSTRY और COMPANY की पहचान करके उसमें INVESTMENT करना करके लाभ कमाना होता है,

STOCK MARKET में अच्छी से अच्छी COMPANY भी कभी कभी किसी वजह से कुछ समय के लिए अच्छा PERFORMANCE नहीं कर पाती है, और उनके शेयर्स के भाव गिर जाते हैं, GROWTH INVESTOR ऐसे COMPANY की तलाश में रहते हैं, जिस में वे INVEST करके अच्छा लाभ कमा सकें,

भारत में इसका सबसे बड़ा उदाहरण है – 8 NOVEMBER 2016 में 500 और 1000 रुपये के नोट बंदी के समय, लगभग सभी कंपनी के शेयर्स के भाव गिर गए थे, ये समय GROWTH INVESTOR के लिए INVESTMENT करके लाभ कमाने का समस्या अच्छा समय था, जिन लोगों ने भी उस वक्त अच्छी कंपनियों INVESTMENT किया उन्होंने अगले 3-4 महीने के अन्दर उन्होंने 25% से 50% तक लाभ कमाया, STOCK MARKET में ऐसे मौके आते रहते हैं, जहां पे VALUE INVESTMENT और GROWTH INVESTMENT के मौके आते रहते हैं, जो लोग इन मौकों को समझ पाते हैं, वो निश्चित ही अच्छा पैसा बना पते हैं.

TRADING क्या होता है ?



STOCK MARKET TRADING

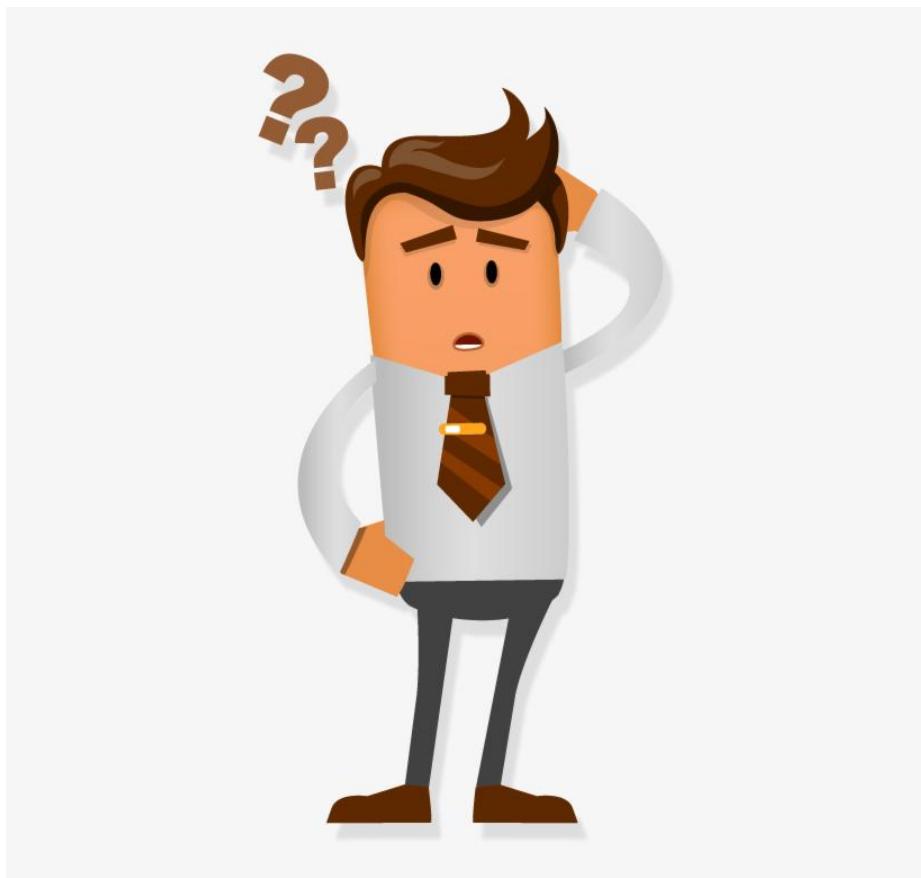
“Trading का अर्थ है किसी वस्तु या सेवा को लाभ कमाने के मकसद से खरीदना और बेचना”

TRADING का हिंदी अर्थ व्यापर होता है ,जब हम कोई बस्तु या सेवा इसी उद्देश्य से खरीदते हैं कि उस वस्तु और सेवा को कुछ समय बाद बेच कर हम उस से लाभ कमाएंगे तो इस कार्य को “TRADING” कहा जाता है, हम अपने आस पास जितने भी व्यापर होता देखते हैं – चाहे राशन या सब्जी की दुकान हो अन्य दुकान, सभी दुकानदार बस्तु या सेवा इस उद्देश्य से खरीदते हैं ताकि वे उसे बेच कर लाभ कमा सकें

TRADING IN STOCK MARKET

हमें देखा कि TRADING का अर्थ, यानी बस्तु या सेवा लाभ कमाने के उद्देश्य से खरीदना और बेचना होता है, ठीक इसी तरह जब हम STOCK MARKET में कोई भी STOCK या SHARE खरीदते हैं, तो हमारा मुख्य उद्देश्य होता है, उस SHARE या STOCK के भाव बढ़ जाने पर उसे बेच कर लाभ कमाया जा सके, और इस तरह STOCK MARKET में भाग लेने वाले 99% से ज्यादा लोग जब कोई शेयर या STOCK खरीदते हैं और बेचते हैं तो उनकी ये क्रिया “STOCK MARKET TRADING” कहलाती है।

Stock Market में INVESTMENT की शुरुआत कब करे ?



अगर बात की जाये की Stock Market की में निवेश शुरुआत कब करे? When to start Stock Market? तो इस सम्बन्ध में शेयर मार्केट के जादूगार और एक समय दुनिया के सबसे अमीर आदमी “वारेन बफे” ने एक बहुत सुन्दर बात कही है , की मैंने 11 साल की उम्र में अपनी पहली INVESTMENT की थी और फिर भी मुझे लगता है की मैंने बहुत देर कर दी आज उम्र के 70 साल होने पर ये अफ़सोस है , की उन्होंने बहुत देर कर दी, INVESTMENT करने में, तो आप समझ सकते हैं, की INVESTMENT जितना जल्द आप शुरू कर सकते हैं, कर देना चाहिए,

INVESTMENT करने की कोई उम्र नहीं होती, बस इसे करते रहना चाहिए, ताकि आपको INVESTMENT के लाभ

मिल सके, INVESTMENT नहीं करने से आ से धन बनाने के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है, जिस से आप कम से कम रिस्क लेकर अधिक से अधिक लाभ कम सकते हैं, और साथ ही साथ आपको इस दुनिया के सबसे बड़े अजूबे COMPOUNDING का लाभ मिलता है,

COMPOUNDING और समय का लाभ उठा के बहुत आसानी से काफी सारा धन बना सकते हैं,

इस तरह अगर देखा जाये तो जब कोई ये पुछता है की Stock Market की में निवेश शुरुआत कब करे ? तो उसका यही जवाब होगा की , जितना जल्द हो सके, उसे INVESTMENT शुरू कर देना चाहिए,

जल्द से जल्द INVESTMENT का सबसे बड़ा लाभ है –

- 1) INVESTMENT GROWTH के लिए पर्याप्त समय,
- 2) RISK पे CONTROL,
- 3) COMPOUNDING का लाभ,
- 4) INVESTMENT पे पूरा लाभ उठा पाना,
- 5) WEALTH CREATION हो पाना,
- 6) जल्द से जल्द फाइनैंसियल फ्रीडम पाना
- 7) जल्द RETIREMENT ले पाना

आशा है , आप समझ पाए होंगे की . हमें Stock Market की में निवेश शुरुआत कब करनी चाहिए

INVESTMENT में ध्यान देने वाली बातें



दोस्तों, INVESTMENT के नाम पर बहुत सारी FAKE कंपनी भी बाजार में मौजूद होती है, आपको हमेशा इनसे बचके रहना है, INVESTMENT के नाम पर आपने अपने आस पास के ऐसे बहुत से लोगों को देखा होगा, जिनके पैसे कही ऐसी जगह फंस जाते हैं या डूब जाता है, हम इसी के बारे में बात करेंगे की कैसे आप इस तरह के बुरे INVESTMENT से बचें.

किसी भी तरह के INVESTMENT से पहले कुछ बातों पर ध्यान देना जरूरी हो जाता है, क्योंकि INVESTMENT आपके मेहनत से कमाए पैसे जुड़ा होता है, और कोई भी नहीं

चाहता कि वो अपने मेहनत से कमाए पैसे को , किसी बुरे INVESTMENT में गवा दे,
इसलिए आप कोई भी INVESTMENT करने से पूर्व कुछ बातों का जरूर ध्यान रखें जैसे –

1) INVESTMENT के लिखित TERM AND CONDITION को समझना

सभी तरह के INVESTMENT के RISK के बारे में , उस INVESTMENT के TERM AND CONDITION में आमतौर से छोटे छोटे अक्षरों में लिखा होता है, आपको अपने INVESTMENT से जुड़े तरह के RISK के बारे में ध्यान से पढ़ना समझना होता है, INVESTMENT बेचने वाली कंपनी के SALES PERSON की बातों पे ज्यादा भरोषा न करे, अक्सर SALES PERSON अपने पर्सनल फायदे यानी COMMISSION और SALES PRESSURE के लिए INVESTMENT से होने वाले फायदों को बढ़ा चढ़ाकर बताते हैं, और INVESTMENT से जुड़े RISK के बारे में ज्यादा बात नहीं करते, इसलिए आपको SALES PERSON की बातों और INVESTMENT के DOCUMENT में TERM AND CONDITION दोनों को ध्यान से समझना होता है, अगर SALES PERSON जो कुछ भी कह रहा है, वैसी कोई बात टर्म एंड कंडीशन में नहीं दिखे, तो आपको ऐसे इन्वेस्टमेंट से बहुत सावधान रहना चाहिए,

2. INVESTMENT DOCUMENT SIGN करने से पहले उसे समझने के लिए थोड़ा सा वक्त जरूर ले

कहते हैं दुर्घटना से देर भली, वैसे तो यह लाइन हमें और रोड में ट्रैवलिंग के समय पर देखने को मिलती है , लेकिन आपका INVESTMENT भी एक पैसे से पैसे बनाने का सफर है,

जिसमें यदि सावधानी ना ली जाए तो नुकसान होने की संभावना बढ़ जाती है, कहने का मतलब जब भी किसी DOCUMENT पे आप SIGNATURE करे ,चाहे वो इन्वेस्टमेंट डॉक्यूमेंट हो या कुछ और ,तो थोड़ा समय उसे समझने के लिए जरूर लें,

कोई भी डॉक्यूमेंट SIGN कर देने का मतलब होता है, कि आपने उस DOCUMENT की सारी बातों को पढ़ और समझ लिया है, और उससे जुड़ी सारी बातों और RISK को भी समझते हैं, लेकिन अक्सर ऐसा नहीं होता ज्यादातर लोग बिना पढ़े ही बस भरोसे पर DOCUMENT SIGN कर देते हैं,

एक बार आपने DOCUMENT बिना पढ़े ही SIGN कर दिया तो, याद रहे बाद में आप ये नहीं कह सकते की उस DOCUMENT में लिखे किसी बात को आपने नहीं पढ़ा था या नहीं समझा था, इसलिए हमारी कोशिश यही होनी चाहिए कि किसी भी तरह के DOCUMENT पे SIGNATURE से पहले DOCUMENT में लिखी सारी बातों को समझने में थोड़ा वक्त जरूर ले,

DOCUMENT पढ़ने और समझने के लिए थोड़ा समय जरूर लगता है, थोड़ी देर ही सही लेकिन इस तरह आप भविष्य में होने वाली किसी भी बड़ी मुसीबत से बच सकते हैं,

अगर POSSIBLE हो तो आप DOCUMENT अपने पास रखकर आराम से पढ़ कर समझ लेना चाहिए , फिर आप SIGN कर सकते हैं.

3. INVESTMENT OFFER को ध्यान से समझो,

आज आपको INVESTMENT से सम्बंधित काफी सारे CALLS, SMS आते हैं, या EMAIL, INTERNET, NEWSPAPER और TV या किसी अन्य माध्यम से अलग अलग तरह के बहुत सटे INVESTMENT OFFER देखने और सुनने को मिलते हैं, अगर आपको कोई इन्वेस्टमेंट पसंद आता है और आप उसमें निवेश करना चाहते हैं तो थोड़ा वक्त उसी INVESTMENT OFFER को सही तरह से समझने के लिए जरूर दें, जिसमें आपको यह देखना होता है कि-

- 1) क्या वह इन्वेस्टमेंट पूरी तरह LEGAL है या नहीं, आपको हमेशा क़ानूनी रूप से वैध INVESTMENT ही करना है,
- 2) इंवेस्टमेंट ऑफर की HISTORY क्या है, कब से इस तरह के OFFER है और उनसे वास्तव में कितना लाभ प्राप्त हुआ है,
- 2) जिन लोगों ने इन्वेस्टमेंट किया है उनका फीडबैक क्या है
- 3) INVESTMENT करने वाली कंपनी की ऑफिस कहाँ कहाँ पर है, उसके खिलाफ कितने COMPLAINTS हैं, आप इसे इंटरनेट पर भी चेक कर सकते हैं,
- 4) इंटरनेट पर PRESENCE को फाइनल ना समझे, उस कंपनी के MAIN ऑफिस या LOCAL OFFICE पे अगर पॉसिबल हो तो जरूर VISIT करें,
- 5) कैश पेमेंट से बचें हमेशा क्रॉस चेक जो डायरेक्ट कंपनी के नाम से हो उसका इस्तेमाल करें

6) INVESTMENT में LIQUIDITY कैसी है, यानी आप कितनी जल्दी से INVESTMENT को CASH में बदल सकते हैं, इस बात का भी ध्यान रखें

इस तरह आपको INVESTMENT करने से पूर्व INVESTMENT OFFER करने वाली कंपनी के OFFER और COMPANY की विश्वसनीयता और वास्तविकता दोनों के बारे में अच्छे से रिसर्च के समझ लेना चाहिए ,फिर आप उसके बाद यह निर्णय करें कि आपको अपनी बहुत मेहनत से कमाए पैसे उस कंपनी को देना चाहिए या नहीं क्योंकि कंपनी अच्छा रिटर्न देने का वादा कर रही है सिर्फ इस बात के लिए आप अपने पैसे उनके पास इन्वेस्ट नहीं कर सकते.

Demat Account क्या है, कैसे खोलें



Demat अकाउंट के जरिये ही लोग शेयर बाजार में शेयर को खरीद या बेच सकते हैं। इस अकाउंट को खुलवाने के लिए आपके पास PAN कार्ड का होना जरुरी है। बिना PAN कार्ड के आप डीमैट खाता नहीं खोल पाएंगे। **Demat Account** लोगों के द्वारा शेयरों को खरीदने या बेचने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। जिस प्रकार लोग अपना पैसा बैंक अकाउंट में रखते हैं ठीक उसी प्रकार लोग डीमैट खाता में अपने शेयर रखते हैं।

जब भी हम अपने बैंक अकाउंट से पैसे निकालते हैं तो वह हमको भौतिक रूप में मिलते हैं। पर जब तक बैंक में होते हैं वह डिजिटल करेंसी होती है। जब भी हम डेबिट कार्ड से कहीं

पर पेमेंट करते हैं तो ये भी Digital Payment यानी की इलेक्ट्रॉनिक Money Transfer का एक प्रारूप हम उपयोग करते हैं। इसी तरह जब हमारे पास Demat अकाउंट में शेयर हैं तो हम उनको किसी दुसरे व्यक्ति के Demat अकाउंट में digitally ट्रान्सफर कर सकते हैं। ऐसे में हमको शेयरों को भौतिक रूप में रखने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। सरे शब्दों में कहें तो शेयरों को Digitally यानी की इलेक्ट्रॉनिक रूप से रखने की सुविधा को डिमैट कहते हैं। Demat का पूरा नाम “**Dematerialize**” होता है। सिक्योरिटीज यानी की शेयर आदि को भौतिक रूप में बदलने की प्रक्रिया को dematerialization कहते हैं। जैसा की मैंने पहले बताया की पुराने समय में जब भी आप कोई शेयर खरीदते थे तो कंपनी आपको उस शेयर से जुड़े दस्तावेज भेजती थी। वह इस बात का सबूत था की आपने शेयर में निवेश कर रखा है। पर जब भी आप वह शेयर बेच देते थे तो सबसे पहले वह दस्तावेज कंपनी के दफ्तर में जाता था। वहां पर कंपनी द्वारा देखा जाता था की जब आपने शेयर बेचा था तब उसका भाव क्या था और उसी के मुताबिक आपको आप पैसा मिलता था। यह प्रक्रिया काफी समय खराब करने के साथ साथ साथ जटिल भी थी। इसलिए ज्यादातर लोग शेयर में निवेश करने से बचते थे। पर आज के समय पर तो दुनिया ने काफी तरकी कर ली है। आपने जैसे ही शेयर खरीद वह कुछ ही समय बाद आपके अकाउंट में आ जाएगा। और अगर आप कोई शेयर बेचते हैं तो उसका पैसा कुछ देर में ही आपको दे दिया जायेगा। आजकल तो आपको शेयर खरीदने या बेचने के लिए कंप्यूटर की भी जरूरत ही नहीं है आप अपने मोबाइल से ही ये सब कर सकते हैं। Demat खातों तक पहुँचने के लिए आपको Password की जरूरत पड़ती है और transaction के लिए आपको transaction password डालना पड़ता है।

डीमैट अकाउंट ओपन करने के लिए बहुत सरे ब्रोकर होते हैं जैसे - zerodha, sherkhan, upstox, angel broking लेकिन हम आपको angel broking recommend करेंगे, जोकि इस फ़िल्ड में 30 सालों से काम कर रही है.

Angel Broking में डीमैट अकाउंट कैसे ओपन करें उसका पूरा प्रोसेस :

सबसे पहले तो Angel Broking की वेबसाइट पर जाए जिसकी लिंक आपको निचे दी हुई है. और हाँ अगर आप हमारी लिंक से डीमैट अकाउंट ओपन करते हो तो आपको कुछ ऑफर्स भी मिलेंगे तो निचे दी हुई लिंक से ही अकाउंट ओपन करें अगर आप ऑफर्स का लाभ लेना चाहते हो तो.

इस लिंक से अकाउंट ओपन करें -

<http://tinyurl.com/y7m9c3vc>



STEP - 1

WHY CHOOSE ANGEL BROKING



लिंक पर जाने के बाद पहला पेज यह
ओपन होकर आयेगा

यहाँ अपना - Name, Mobile No, City
की जानकारी Fill करें

और मोबाइल पर आया हुआ OTP Enter करने

बाद Take Me Ahed पर क्लिक करें

NEXT ➔

Hi [REDACTED], You are Just a few steps away from your first trade
Please enter your bank details

DOB: DD / MM / YYYY PAN Number: EMAIL ID: WE WONT SPAM YOU 😊

BANK A/C NUMBER: IFSC CODE: Search

Exclusive Offer For Today Only - Account Opening is Rs-699/- **FREE!**
₹0 for Equity Delivery
No Hidden Charges
₹20 per order for Intraday, F&O, currency & commodity

1st year AMC FREE
Plan Details Leverage you can Avail ↘

TAKE ME AHEAD

We fully guarantee that all online transactions you make with us are 100% secure.
We use 256-bit Secure Socket Layer(SSL) with 2048 bit key size.

फिर अपनी Date of birth,PAN Number, Email Id,Bank A/C, IFSC Code यह सभी जानकारी Fill करने बाद आपको कुछ अपनी Personal जानकारी भी Fill करनी होगी उसके बाद Continue करें.

NEXT ➔

Please help us with your personal details
Choose from the options below

AADHAAR **DigiLocker** **Enter Details Manually**

Share Offline Aadhaar Share Via DigiLocker Enter Details Manually
(Keep your Pan card ready to upload) (Keep your Pan card ready to upload) (Keep your Pan, Address proof, Photo ready to upload)
Need help with Uploading? Need help with Sharing?

STEP - 3 PROCEED

यहां आपको अपनी आधार कार्ड की जानकारी Fill करने के लिए तीन तरीके दिए हैं, आप तीनों में से कोई भी एक चुन सकते हो, यहां हम Manually को चुनते हैं.

NEXT ➔

Upload required documents to complete your Process
* These fields are mandatory as per regulation

	Pan Card *	For Photo Id Proof (IMG_20200329_132324.jpg)	<input type="button" value="Upload"/>	<input type="button" value="Preview"/>
	Client Signature *	(IMG_20200329_132337_1 (1).jpg)	<input type="button" value="Upload"/>	<input type="button" value="Preview"/>
	Bank Statement	Optional : Require 6 month statement for Future Options, Commodity & Currency	<input type="button" value="Upload"/>	

I am Interested in Receiving WhatsApp Notifications

Note: File Format allowed are jpg, jpeg, png, pdf and file size allowed is 5MB or less.

STEP - 4

फिर आपको PAN CARD, SIGNATURE, BANK STATEMENT की डॉक्यूमेंट की फोटो Upload करनी होगी.

NEXT ➔

NSDL e-Sign

NSDL Electronic Signature Service

ASP Name	Angel Broking Limited
Transaction ID	UKC-eSign:2470-202003291608418933
Date & Time	2020-03-29T16:08:48

I hereby authorize NSDL e-Governance Infrastructure Limited (NSDL e-Gov) to -
1. Use my Aadhaar / Virtual ID details (applicable) for the purpose of eSigning of account opening or updation form for/with Angel Broking Limited and authenticate my identity through the Aadhaar Authentication system (Aadhaar based e-KYC services of UIDAI) in accordance with the provisions of the Aadhaar (Targeted Assistance to Poor and Disadvantaged Social, Financial and other Subsidies, Benefits and Services) Act, 2016 and the allied rules and regulations notified thereunder and for no other purpose.

2. Authenticate my Aadhaar / Virtual ID through OTP or Biometric for authenticating my identity through the Aadhaar Authentication system for obtaining my e-KYC through Aadhaar based e-KYC services of UIDAI and use my Photo and Demographic details (Name, Gender, Date of Birth and Address) for the purpose of eSign of account opening or updation form for/with Angel Broking Limited.

3. I understand that Security and confidentiality of personal identity data provided, for the purpose of Aadhaar based authentication is ensured by NSDL e-Gov and the data will be stored by NSDL e-Gov till such time as mentioned in guidelines from UIDAI from time to time.

VID/Aadhaar: 71110 |

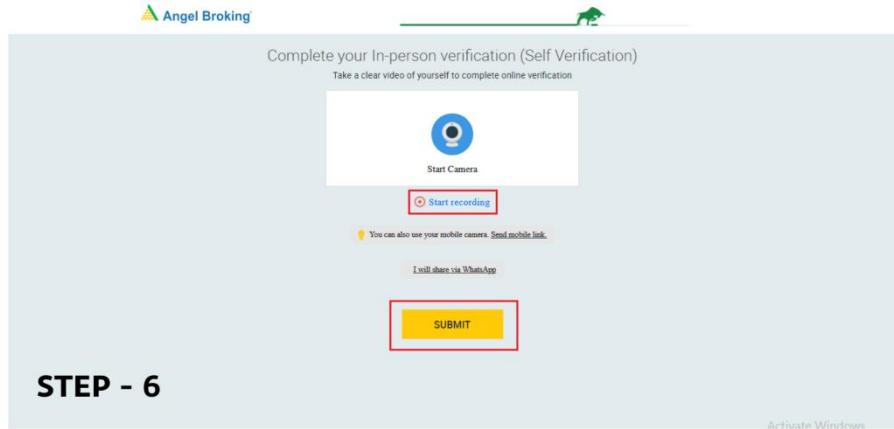
Enter Valid Virtual ID or AADHAR | [Click Here to generate Virtual ID.](#) [Download Instructions](#) to generate Virtual ID in lieu of Aadhaar.

©2019 NSDL E-Governance Infrastructure Pvt. Ltd. All rights reserved.

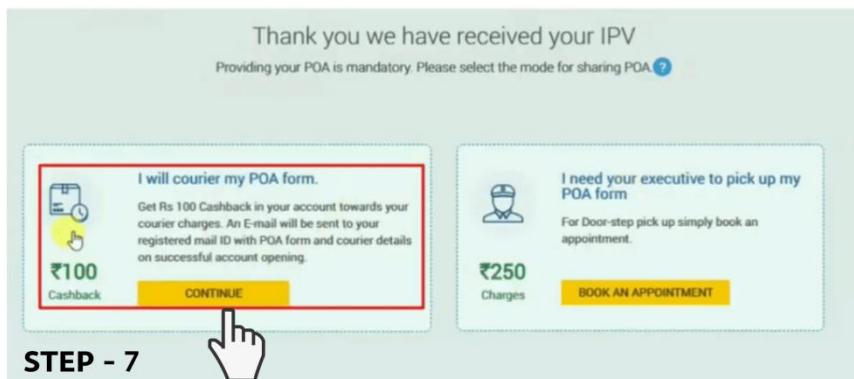
STEP - 5

फिर उसके बाद Document Esign करने के लिए आपका आधार नंबर Enter करें।
इसके लिए आपका आधार नंबर अपने मोबाइल नंबर से लिंक होना जरूरी है, तब आपको OTP आयेगा.

NEXT ➔

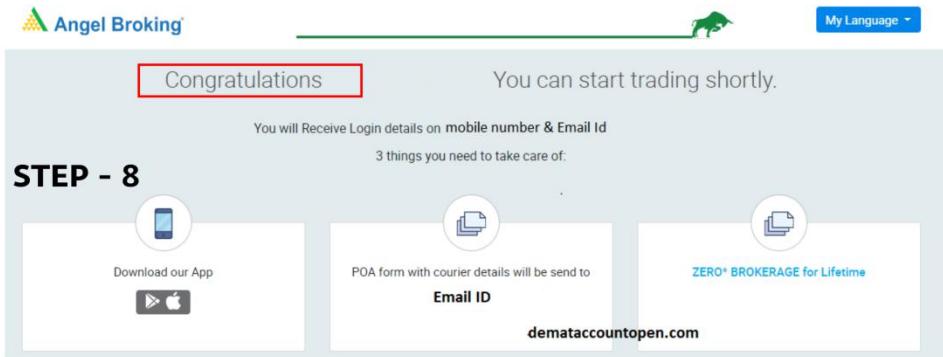


फिर Self Verification करने लिए आपके Face के नीचे Adhar Card और PAN CARD पकड़कर वीडियो बनाए, आप वीडियो WhatsApp से भी Share कर सकते हो.



**यह process Optional है,
Continue पर क्लिक करें**

NEXT ➡



अब आपका Demat Account खुल चुका है

आपके Mobile No और Email पर User ID और PASSWORD आपको मिलेगा.

**फिर Angel broking Application
डाउनलोड करके Login करें**

NEXT ➡

TRADING ACCOUNT क्या होता है



TRADING ACCOUNT का इस्तेमाल स्टॉक मार्केट में स्टॉक को खरीदने के लिए पैसे के लेन देन और शेयर खरीदने तथा बेचने के लिए STOCK BROKER को आर्डर देने के लिए किया जाता है, ट्रेडिंग अकाउंट हमारे DEMAT ACCOUNT के साथ LINK कर दिया जाता है, और जब TRADING ACCOUNT की हेल्प से जब हम शेयर खरीदने का आर्डर स्टॉक मार्केट को देते हैं, और हमारा आर्डर कम्पलीट हो जाता है तो खरीदे गए शेयर हमारे DEMAT अकाउंट में जमा हो जाते हैं, और जितने मूल्य का शेयर खरीदते हैं, उस मूल्य के साथ और टैक्स तथा ब्रोकरेज चार्ज के साथ हमारे ट्रेडिंग अकाउंट से पैसे कट जाते हैं, और इसी तरह

जब हम शेयर बेचते हैं तो बेचे गए शेयर को **DEMAT** से कम कर दिए जाते हैं, और बेचे गए शेयर का अमाउंट हमारे ट्रेडिंग अकाउंट में ब्रोकरेज तथा टैक्स काटने के बाद जमा हो जाता है,

इस तरह ट्रेडिंग अकाउंट, सिर्फ ट्रेडिंग करने के लिए होता है, जहा पर हमारे शेयर्स खरीदने और बेचने के ऑर्डर्स और पैसो के डेबिट और क्रेडिट का रिकॉर्ड रहता है,”

सभी ब्रोकर्स **DEMAT** और ट्रेडिंग अकाउंट साथ ही साथ खोल देते हैं,

स्टॉक ब्रोकर और ट्रेडिंग अकाउंट

हम डायरेक्टली स्टॉक मार्केट को कोई भी शेयर खरीदने और बेचने का आर्डर नहीं दे सकते हैं, हमारा स्टॉक ब्रोकर हमारे शेयर्स खरीदने और बेचने के आर्डर को स्टॉक मार्केट तक पहुंचाता है,

और इसलिए स्टॉक ब्रोकर हमारे सभी BUY और SELL के ORDERS को स्टॉक मार्केट तक पहुंचाने के लिए एक जो अकाउंट खोलता है, वो ट्रेडिंग अकाउंट कहलाता है,

आज सभी स्टॉक ब्रोकर कंपनी ट्रेडिंग अकाउंट खोलने के साथ हमें एक TRADING PORTAL/MOBILE APP या TRADING TERMINAL SOFTWARE अपनी WEBSTIE पर LOG IN करने के लिए यूजर आईडी और पासवर्ड देती है,

और अपने यूजर आईडी जिसका इस्तेमाल करके हम स्टॉक ब्रोकर के पास LOG IN करके अगर स्टॉक ब्रोकर कोई बैंक नहीं है तो पहले हमें अपने ट्रेडिंग ACCOUNT में पैसे जमा करने पड़ते हैं,

और फिर हम जो भी शेयर खरीदना या बेचना चाहते हैं, उस शेयर को SELECT करके अपनी इक्क्षानुसार QUANTITY और PRICE डालने के साथ आर्डर कर सकते हैं,

फिर हमारा स्टॉक ब्रोकर हमारे लिए उतने शेयर का आर्डर स्टॉक मार्केट में पहुंचता है, और स्टॉक मार्केट में जैसे हमारा आर्डर किसी काउंटर आर्डर से मैच हो जाता है, तो हमें वो शेयर्स मिल जाते हैं,

TRADING ACCOUNT के फायदे

- शेयर खरीदना और बेचना बिलकुल आसन हो जाना,
- शेयर खरीदने के लिए पैसो का डेबिट और क्रेडिट की सुविधा,
- मार्जिन मनी की सुविधा
- शेयर बेचने पर एकदम आसान और सुरक्षित, विस्वसनीय और सुविधाजनक
- जीरो पेपर वर्क – लिखित आर्डर की कोई जरूरत नहीं ,
- ऑनलाइन ट्रेडिंग अकाउंट हो जाने से ब्रोकरेज चार्ज पहले के मुकाबले बहुत ही कम हो जाना ,
- शेयर का AUTOMATICALLY क्रेडिट और डेबिट,
- आप दुनिया में कहीं रहते हुए शेयर्स खरीद और बेच सकते हैं

IPO – Initial Public Offering क्या है ?



IPO का फुल फॉर्म है – **Initial Public Offering**

और Initial Public Offering का हिंदी अर्थ है – प्रारंभिक सार्वजनिक प्रस्ताव,

जब कोई कंपनी, अपनी पूँजी की आवश्यकता के लिए ये निर्णय लेती है, कि वह अपनी कम्पनी का Share आम जनता को बेचकर, अपनी पूँजी की आवश्यकता को पूरी करेंगी,

तो इसके लिए उस कम्पनी को अपना शेयर लोगो को बेचने के लिए **SEBI** द्वारा बनाये गए नियम और शर्तों को पूरा करते हुए, आम जनता के सामने शेयर बेचने के

प्रस्ताव (PROSPECTUS) को लाना होता है, इसी प्रस्ताव को IPO यानी Initial Public Offering या PUBLIC ISSUE कहा जाता है,

आईपीओ को आप आसान भाषा में इस तरीके से भी समझ सकते हैं –

“किसी कंपनी द्वारा पहली बार PUBLIC को शेयर खरीदने के ऑफर को IPO कहते हैं”

“IPO के द्वारा एक Public Limited कंपनी FUND आम जनता से FUND इकट्ठा करती है,”

“IPO वह PROCESS है, जिसके द्वारा एक Public Limited Company अपने आपको पहली बार स्टॉक मार्केट पर लिस्ट करती है”

“IPO एक PROCESS है, जिसके द्वारा कंपनी अपनी जरुरत के मुताबिक, अतिरिक्त पूँजी की आवश्यकता के लिए, आम जनता को, अपनी कंपनी में शेयर देने के बदले, पूँजी के रूपे पैसे मांगने, का प्रस्ताव रखती है,”

“IPO एक PRIMARY MARKET के द्वारा की सीधे कंपनी द्वारा की जाने वाली शेयर की विक्री का PROCESS है”

“IPO के माध्यम से हम DIRECT COMPANY से शेयर खरीदने का आवेदन करते हैं, और आवेदन स्वीकृत हो

जाने पर हम सीधे कंपनी से हमारे **DEMAT ACCOUNT** में शेयर क्रेडिट हो जाते हैं”

IPO – INITIAL PUBLIC OFFERING की जरूरत क्यों है?

आइये अब बात करते हैं IPO की जरूरत क्यों है ?

जब कोई कंपनी अपने BUSINESS को बड़े पैमाने पर बढ़ाना चाहती है, तो उसे बहुत बड़ी मात्रा में पूंजी की आवश्यकता होती है, और ऐसे में कंपनी के पास पूंजी को प्राप्त करने के लिए अलग अलग कई सोर्स हो सकते हैं, जैसे –

- 1) कंपनी अपने पास उपलब्ध सोर्सेज से, (By Internal Sources of company)
- 2) Private Equity Sources,
- 3) बैंक से Loan लेकर,
- 4) बांड(BOND) या ऋण पत्र (Debenture) के माध्यम से,
- 5) IPO के माध्यम से अपने अपने AUTHORIZED CAPITAL को शेयर में PUBLIC को ALLOT करके,

इस तरह कंपनी के पास कई अन्य सोर्स भी हो सकते हैं, जहां से वो अपने पूंजी की आवश्यकता को पूरा करने के लिए FUND इकट्ठा कर सकती है,

लेकिन IPO को छोड़ बाकी सभी SOURCES से मिलने वाला FUND कंपनी के ऊपर एक LOAN की तरह होता है, जिस पर उसे REGULAR व्याज देने के साथ पूंजी की वापसी का भी दबाव रहता है,

जबकि IPO द्वारा कंपनी अपने शेयर्स बेच कर लोगो से FUND प्राप्त करने पर कंपनी को किसी तरह का व्याज नहीं देना होता है, और न ही शेयर से मिलने FUND को वापस करने का दबाव होता है, और दूसरा कंपनी अपनी आवश्यकतानुसार जितने FUND चाहिए, वो EQUITY CAPITAL यानी शेयर बेच कर प्राप्त कर सकती है,

इसीलिए कम्पनी अपनी बड़ी से बड़ी पूँजी की आवश्यकता के लिए IPO लाना पसंद करती है, हालाँकि ध्यान रखने वाली बात ये है कि IPO लाने के लिए कंपनी को SEBI द्वारा बनाये गए सभी नियम और शर्तों को पूरा करना

IPO – INITIAL PUBLIC OFFERING से क्या क्या फायदे हैं?

अब जहा तक IPO से होने वाले फायदे की बात है तो, IPO लाने से कंपनी को सबसे बड़ा फायदा ये होता है, कि कंपनी को प्राथमिक बाजार से अपनी आवश्यकतानुसार SHARE CAPITAL प्राप्त हो जाता है, और वो बिना किसी व्याज और FUND RETURN करने के दबाव से FREE होकर, अपना BUSINESS कर सकती है,

और IPO से शेयर खरीदने वाले लोगो को फायदा ये होता है, कि आईपीओ के माध्यम से PUBLIC यानी एक निवेशक एक निश्चित PRICE RANGE में उस कम्पनी का शेयर खरीद सकता है, और उस कंपनी का शेयरधारक (शेयरहोल्डर) बन सकता है, और FUTURE में उस कंपनी के शेयर मूल्य में वृद्धि होने पर, उस शेयर्स को स्टॉक मार्केट के माध्यम से किसी और को बेच सकता है,

शेयर मार्केट में INDEX क्या है ?



Index का हिंदी अर्थ होता है – **सूची या सूचकांक**,
और सूची का दूसरा अर्थ आप समझ सकते हैं – एक लिस्ट,
और सूचकांक का दूसरा अर्थ है अंकों की सूचना (Information),

इस तरह स्टॉक मार्केट इंडेक्स वह तरीका है, जो स्टॉक मार्केट में लिस्टेड कंपनी के इनफार्मेशन को अंकों द्वारा बताता है, इंडेक्स द्वारा, किसी स्टॉक एक्सचेंज में लिस्टेड कंपनी के कारोबार और उनके शेयर में होने वाले हर एक मिनट की तेजी और मंदी को बहुत आसानी से समझा जा सकता है,

अगर स्टॉक मार्केट इंडेक्स अपने पिछले दिन के अंक से ऊपर है, तो ऐसा समझा जा सकता है कि आज बाजार फायदे में काम कर रहा है, और अगर स्टॉक मार्केट इंडेक्स में पिछले

दिन के मुकाबले, आज इंडेक्स के अंको में गिरावट है, तो ऐसा समझा जाता है कि बाजार नुकसान में काम कर रहा है,

जैसे – अगर नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का इंडेक्स जिसको NIFTY के नाम से जाना जाता है, अगर 13 दिसम्बर 2017 को 10200 पर बंद होता है, और 14 दिसम्बर 2017 को 10400 पर बंद होता है, तो ऐसे में कहा जा सकता है कि आज बाजार के कारोबार में तेजी रही है, स्टॉक मार्केट ने फायदे में काम किया,

अगर बात करे भारतीय स्टॉक मार्केट इंडेक्स की तो, इंडिया में दो प्रमुख स्टॉक एक्सचेंज है, और उन दोनों के अलग अलग इंडेक्स है,

पहला,

1) BOMBAY STOCK EXCHANGE, (BSE) के INDEX का नाम है – SENSEX

BSE के INDEX यानी सेंसेक्स के द्वारा बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज पर LISTED कंपनी के शेयर के बारे में तेजी और मंदी की सुचना मिलती है,

ध्यान देने वाली बात ये है कि बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज पर 6000 से भी ज्यादा कम्पनी लिस्टेड है, लेकिन इसका इंडेक्स यानी कि सेंसेक्स टॉप 30 कंपनी के ऊपर आधारित होता है,

दूसरा,

2) NATIONAL STOCK EXCHANGE (NSE) का INDEX है – NIFTY50

NSE के INDEX यानी NIFTY के द्वारा नेशनल स्टॉक एक्सचेंज पर LISTED कंपनी के शेयर के बारे में तेजी और मंदी की सुचना मिलती है,

ध्यान देने वाली बात ये है कि नेशनल स्टॉक एक्सचेंज पर 2000 से भी ज्यादा कम्पनी लिस्टेड है, लेकिन इसका इंडेक्स यानी कि **निफ्टी-50**, सिर्फ टॉप 50 कंपनी के ऊपर आधारित होता है, सुचना मिलती है,

SENSEX क्या है ? और SENSEX की पूरी जानकारी



SENSEX क्या है ?

Sensex हमारे इंडियन स्टॉक मार्केट का बेंचमार्क इंडेक्स है, जो BOMBAY STOCK EXCHANGE – BSE में LISTED शेयर्स के भाव में होने वाली तेजी और मंदी को बताता है, SENSEX भारत का सबसे पुराना STOCK INDEX है, जिसकी स्थापना 1986 में हुई थी,

स्टॉक मार्केट इंडेक्स का सबसे महत्वपूर्ण काम ये होता है, कि वो स्टॉक मार्केट में लिस्टेड सभी शेयर्स के भाव को capture करता है, और एक औसत वैल्यू देता है, जिस से कि हमें उस स्टॉक मार्केट के सभी शेयर्स के भावों में होने वाली तेजी और मंदी की सुचना आसानी से मिल सके.

SENSEX से हमें क्या जानकारी मिलती है ?

सेंसेक्स से हमें पता चलता है, जिन कंपनीज के शेयर BSE में LISTED है, वो कंपनी किस तरह काम कर रही है, अगर कम्पनी अच्छा काम कर रही है, लाभ कमा रही है, तो उसका असर कंपनी के शेयर के भाव में दीखता है, और

शेयर्स के भाव बढ़ जाते हैं, और शेयर के भाव बढ़ने से सेंसेक्स में भी तेजी आती है,

इसी तरह अगर कम्पनी का लाभ कम हो रहा है, तो इसका असर उसके शेयर के भाव पर पड़ता है, और शेयर्स के भाव में कमी आने से sensex में कमी आती है,

SENSEX का ऊपर जाना यानी तेजी – इसका मतलब है – कंपनीज अच्छा काम कर रही है, उन्हें लाभ हो रहा है,

SENSEX का नीचे जाना यानी मंदी – इसका मतलब है – कंपनीज को कम लाभ हो रहा है,

सेंसेक्स का ऊपर जाना हमें बताता है कि कंपनी अच्छा लाभ कमा रही है, और कंपनीज अच्छा काम कर रही है यानि देश की अर्थव्यवस्था भी अच्छा काम रही है,

इस तरह सेंसेक्स से हमें कंपनी के शेयर्स का भाव में होने वाली तेजी और मंदी की तो जानकारी मिलती ही है,

साथ ही साथ हमें देश की अर्थव्यवस्था के बारे में भी जानकारी मिलती है.

SENSEX के फायदे ,

सेंसेक्स के कुछ प्रमुख फायदे इस तरह है

- 1) BSE के परफॉरमेंस के बारे में एक नजर में पता चलना
- 2) बाजार में होने वाली तेजी और मंदी की सुचना आसानी से मिल जाना
- 3) देश की अर्थव्यवस्था की जानकारी आसानी से मिलना

SENSEX किस तरह बनता है,

हमें ये बात पता है की सेंसेक्स, बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज का इंडेक्स है, अब सवाल है की सेंसेक्स बनता कैसे है, यानि इसकी गणना कैसे की जाती है ?

आप इस बात को ध्यान में रखे की सेंसेक्स बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज पे लिस्टेड केवल 30 कंपनीज के शेयर्स के भावो से मिलकर बनता है, जबकि BSE में कुल 6000 से भी ज्यादा कंपनी के शेयर लिस्टेड है

SENSEX की गणना में केवल 30 कंपनी के शेयर्स के भावो को शामिल करने के पीछे का कारण या है कि,

- 1) ये 30 कम्पनीज़ के शेयर्स सबसे ज्यादा खरीदे और बेचे जाते हैं,
- 2) ये 30 सबसे बड़ी कंपनीज होती है, जिनका मार्केट कैपिटलाइजेसन BSE में लिस्टेड सभी शेयर्स का लगभग आधा होता है,
- 3) और ये 30 कम्पनीज भी 13 अलग अलग इंडस्ट्रीज़ और SECTOR से चुनी जाती है, और ये कंपनीज अपने सेक्टर की सबसे बड़ी कंपनी होती है.

अब एक और सवाल इन 30 कंपनीज को कौन चुनता है ?

इन 30 कंपनीज का चुनाव BSE की INDEX COMMITTEE द्वारा किया जाता है, इस कमिटी में सरकार, बैंक और बड़े अर्थषास्त्री को शामिल किया जाता है,

अब एक और सवाल ये कमिटी किस आधार पर 30 कम्पनीज का चुनाव करती है ?

इंडेक्स कमिटी सेंसेक्स में शामिल करने के लिए 30 कंपनीज का चुनाव करते समय जो प्रमुख बातो का ध्यान रखती है, वो ये कि

- 1) शेयर कम से कम 1 या उस से ज्यादा समय से BSE पे LISTED हो,
- 2) पिछले एक साल में जितने दिन भी स्टॉक मार्केट ओपन होता है, उन सभी दिन उस कम्पनी का स्टॉक खरीदा और बेचा जाना चाहिए.
- 3) डेली औसत ट्रेड की संख्या और वैल्यू के हिसाब से ये कंपनीज TOP 150 कंपनीज में होनी चाहिए.
- 4) ये 30 कंपनीज अलग अलग 13 प्रमुख इंडस्ट्रीज़ और सेक्टर की हो.

NIFTY क्या है ? और NIFTY की पूरी जानकारी



पहले बात करते हैं NIFTY क्या है ?

NIFTY हमारे इंडियन स्टॉक मार्केट NSE का महत्वपूर्ण बेंचमार्क इंडेक्स है, जो NATIONAL STOCK EXCHANGE (NSE) में LISTED शेयर्स के भाव में होने वाली तेजी और मंदी को बताता है,

NIFTY भारत का सबसे पोपुलर और सबसे ज्यादा VOLUME में ट्रेड किया जाने वाला STOCK INDEX है, जिसकी स्थापना 1993 में हुई थी,

NIFTY से हमें क्या जानकारी मिलती है ?

NIFTY से हमें पता चलता है, जिन कंपनीज के शेयर NSE(NATIONAL STOCK EXCHANGE) में LISTED है, वो कंपनी किस तरह काम कर रही है, अगर कम्पनी अच्छा काम कर रही है, लाभ कमा रही है , तो उसका असर कंपनी

के शेयर के भाव में दीखता है , और शेयर्स के भाव बढ़ जाते है, और शेयर के भाव बढ़ने से निफ्टी में भी तेजी आती है,

इसी तरह अगर LISTED कम्पनीज को लाभ कम हो रहा है, तो इसका सीधा असर उसके शेयर के भाव पर पड़ता है, और शेयर्स के भाव में कमी आने से NSE इंडेक्स NIFTY में कमी आती है,

NIFTY का ऊपर जाना यानी तेजी –

इसका मतलब है – कंपनीज अच्छा काम कर रही है, उन्हें लाभ हो रहा है,

NIFTY का नीचे जाना यानी मंदी –

इसका मतलब है – कंपनीज को कम लाभ हो रहा है,

निफ्टी का ऊपर जाना हमें बताता है कि कंपनी अच्छा लाभ कमा रही है, और कंपनीज अच्छा काम कर रही है यानि देश की अर्थव्यवस्था भी अच्छा काम रही है,

इस तरह NIFTY से हमें कंपनी के शेयर्स का भाव में होने वाली तेजी और मंदी की तो जानकारी मिलती ही है,

साथ ही साथ हमें देश की अर्थव्यवस्था के बारे में भी जानकारी मिलती है.

NIFTY के फायदे,

NIFTY के कुछ प्रमुख फायदे इस तरह है

- 1) NSE के परफॉरमेंस के बारे में एक नजर में पता चलना

- 2) बाजार में होने वाली तेजी और मंदी की सुचना आसानी से मिल जाना
- 3) देश की अर्थव्यवस्था की जानकारी आसानी से मिलना

NIFTY किस तरह बनता है,

हमें ये बात पता है की NIFTY, बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज का इंडेक्स है, अब सवाल है की NIFTY बनता कैसे है, यानि इसकी गणना कैसे की जाती है ?

आप इस बात को ध्यान में रखे की NIFTY बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज पे लिस्टेड केवल 50 कंपनीज के शेयर्स के भावो से मिलकर बनता है, जबकि NSE में कुल 6000 से भी ज्यादा कंपनी के शेयर लिस्टेड हैं,

ऐसा क्यों ?

NIFTY की गणना में केवल 50 कंपनी के शेयर्स के भावो को शामिल करने के पीछे का कारण या है कि,

- ये 50 कम्पनीज के शेयर्स सबसे ज्यादा खरीदे और बेचे जाते हैं,
- ये 50 सबसे बड़ी कंपनीज होती है, जिनका मार्केट कैपिटलाइजेसन NSE में लिस्टेड सभी शेयर्स का लगभग 60% होता है,
- और ये 50 कम्पनीज भी 13 अलग अलग इंडस्ट्रीज और SECTOR से चुनी जाती है, और ये कंपनीज अपने सेक्टर की सबसे बड़ी कंपनी हो

अब एक और सवाल इन 50 कंपनीज को कौन चुनता है ?

इन 50 कंपनीज का चुनाव NSE की INDEX COMMITTEE द्वारा किया जाता है, इस कमिटी में सरकार, बैंक और बड़े अर्थषास्त्री को शामिल किया जाता है,

NIFTY कंपनीज की लिस्ट

यह लिस्ट june 2020 की है, जब इसे यह देख रहे हो तब शायद इसमें बदलाव आ सकता है.

	Company Name	Sector
1	Reliance Industries Ltd.	Petroleum Products
2	HDFC Bank Ltd.	Banks
3	Housing Development Fin. Corp. Ltd.£	Finance
4	Infosys Limited	Software
5	ICICI Bank Ltd.	Banks
6	Tata Consultancy Services Ltd.	Software
7	ITC Ltd.	Consumer Non Durables
8	Kotak Mahindra Bank Limited	Banks
9	Hindustan Unilever Ltd.	Consumer Non Durables
10	Bharti Airtel Ltd.	Telecom - Services
11	Larsen and Toubro Ltd.	Construction Project
12	Axis Bank Ltd.	Banks
13	Asian Paints Limited	Consumer Non Durables
14	Maruti Suzuki India Limited	Auto
15	Nestle India Ltd.	Consumer Non Durables
16	State Bank of India	Banks
17	HCL Technologies Ltd.	Software
18	Bajaj Finance Ltd.	Finance
19	Sun Pharmaceutical Industries Ltd.	Pharmaceuticals
20	Dr Reddys Laboratories Ltd.	Pharmaceuticals
21	NTPC Limited	Power
22	UltraTech Cement Limited	Cement
23	Mahindra & Mahindra Ltd.	Auto
24	Power Grid Corporation of India Ltd.	Power
25	Britannia Industries Ltd.	Consumer Non Durables

	Company Name	Sector
26	Titan Company Ltd.	Consumer Durables
27	Bajaj Auto Limited	Auto
28	Cipla Ltd.	Pharmaceuticals
29	Tech Mahindra Ltd.	Software
30	Wipro Ltd.	Software
31	Hero MotoCorp Ltd.	Auto
32	Oil & Natural Gas Corporation Ltd.	Oil
33	Coal India Ltd.	Minerals/Mining
34	Shree Cement Ltd.	Cement
35	Bharat Petroleum Corporation Ltd.	Petroleum Products
36	Bajaj Finserv Ltd.	Finance
37	Adani Ports & Special Economic Zone	Transportation
38	Indusind Bank Ltd.	Banks
39	Eicher Motors Ltd.	Auto
40	Grasim Industries Ltd.	Cement
41	Tata Steel Ltd.	Ferrous Metals
42	UPL Ltd.	Pesticides
43	Indian Oil Corporation Ltd.	Petroleum Products
44	Hindalco Industries Ltd.	Non - Ferrous Metals
45	Bharti Infratel Ltd.	Telecom - Equipment & Accessories
46	JSW Steel Ltd.	Ferrous Metals
47	GAIL (India) Ltd.	Gas
48	Vedanta Ltd.	Non - Ferrous Metals
49	Zee Entertainment Enterprises Ltd.	Media & Entertainment
50	Tata Motors Ltd.	Auto

शेयर ट्रेडिंग कितने तरह के होते हैं ?



1. इंट्रा-डे ट्रेडिंग (Intra Day Trading)
2. स्कैल्पर ट्रेडिंग (Scalper Trading)
3. शोर्ट टर्म ट्रेडिंग (Short Term Trading)
4. लॉन्ग टर्म ट्रेडिंग (Long Term Trading)

हम इन सबसे बारे में एक एक करके जानकरी आपको बताएँगे.

इंट्रा डे ट्रेडिंग (INTRADAY TRADING)

इंट्रा डे ट्रेडिंग, जैसा कि नाम से समझ आ जाता है, एक दिन भर के अन्तराल (इंट्रा) में की जाने वाली खरीद और विक्री यानी ट्रेडिंग,

किसी शेयर या स्टॉक को जिस दिन खरीदा जाये, उसी दिन उस शेयर को मार्केट बंद होने से पहले बेच भी दिया जाये, या अगर आप शार्ट सेलिंग करते हैं, तो मार्केट बंद होने से शेयर खरीद कर अपनी ओपन पोजीशन को क्लोज कर ली जाये, तो इस तरह कि Trading को इंट्रा डे ट्रेडिंग कहा (Intraday Trading) जाता है,

इंट्रा डे ट्रेडिंग को कई अन्य नामों से भी जाना जाता है –

जैसे – **डे ट्रेडिंग, MIS (Margin Intraday Square off),**

इंट्रा डे ट्रेडिंग (INTRADAY TRADING) के फायदे –

1) एक दिन का RISK होना –

आप को इंट्रा डे ट्रेडिंग में सौदों को एक दिन में ही पूरा करना होता है, जैसे आज खरीदा तो आज ही बेचा ,और इस तरह आप सिर्फ एक दिन का ही रिस्क उठाते हैं,

2) लाभ या हानी एक दिन में होना

आपको दिन भर के अन्दर ही लाभ या हानी हो जाता है, आपको ज्यादा समय का इन्तेजार नहीं करना होता है,

3) MARGIN MONEY की सुविधा मिलना

इंट्रा डे ट्रेडिंग में सभी ब्रोकर्स अपने ग्राहकों को इंट्रा डे ट्रेडिंग के लिए MARGIN MONEY देते हैं,

जैसे अगर आपके पास 10 हजार रूपये है , और आपका ब्रोकर 10 गुना MARGIN MONEY दे रहा है, तो आप 10

हजार का 10 गुना यानी 1 लाख तक के शेयर खरीद और बेच सकते हैं ,

अब मान लीजिये आपके पास 10 हजार रुपए थे और आपने MARGIN MONEY का इस्तेमाल करके आपने 1 लाख का शेयर खरीदा, और आपने चूँकि इंट्रा में TRADE लिया है,

अब ऐसे में तीन चीज़े हो सकती हैं,

- जब शेयर्स के भाव बढ़ जाये -(PRICE GO UP)

अब मान लीजिये कि मार्केट बंद होने के समय अगर आपने जो 1 लाख का शेयर लिया था, उसकी कीमत 1 लाख 1 हजार हो गई है, और आप उस बेचते हैं, तो आपको 1 हजार का लाभ होता है,

और आपके पास अब AMOUNT हो जाता है , 10 हजार जो आपका था और साथ में 1 हजार का लाभ यानी कुल 11 हजार, (जिसमे आपको ब्रोकर का फीस और शेयर खरीदने और बेचने का चार्ज भी देना होता है,)

- जब शेयर्स के भाव घट जाये – (PRICE GO DOWN)

अब मान लीजिये कि मार्केट बंद होने के समय अगर आपने जो 1 लाख का शेयर लिया था, उसकी कीमत 99 हजार हो गई है, और आप उस बेचते हैं, तो आपको 1 हजार का नुकसान होता है,

और आपके पास अब AMOUNT हो जाता है , 10 हजार जो आपका था और साथ में 1 हजार का LOSS कम करने पर – 9 हजार, (जिसमे आपको ब्रोकर का फीस और शेयर खरीदने और बेचने का चार्ज भी देना होता है,)

- जब शेयर्स के भाव उतने ही हो जितने पर आपने लिया – (NO PRICE CHANGE)

अगर मार्केट बंद होने के समय – अगर कोई price change नहीं होता है और जो 1 लाख का शेयर लिया था, उसकी कीमत 1 लाख ही है, और आप उस बेचते हैं, तो आपको कोई फायदा नहीं होता है, और आपके पास आपका AMOUNT ही बच जाता है, 10 हजार जो आपका था, (जिसमें आपको ब्रोकर का फीस और शेयर खरीदने और बेचने का चार्ज भी देना होता है,

ध्यान देने वाली बातें –

- 1) अगर आप ब्रोकर से मार्जिन लेकर ट्रेड लेते हैं तो ऐसे में, आपको अपना सौदा उसी दिन पूरा करना होता है, मार्केट के बंद होने से पहले, अगर आप मार्केट बंद होने से पहले खुद सौदे को पूरा नहीं करते हैं तो मार्केट बंद के समय शेयर का भाव जो भी होगा, आपका ब्रोकर उसे बेचकर अपना मार्जिन मनी ले लेगा
- 2) ब्रोकर को आपको होने वाले फायदे या नुकसान से कोई लेना देना होता है, आपने जो भी मार्जिन मनी लिया हुआ, उसको उतना मार्केट बंद होने से पहले वो वापस चाहिए होता है.
- 3) इंट्रा डे में मार्जिन मनी का इस्तेमाल बहुत सोच समझ कर करना चाहिए, क्योंकि ये एक ऐसा हथियार है, जो दोनों तरफ चलता है, ये आपको अच्छा फायदा भी दिलाता है, तो साथ ही कभी आपको बहुत बड़े नुकसान में भी ले जाता है, और अक्सर एक नए स्टॉक मार्केट ट्रेडर का पहला loss इंट्रा डे में ही होता है.
- 4) Intraday Trading आपको तभी करना चाहिए जब आपको स्टॉक मार्केट में कम समय में होने वाले उतार चढ़ाव के बारे में

कुछ बेहतर जानकारी हो, लेकिन अक्सर लोग इसका उल्टा करते हैं, नया निवेशक Intraday Trading सबसे पहले करने की कोशिस करता है।

5) Intraday Trading बनाने का सबसे बड़ा कारण, मार्केट में शोर्ट टर्म में होने वाले उतार और चढ़ाव को ध्यान में रखते हुए किया गया है,

स्वींग ट्रेडिंग (Swing Trading)



स्वींग ट्रेडिंग (SWING TRADING)

SWING TRADING का हिंदी अर्थ होगा – “झूले जैसे ट्रेडिंग”

क्योंकि SWING का हिंदी अर्थ होता है – **झुला**,

और TRADING का अर्थ है – “माल खरीदना और बेचना”

SWING TRADING कर हिंदी अर्थ थोड़ा FUNNY सा लगता है, झूले से मतलब है, एक छोटे TIME PERIOD के रेंज में की जाने वाली ट्रेडिंग, जैसे – 2 दिन या 7 दिन या फिर 15 दिन के टाइम पीरियड में स्टॉक खरीदना और

बेचना ,SWING इसलिए कहा जा रहा है, क्योंकि जिस तरह झूले एक DISTANCE के RANGE में झूलता रहता है, वैसे ही स्टॉक मार्केट में की जाने वाली TRADING एक टाइम पीरियड में बार बार होती रहती है,

SWING TRADING IN STOCK MARKET

स्वींग ट्रेडिंग SWING TRADING, यानी कुछ दिन या सप्ताह के अन्तराल में की जाने वाली STOCK की खरीद और विक्री (ट्रेडिंग)

जब किसी शेयर या स्टॉक को खरीदने के बाद, अगर उसे कुछ दिन के बाद बेचा जाये, तो जितने समय कोई स्टॉक हमारे पास रहता है, वो उस स्टॉक का होल्डिंग पीरियड कहलाता है,

यानी शेयर खरीदने के बाद जितने समय तक हम उसे नहीं बेचते हैं, वो समय उस शेयर का होल्डिंग पीरियड टाइम होता है,

और अगर आपका “स्टॉक होल्डिंग पीरियड”, कुछ दिनों से लेकर कुछ सप्ताह तक का है, तो इस तरह के WEEKLY , या MONTHLY HOLDING PERIOD में की जाने Trading को, **स्वींग ट्रेडिंग कहा (Swing Trading)** जाता है,

अगर स्वींग ट्रेडिंग में होल्डिंग पीरियड्स यानी समय बात की जाये समय की तो –

- 1) 1 दिन से ज्यादा और कुछ दिनों तक जैसे 4-6 day तक
- 2) 1 सप्ताह से कुछ सप्ताह तक जैसे 1 week तो 4 week
- 3) 1 महीने से कुछ महीने तक जैसे 1 month to 3 month

स्वींग ट्रेडिंग को कई अन्य नामो से भी जाना जाता है –
जैसे – स्वींग ट्रेडिंग, डिलीवरी बेस्ड ट्रेडिंग, शार्ट टर्म ट्रेडिंग,

स्वींग डे ट्रेडिंग (SWING TRADING) के फायदे –

1) SWING IS THE KING

स्वींग ट्रेडिंग एक बहुत पोपुलर ट्रेडिंग सिस्टम है, जिसमे आपको मंथली बेस्ड ट्रेडिंग भी कह सकते है, अगर आप अपने इन्वेस्टिंग के लक्ष्य के अनुसार हर महीने 5 से 10 % लाभ की अपेक्षा रखते हुए ट्रेडिंग कर रहे है, तो स्वींग ट्रेडिंग से आप बहुत पैसे बना सकते है, और इसलिए स्वींग ट्रेडिंग को ट्रेडिंग का किंग कहा जाता है,

2) SHORT TERM INVESTING

Swing trading शार्ट टर्म इन्वेस्टिंग भी कहा जा सकता है, क्योंकि इसका टाइम पीरियड कुछ दिनों से लेकर कुछ सप्ताह या कुछ महीनो तक के लिए हो सकता है,

जैसे – 3- से 5 दिन, 1 सप्ताह से 4 सप्ताह, या 1 महीने से 6 महीने,

3) इंट्रा डे कि अपेक्षा रिस्क कम होना,

जब आप स्वींग ट्रेडिंग करते है, तो आप अपने प्रॉफिट टारगेट का इन्तेजार कर सकते है, और इस तरह आप इंट्रा डे की अपेक्षा अपने रिस्क को कई दिनों तक आगे ले जाते है, लेकिन मार्केट कि volatility को देखते हुए, आप रिस्क को कम भी करते है, अगर आपने fundamentally अच्छी कंपनी में पैसे लगाये हुए है तो.

SHORT TERM TRADING क्या होता है ?



Short term trading से हमारा मतलब स्टॉक मार्केट में ट्रेड करने की उस तरीके से है, जिसमें कोई ट्रेडर कोई स्टॉक कुछ दिनों से लेकर कुछ week तक के लिए ट्रेड लेता है,

यहाँ ट्रेड से हमारा मतलब स्टॉक, फ्यूचर या आप्शन खरदीने और बेचने से है,

Short Term trading के Example-

शोर्ट टर्म ट्रेडिंग के कुछ एक्साम्प्ल इस प्रकार है –

जैसे –

1 WEEK TRADE (दो दिन से लेकर 1 हफ्ते तक)

2 WEEK TRADE(दो दिन से लेकर 15 दिन तक),

MONTHLY TRADE, (दो दिन से लेकर 4 हफ्ते यानी 1 महीने तक)

या फिर QUARTERLY TRADE (दो दिन से लेकर 12 हफ्ते यानी 3 महीने तक)

और Half Yearly (1 हफ्ते से लेकर 6 महीने तक)

अगर ट्रेड को ऊपर बताये गए वीकली या मंथली टाइम फ्रेम में लिया जाता है, तो इसे short term trading कहते हैं,

SHORT TERM TRADING और SWING TRADING

अगर सच कहा जाये तो शोर्ट टर्म ट्रेडिंग और स्विंग ट्रेडिंग दोनों भी एक जैसे हैं, इन दोनों METHOD में ट्रेडर कोई ट्रेड कुछ दिनों से लेकर कुछ हफ्तों तक के लिए लेता है, और ट्रेडर SHORT TERM में फायदा लेने और पैसा बनाने की कोशिश करते हैं,

इस तरह के ट्रेड लेने को SHORT TERM INVESTING IN STOCK MARKET ,या SHORT TERM TRADING या SWING TRADING कहा जा सकता है,

SHORT TERM TRADING का PURPOSE

इस तरह ट्रेडर का मकसद होता है, मार्केट में शोर्ट टर्म मूवमेंट का फायदा उठाना, और 5% से लेकर 20% तक का लाभ उठाना ,

जहा – WEEKLY टारगेट 5% का हो सकता है, और याद रखने वाली बात है कि ये HIGH RISK ट्रेड हो सकता है, और दूसरी तरफ QUARTERLY 15 से 20 % तक के लाभ का टारगेट हो सकता है,

SHORT TERM TRADING के फायदे,

शोर्ट टर्म ट्रेडिंग, एक एक्टिव ट्रेड इन्वेस्टमेंट है, जिसमें आपको मार्केट और अपने इन्वेस्टमेंट पे नजर रखनी होती है, और जैसे ही आपको आपका टारगेट प्राइस मिलता है, आपको ट्रेड क्लोज कर लेना चाहिए,

अगर बात की जाये शोर्ट टर्म ट्रेडिंग के फायदे की

तो अगर आप अनुशाषित निवेश करते हैं, और मार्केट पर नजर बनाए रखते हुए, fundamental और technical दोनों तथा इकॉनॉमी को ध्यान में रखते हुए, अच्छे स्टॉक्स, का चुनाव करके आप, शोर्ट टर्म काफी अच्छा लाभ कमा सकते हैं.

LONG TERM INVESTING क्या होता है ?

जब किसी स्टॉक में लम्बे समय तक निवेश किया जाये, तो उसे Long term investing कहा जाता है, Long Term Investing से हमारा मतलब, स्टॉक मार्केट में ट्रेड करने की उस तरीके से है, जिसमें कोई निवेशक कोई स्टॉक 6 महीने से लेकर कुछ सालों तक लिए उसी स्टॉक में निवेश किया रहता है,

Long Term investing के Example -

लॉन्ग टर्म इन्वेस्टिंग के कुछ Example इस प्रकार है –

जैसे –1 साल से अधिक का निवेश,

1 साल से 3 साल तक का निवेश

1 साल से 5 साल तक का निवेश

5 साल या उस से ज्यादा समय के लिए निवेश

इस तरह के टाइम फ्रेम में की जाने वाली ट्रेडिंग को **Long term investing** कहा जाता है,

LONG TERM INVESTING और LONG TERM TRADING

Technically देखा जाये तो, स्टॉक मार्केट में Investing जैसी कोई चीज नहीं होती, हम स्टॉक खरीदते और बेचते हैं, चाहे समय का अंतर कितना भी हो, 1 दिन वाली ट्रेडिंग हो या 10 साल वाली ट्रेडिंग.

स्टॉक मार्केट में सिर्फ ट्रेडिंग ही होता है,

लेकिन जब हम किसी एक ही कंपनी में लम्बे समय तक स्टॉक खरीदने के बाद बने पैसा उसी कंपनी में लगाये रहते हैं, तो इस तरह की ट्रेडिंग, ट्रेडिंग नहीं बोल के इन्वेस्टिंग कहा जाता है,

LONG TERM INVESTING का PURPOSE

इस तरह Long Term Trading में ट्रेडर का मकसद होता है,

- 1) टैक्स का लाभ लेना, (किसी एक स्टॉक में 1 साल से ज्यादा समय तक निवेश टैक्स फ्री हो जाता है.

2) Dividend का लाभ लेना, (कुछ कंपनी अपने स्टॉक्स पर रेगुलर डिविडेंड देती है।

3) कंपनी का ग्रोथ अगर तेजी से होता है, तो ऐसे में लॉन्ग टर्म इन्वेस्टमेंट पर बहुत अच्छा लाभ मिल जाता है, यहाँ पर एक गौर करने वाली बात है कि, स्टॉक मार्केट के King कहे जाने वाले चाहे वारेन वफे हो या राकेश झुनझुनवाला दोनों भी इसी तरह के लम्बे समय की ट्रेडिंग और इन्वेस्टिंग में विस्वास रखते हैं।

Long term investing के फायदे

अगर बात की जाये लॉन्ग टर्म इन्वेस्टमेंट के फायदों की तो,

- 1) मार्केट में रोज के उतार चढ़ाव से आप को घबराने की जरूरत नहीं होती,
- 2) आपको टैक्स फ्री dividend और लाभ मिलता है,
- 3) अगर आप का निवेश किसी ऐसी कमपनी है, जिसका प्यूचर में मार्केट ग्रोथ बहुत अच्छा है, तो आपको अपने निवेश पर बहुत ही शानदार फायदा होता है,

LONG TERM INVESTING के लिए क्या करे -

अगर आप स्टॉक मार्केट में अनुशाषित निवेश करते हैं, और मार्केट पर नजर बनाए रखते हुए, fundamental और technical दोनों पहलु को ध्यान रखने के साथ प्यूचर इकॉनमी को ध्यान में रखते हुए, अच्छे स्टॉक्स, का चुनाव करके आप, लॉन्ग टर्म काफी अच्छा लाभ कमा सकते हैं। लॉन्ग टर्म इन्वेस्टिंग के लिए हमें स्टॉक का fundamental analysis पहले करना पड़ता है, इसिलिये अगर आप लॉन्ग टर्म इन्वेस्टमेंट का लाभ उठाना चाहते

है तो आपको **fundamental analysis** अच्छी तरह समझना होगा। ताकि आप बड़े निवेशकों की इस धन बनाने के तरीके से लाभ उठा सकें।

SHARE MARKET DICTIONARY

BULLS और BEARS स्टॉक मार्केट



BULL (तेजी) और BEARS (मंदी)

कहते हैं “शेयर बाजार BULLS और BEARS के बीच होने वाली जंग है”

जहा कभी BULLS जीतता है तो कभी BEARS

BULLS और BEARS दो तरह के निवेशक

आप इस बात को अच्छी तरह से समझे की STOCK MARKET में दो तरह के लोग यानी निवेशक होते हैं, एक को BULLS तो दुसरे को BEARS कहा जाता है,

ऐसे लोग BULLS कहे जाते हैं, जिनको लगता है की मार्केट ऊपर जायेगा – इसलिए वो स्टॉक खरीदते और आशा करते हैं कि जब मार्केट ऊपर जायेगा तो बेच कर लाभ कमा सकते हैं,

और दुसरे ऐसे लोग BEARS कहे जाते हैं, जिनको लगता है की मार्केट गिरने वाला है – इसलिए वो स्टॉक बेचते और और ऐसे में कुछ लोग SHORT SELLING करके भी लाभ कमाते हैं,

अगर आप NEWSPAPER और TV या INTERNET पर जब स्टॉक मार्केट समाचारों को देखेंगे तो आपको अगर मार्केट ऊपर जा रहा होगा तो मार्केट को BULLISH बताया जाता है, और अगर मार्केट निचे गिर रहा हो तो मार्केट BEARISH है, ऐसे देखने और सुनने को मिलता है,

BULLS और BEARS स्टॉक मार्केट की भाषा में सबसे ज्यादा इस्तेमाल होने वाले शब्द है, इसलिए बुल्स और बेर्स को अच्छी तरह से समझना आवश्यक है,

आखिर BULLS और BEARS क्या होता है, और शेयर मार्केट में इसका क्या महत्व है और इसका इस्तेमाल किस तरह से किया जाता है

BULLS और BEARS का अर्थ –

बुल्स और बेर्स का सामान्य हिंदी अर्थ –

BULLS का हिंदी में अर्थ होता है – बैल

और BEARS का हिंदी अर्थ होता है – भालू

अब आप कहेंगे कि फिर बैल और भालू का शेयर मार्केट में क्या काम, लेकिन स्टॉक मार्केट के सम्बन्ध में BULLS और BEARS का कुछ अलग अर्थ होता है,

बुल्स और बेर्स का स्टॉक मार्केट के सम्बन्ध में हिंदी अर्थ



स्टॉक मार्केट के सम्बन्ध में

BULLS का अर्थ होता है – तेजी

और, BEARS का हिंदी अर्थ होता है – मंदी

इसके आलावा BULLS से बना हुआ दूसरा शब्द है BULLISH और BEARS से बना हुआ दूसरा शब्द है BEARISH

इस तरह स्टॉक मार्केट में

BULLISH का अर्थ है – स्टॉक में तेजी की अवस्था,

और BEARISH का अर्थ है – स्टॉक में मंदी की अवस्था,

BULLS और BEARS ऐसा नाम क्यों पड़ा ?



अगर आप पूछे कि बुल्स या बेर्स ऐसा नाम क्यों पड़ा, तो इसके पीछे का कारण कुछ ऐसा है,

बुल्स यानि बैल जो की एक जानवर है, और बैल का बेसिक NATURE होता है, कि बैल हमेशा अपने शिकार को निचे से ऊपर की तरफ उठाता है,

इसी तरह स्टॉक मार्केट में जब कोई शेयर्स निचे से अचानक ऊपर जाता है, तो उसे BULLS की हरकत समझी जाती है, और मार्केट को BULLISH कहा जाता है,

दूसरी तरफ

BEARS यानि भालू जो की एक जानवर है, और भालू का बेसिक NATURE होता है, कि भालू हमेशा अपने शिकार को ऊपर से नीचे की तरफ गिराता है,

इसी तरह स्टॉक मार्केट में जब कोई शेयर्स नीचे की तरफ गिरने लगता है, तो उसे BEARS की हरकत समझी जाती है, और मार्केट को BEARISH कहा जाता है,

BULLS और BEARS का इस्तेमाल और महत्व ,

जैसे हमने पहले इस तथ्य का जिक्र किया , BULLS और BEARS STOCK MARKET में सबसे ज्यादा इस्तेमाल होने वाले शब्द है,

बुल्स और बेअर्स का concept बहुत लोकप्रिय और महत्वपूर्ण है क्योंकि BULLS और BEARS के इस्तेमाल से MARKET की दशा और दिशा दोनों का पता चलता है,

अगर मार्केट ऊपर की तरफ जा रहा है, तो कहा जाता है मार्केट बुलिश है,

और मार्केट नीचे जाने पर कहा जाता है तो इसका मतलब मार्केट Bearish है,

और किसी स्टॉक के फंडामेंटल एनालिसिस और TECHNICAL एनालिसिस दोनों में बुल्स और बेअर्स शब्दों का बहुत अधिक इस्तेमाल किया जाता है,

BULLS और BEARS की पहचान

कैंडलस्टिक चार्ट पैटर्न , में सभी कैंडल्स को दो भागो में बाँटा जा सकता है

- 1) BULLISH – जिसे हम GREEN या BLUE द्वारा पहचानते हैं,
- 2) BEARISH – जिसे हम RED CANDLE द्वारा पहचानते हैं,

**आज मार्केट BULLISH है या BEARISH कैसे पता करें-
इसे पता करने के लिए हमें ध्यान देना होगा –**

- मार्केट को BULLISH माना जायेगा अगर वो अपने पिछले दिन के क्लोज PRICE से आज ऊपर बंद होता है,
- मार्केट को BEARISH माना जायेगा अगर वो अपने पिछले दिन के क्लोज PRICE से आज नीचे बंद होता है,

मार्केट कैपिटलाइजेशन MARKET CAPITALIZATION



Market Capitalization को शोर्ट में मार्केट कैप (Market Cap) भी कहा जाता है, मार्केट कैप वास्तव में किसी कंपनी का कुल वैल्यू होता है,

मार्केट कैप से हम ये समझ सकते हैं कि शेयर कैपिटल के हिसाब से कोई कंपनी कितनी बड़ी है या कितनी छोटी,

आम तौर पे नए लोग, स्टॉक मार्केट में लिस्टेड कंपनी के share price को देखकर, ऐसा समझ लेते हैं कि, जिस कंपनी का share price ज्यादा है. वह बड़ी कंपनी है, और जिस कम्पनी का share price कम है. वह छोटी कंपनी है,

जैसे – अगर किसी स्टॉक का प्राइस 1000 रूपये है, और एक दुसरे स्टॉक जिसका प्राइस 100 रूपये है, तो आम तौर पर नए लोग 1000 रूपये वाले शेयर प्राइस को ज्यादा बड़ी कम्पनी मान लेते हैं, जोकि सच नहीं है और पूरी तरह से एक गलत है,

सच तो ये है कि किसी कम्पनी के मार्केट कैप की तुलना से ही ये समझा जा सकता है कि कोई कंपनी कितनी बड़ी है या कितनी छोटी,

दूसरी तरफ इस तथ्य को समझना भी बहुत महत्वपूर्ण है कि किसी शेयर के प्राइस में होने वाले चेंज का सीधा असर उस कंपनी के मार्केट कैप पर पड़ता है, इसलिए Market Capitalization को समझना बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है,

MARKET CAPITALIZATION की गणना

Market Capitalization या मार्केट कैप वास्तव में किसी भी कंपनी के कुल आउटस्टैडिंग शेयर*** कैपिटल के साथ उस कम्पनी के current share price को multiply करने पर आने वाला Total Value होता है,

मार्केट कैप को इस तरह calculate इस तरह किया जाता है-

Market Capitalization = (Total No. of Outstanding Share) X (current share Price)

जैसे मान ले की किसी कम्पनी का टोटल आउटस्टैडिंग शेयर है 100 करोड़ और उस कंपनी के शेयर का current Market price है – 150 रूपये

तो इस तरह उस कम्पनी का मार्केट कैप होगा

Market Cap = 100 करोड़ X 150 रूपये = 15000 करोड़ रूपये,

और जैसा की हम जानते हैं, Share Price हमेशा change होता रहता है,

ऐसे में किसी दिन अगर इसी शेयर का प्राइस 140 रूपये हो जाता है तो , अब मार्केट कैप होगा

Market Cap = 100 करोड़ X 140 रूपये = 14000 करोड़ रूपये,

अब आप ध्यान से देखे की शेयर प्राइस में 10 रूपये कम हो जाने से उस कम्पनी के टोटल मार्केट कैप में 1000 करोड़ रूपये का फर्क पड़ जाता है,

इस तरह मार्केट कैप को समझना बहुत महत्वपूर्ण है, जिस से हम कम्पनी की कुल पूँजी के बारे में सही जानकारी हासिल कर सकते हैं, और कम्पनी कितनी बड़ी है या छोटी है, ये भी समझ सकते हैं,

आउटस्टैडिंग शेयर

Outstanding Share से मतलब उन सभी शेयर से है, जो कंपनी ने जारी किया हुआ है, और जो स्टॉक एक्सचेंज में ट्रेड के लिए उपलब्ध है, और साथ ही साथ प्रोमोटर्स, इन्वेस्टर्स, रिस्ट्रिक्टेड शेयर, इन सभी शेयर को आउटस्टैडिंग शेयर कहा जाता है, जो कम्पनी repurchase नहीं किया है,

आउटस्टैंडिंग शेयर यानि वे शेयर जो कम्पनी ने जारी किया हुआ लेकिन वो Repurchase नहीं हुआ है।

REE FLOAT MARKET CAPITALIZATION

Free Float Market Capitalization, से मतलब जब मार्केट कैपिटलाइजेशन का कैलकुलेशन करने के लिए सिर्फ उन्ही शेयर की संख्या को ध्यान में रखा जाता है, जो मार्केट में ट्रेड के लिए उपलब्ध है,

Free Float Market Capitalization = No. of Trade able Shares X Current price of share

No. of Trade able Shares इसकी संख्या BSE और NSE के वेबसाइट पर उपलब्ध होती है, Trade-able shares में कंपनी के शेयरहोल्डर और प्रोमोटर्स के पास के शेयर्स को शामिल नहीं किया जाता है।

NSE का इंडेक्स Nifty और BSE का इंडेक्स sensex के कैलकुलेशन में कंपनी के फ्री फ्लोट मार्केट कैपिटलाइजेशन का ही इस्तेमाल किया जाता है।

स्माल कैप , मिड कैप, और लार्ज कैप SMALL CAP MID CAP LARGE CAP



हमने इस से पहले Market Capitalization के बारे में बात की थी, आज हम मार्केट कैप पर आधारित तीन अलग अलग महत्वपूर्ण concept को समझेंगे, और साथ ही साथ ये भी जानेंगे स्माल कैप, मिड कैप, और लार्ज कैप के क्या फायदे और नुकसान है,

स्माल कैप, मिड कैप, और लार्ज कैप Small Cap Mid Cap Large Cap

भारत के दोनों सबसे बड़े स्टॉक एक्सचेंज नेशनल स्टॉक एक्सचेंज NSE जिसपे 1600 से ज्यादा कम्पनी लिस्टेड है और बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज BSE जिसपे 5000 से भी ज्यादा कंपनी लिस्टेड है,

इन सभी लिस्टेड कंपनी को मार्केट कैप के आधार पर तीन अलग अलग भागों में बाटा जा सकता है- small cap mid cap large cap

- 1) स्माल कैप कम्पनी
- 2) मिड कैप कम्पनी
- 3) लार्ज कैप कम्पनी

आइये अब इनके बारे में डिटेल में बात करते हैं-

स्माल कैप (Small Cap) या स्माल कैप कम्पनी (Small Cap Companies)

आम तौर पर जिन कम्पनी का **Market Capitalization** या मार्केट कैप 1000 करोड़ तक होता है, वे सभी कंपनी स्माल कैप कम्पनी की श्रेणी में आते हैं, और इन्हें स्माल कैप शेयर या स्माल कैप कम्पनी कहा जाता है,

जैसे – Aadhaar Ventures India Ltd, A2Z Infra Engineering Ltd.

मिड कैप (Mid Cap) या मिड कैप कम्पनी (Middle Cap Companies)

आम तौर पर जिन कम्पनी का **Market Capitalization** या मार्केट कैप 1000 करोड़ से 10000 करोड़ तक होता है, वे सभी कंपनी मिड कैप कम्पनी की श्रेणी में आते हैं, और इन्हें मिड कैप शेयर या मिड कैप कम्पनी कहा जाता है,

जैसे – ABBOT INDIA, ADANI POWER LTD., ADITYA BIRLA FAISHON AND RETAIL LTD.

लार्ज कैप (Large Cap) या लार्ज कैप कम्पनी (Large Cap Companies)

आम तौर पर जिन कम्पनी का Market Capitalization या मार्केट कैप 10000 करोड़ से ज्यादा होता है, वे सभी कंपनी लार्ज कैप कम्पनी की श्रेणी में आते हैं, और इन्हें लार्ज कैप शेयर या लार्ज कैप कम्पनी कहा जाता है,

जैसे –TATA MOTORS, HDFC BANK, INFOSYS, TCS,

स्माल कैप, मिड कैप, और लार्ज कैप (small cap mid cap large cap) के फायदे और नुकसान

स्माल कैप, मिड कैप, और लार्ज कैप के फायदे और नुकसान को हम नीचे दिए गए टेबल की मदद से समझ सकते हैं—

DIFFERENCE BASE	LARGE CAP	MID CAP	SMALL CAP
RISK OF CAPITAL LOSS	LOW	MEDIUM	LOW
PROFIT EARNING OPPORTUNITY	LOW	MEDIUM	HIGH
MUTUAL FUNDS INVESTMENT	HIGH	MEDIUM	LOW
LIQUIDITY	HIGH	MEDIUM	LOW
COMPANY INFO AVAILABILITY	EVERYWHERE	NORMAL INFO AVAILABLE	VERY LESS INFO AVAILABLE

DIFFERENCE OF small cap mid cap large cap टेबल की मदद से हम ये स्पष्ट समझ आता है कि जहा.

लार्ज कैप में कैपिटल इन्वेस्टमेंट बहुत सुरक्षित होता है, और रिस्क कम होता है , दूसरी तरफ लार्ज कैप में RETURNON

INVESTMENT काफी कम होता है, क्योंकि लार्ज कैप कंपनी अपने विकास के चरम सीमा पर होती है,

जबकि स्माल कैप कम्पनी में इन्वेस्टमेंट में निवेश की गई पूँजी के LOSS का रिस्क होता है, लेकिन यहीं पर कुछ SMALL CAP कंपनी में इन्वेस्टमेंट पर मिलने वाला लाभ बहुत ज्यादा होता है, क्योंकि इन कम्पनी के पास विकाश के बहुत अधिक अवसर होते हैं .

ब्लू चिप शेयर क्या होता है



ब्लू चिप शेयर क्या होता है ? अगर आप स्टॉक मार्केट में इंटरेस्ट रखते हैं, तो आपने कई बार Blue Chip Share और ब्लू चिप कंपनी का नाम जरुर सुना होगा, आज हम इसी बारे में बात करेंगे कि ब्लू चिप शेयर और ब्लू चिप कंपनी क्या होता है ?

BLUE CHIP COMPANY : सबसे पहले बात करते हैं ब्लू चिप के बारे में, वास्तव में ब्लू चिप शब्द का इस्तेमाल अमेरिका में पोकर नाम के के खेल में किया जाता था, पोकर नाम के इस खेल में ब्लू चिप वाले कॉइन सबसे कीमती होते थे, धीरे धीरे स्टॉक मार्केट में इस Blue Chip शब्द का इस्तेमाल

स्टॉक मार्केट में उन कम्पनी के लिए किया जाने लगा, जो कंपनी सबसे ज्यादा भरोसेमंद थी, आज Blue Chip Company से हमारा मतलब उन कंपनी से है, जो मार्केट कैप के हिसाब से मिड कैप या अधिकतर लार्ज कैप कम्पनी होती है, और ये कंपनी अपने अपने इंडस्ट्रीज की सबसे टॉप कंपनी होती है, साथ ही साथ इन कंपनीज में नियमित लाभ कमाने की क्षमता भी होती है, और इनका मार्केट में भरोसेमंद कंपनी के दृष्टि से बहुत अच्छा नाम होता है,

इस बात को भी ध्यान में रखना चाहिए कि BLUE CHIP COMPANY को पता लगाने का कोई ऐसा FIXED METHOD नहीं है,

जो कंपनी आज BLUE CHIP है, जरुरी नहीं कि वह भविष्य में भी BLUE CHIP बनी रहे, क्योंकि शेयर मार्केट और BUSINESS में अनिश्चितता(UNCERTAINTY) की वजह से कंपनी के मार्केट कैप कम या ज्यादा होता रहता है,

BLUE CHIP SHARES

स्टॉक मार्केट में Blue Chip कम्पनी के शेयर को Blue Chip Share कहा जाता है, blue chip shares वाली कंपनी की कुछ खास बाते होती है

- 1) कम्पनी का मार्केट कैप बहुत बड़ा होता है, (large cap)
- 2) कंपनी अक्सर नियमित DIVIDEND देती है,
- 3) जिस सेक्टर की कंपनी होती है, उस सेक्टर की सबसे बड़ी कंपनी होती है. बहुत अच्छा होता है.

BLUE CHIP SHARES के फैक्ट्स

Blue chip Shares में INVESTMENT को सबसे अच्छा और सुरक्षित निवेश माना जाता है, BLUE CHIP SHARE के बारे में कुछ अन्य FACTS इस प्रकार हैं

- 1) स्टॉक मार्केट में BLUE CHIP SHARE में निवेश अन्य स्टॉक में निवेश के मुकाबले सबसे बेहतर निवेश माना जाता है,
- 2) BLUE CHIP SHARE में निवेश को अन्य शेयर से कैपिटल LOSS के हिसाब से अधिक सुरक्षित निवेश माना जाता है.
- 3) स्टॉक मार्केट के सभी बड़े निवेशक MUTUAL FUNDS HOUSES और FOREIGN INVESTOR INSTITUTION का ज्यादातर निवेश BLUE CHIP COMPANY के शेयर्स में होता है.
- 4) एक आम निवेशक को हमेशा BLUE CHIP COMPANY में निवेश करने की सलाह दी जाती है.
- 5) blue chip shares में आमतौर पर LIQUIDITY ज्यादा और VOLATILITY कम होती है, और डिविडेंड मिलने का हमेशा अच्छा CHANCE होता है.

निष्कर्ष -

ब्लू चिप शेयर और ब्लू चिप कंपनी के बारे में समझने के बाद अब दो सवाल आते हैं।

FACE VALUE क्या होता है ?



FACE VALUE

हे दोस्तों, आज का टॉपिक है – FACE VALUE क्या होता है? FACE VALUE को Nominal Value या PAR VALUE के नाम से भी जाना जाता है,

FACE VALUE को शोर्ट में FV भी कहा जाता है,

आज हम इसी बारे में बाते करेंगे FACE VALUE KYA HOTA HAI, और FACE VALUE कैसे काम करता है, (HOW FACE VALUE WORK), इसके क्या क्या इस्तेमाल है और FACE VALUE को समझना कितना महत्वपूर्ण है ?

और साथ ही जानेंगे कि आप किसी स्टॉक का FACE VALUE कैसे देख सकते हैं, या चेक कर सकते हैं,

FACE VALUE क्या होता है?

FACE VALUE हिंदी अर्थ है – अंकित मूल्य,
फेस वैल्यू किसी स्टॉक/शेयर या करेंसी के ऊपर लिखा गया
या कहें दर्शाया गया मूल्य होता है,
आइये थोड़ा और DETAIL में समझते हैं, **फेस वैल्यू** क्या
होता है?

शेयर या स्टॉक क्या होता है, ये समझने के बाद हमें पता चल
जाता है, कि सभी शेयर का एक अपना मूल्य होता है, और
अगर वो शेयर या स्टॉक, स्टॉक मार्केट में लिस्टेड होती है, तो
उस शेयर के PRICE रोजाना घटते और बढ़ते रहते हैं,

लेकिन यहाँ ध्यान देने वाली बात ये है कि, हर स्टॉक का एक
ऐसा PRICE भी होता है, जो कि रोजाना CHANGE नहीं
होता है, और वो लगभग FIXED होता है, इस FIXED
PRICE को उस शेयर FACE VALUE कहा जाता है,

FACE VALUE और **MARKET VALUE** दोनों बिलकुल
अलग अलग चीजे हैं, किसी शेयर का MARKET PRICE
इस बात पर निर्भर होता है कि उस शेयर की मार्केट में कितनी
DEMAND है,

लेकिन किसी SHARE का फेस वैल्यू एक ऐसा LEGAL
PRICE होता है, जिसके आधार पर उस कंपनी के कुल शेयर
मार्केट में जारी किये गए होते हैं,

फेस वैल्यू को शेयर का वास्तविक मूल्य भी कहा जा सकता है,
यानी जिस तरह रूपये के नोट पर 50 रूपये, 100 रूपये ,
500 रूपये लिखे रहते हैं, वैसे हर शेयर का एक ऐसा प्राइस

होता है, जो उस पर लिखा होता है, उसे हम FACE VALUE और हिंदी में अंकित मूल्य कहते हैं,

यानी अगर आप किसी कंपनी का शेयर PHYSICAL FORM में प्राप्त करते हैं, तो उस शेयर पर एक मूल्य लिखा होगा, जो शेयर का फेस वैल्यू होगा,

FACE VALUE किसी शेयर का ओरिजिनल वैल्यू, या उस शेयर का शुरूआती मूल्य (initial value) होता है, जिसके अनुपात में कंपनी की कुल पूँजी को डिवाइड किया गया होता है,

ये भी कहा जा सकता है कि फेस वैल्यू का किसी कम्पनी के लिए शेयर का एकाउंटिंग वैल्यू है,

जैसे – मान लीजिए किसी कंपनी की शुरूआती पूँजी 1 करोड़ है, और उस कंपनी को 10 लाख के शेयर में डिवाइड किया जाता है, तो ऐसे में उस कंपनी का शुरूआती शेयर का मूल्य होगा 10 रूपये ($1\text{ करोड़}/10 \text{ लाख}$),

शेयर के इस इसी शुरूआती वैल्यू को उसका फेस वैल्यू कहा जाता है,

फेस वैल्यू, PAR VALUE, AT PAR, AT PREMIUM, AT DISCOUNT

FACE VALUE और AT PAR VALUE : FACE VALUE को PAR VALUE भी कहा जाता है, दोनों एक ही है, और इसमें कोई अंतर नहीं है, अगर कोई शेयर अपने फेस वैल्यू पर मार्केट में बिक रहा है तो ऐसे में उस शेयर प्राइस को AT PAR कहा जायेगा,

AT DISCOUNT या DISCOUNTED VALUE : अगर कोई शेयर अपने फेस वैल्यू से कम में बिक रहा है, तो ऐसे में उस शेयर के PRICE को DISCOUNTED VALUE या AT DISCOUNT कहा जायेगा,

AT PREMIUM या PREMIUM VALUE : अगर कोई शेयर अपने फेस वैल्यू से अधिक मूल्य में बिक रहा है, तो ऐसे में उस शेयर के PRICE को PREMIUM VALUE या AT PREMIUM कहा जायेगा,

FACE VALUE का इस्तेमाल : आइये बात करते हैं कि एक इन्वेस्टर के लिए फेस वैल्यू को समझना कितना जरुरी है, और आखिर फेस वैल्यू का क्या इस्तेमाल है,

एक निवेशक कंपनी के लिए FACE VALUE और CURRENT MARKET PRICE के मूल्यों में अंतर को समझना जरुरी है, कि CURRENT MARKET PRICE के मुकाबले फेस वैल्यू क्या है?

साथ ही साथ इस बात को भी ध्यान रखना चाहिए कि कंपनी फेस वैल्यू का USE कंपनी इन सारे कामों के लिए करती है –

- 1) **DIVIDEND के PAYMENT के लिए-** जब भी कंपनी डिविडेंड घोषित करती है, तो उसकी गणना FACE VALUE के ऊपर ही की जाती है,
- 2) **STOCK SPLIT के लिए-** STOCK SPLIT का भी मुख्य आधार फेस वैल्यू होता है,

- 3) **SHARE BONUS देने के लिए-** कंपनी द्वारा फेस वैल्यू के आधार पर ही शेयर बोनस की घोषणा भी की जाती है,
- 4) **कंपनी की ग्रोथ की गणना के लिए-** अगर कंपनी की ग्रोथ की गणना करनी हो तो एक निवेशक आसानी से कंपनी के CURRENT MARKET PRICE की उसके फेस वैल्यू से तुलना करके एक निर्णय ले सकता है,
- 5) **कंपनी समापन या दिवालिया की स्थिति में शेयरहोल्डर को सिर्फ FACE VALUE के हिसाब से ही पूँजी की प्राप्त करने का अधिकार होता है**

Stock Split | स्टॉक स्प्लिट क्या होता है ?



(स्टॉक स्प्लिट) का अर्थ,

Stock Split को समझने के लिए आइए सबसे पहले समझते हैं,
Split का हिंदी अर्थ क्या है,

Split का हिंदी अर्थ – विभाजन (Divide), या टुकड़े करना
(Cut into Parts)

और इस तरह **Stock Split (स्टॉक स्प्लिट)** का अर्थ है-
स्टॉक का विभाजन (Dividing Stock)

Stock Split यानी स्टॉक का विभाजन सुनकर थोड़ा सा अजीब सा लगता है, क्योंकि क्या मतलब मेरे पास किसी कंपनी का स्टॉक है, तो वो कैसे split यानी विभाजित हो जायेगा?

जी हा, जवाब ऐसा जरुरी नहीं कि आपके पास जो स्टॉक है, वो Split हो, लेकिन स्टॉक मार्केट में ऐसा अक्सर होता रहता है, और बहुत सारी कंपनी अपने स्टॉक को ऐसे ही डिवाइड और विभाजित करती रहती है,

इसलिए ये समझना जरुरी हो जाता है कि – स्टॉक split क्या होता है? और इसका क्या प्रभाव होता है?

तो दोस्तों,

STOCK SPLIT एक बहुत महत्वपूर्ण कॉर्पोरेट EVENT माना जाता है, और इसका स्टॉक मार्केट और निवेशक पर बहुत बड़ा प्रभाव भी रहता है,

तो इसलिए आज के इस टॉपिक में हम इसी बात को डिटेल में समझेंगे कि – stock split क्या होता है? स्टॉक स्प्लिट से कंपनी और निवेशक को क्या फायदे है? और कंपनी स्टॉक या शेयर क्यों split क्यों करती है ?

आइए सबसे पहले देखते हैं –

STOCK SPLIT क्या होता है?

स्टॉक स्प्लिट काफी हद तक **बोनस शेयर जारी** करने की प्रक्रिया से मिलता जुलता है, जब कंपनी STOCK SPLIT की घोषणा करती है, तो इसका मतलब ये होता है कि

स्टॉक स्प्लिट से कंपनी में शेयर की संख्या बढ़ जाएगी, लेकिन COMPANY के बाजार पूंजीकरण (MARKET CAPITALIZATION) और निवेशक द्वारा निवेश किए गए निवेश की वैल्यू (INVESTMENT VALUE) में कोई फर्क स्टॉक नहीं पड़ेगा,

SPLIT एक निश्चित अनुपात में किया जाता है, जैसे 1:1, या 1:2 या 1:5

STOCK SPLIT के द्वारा स्टॉक के FACE VALUE को DIVIDE किया जाता है, और जैसे ही FACE VALUE बदलता है, कंपनी के TOTAL SHARE की संख्या बदल जाती है, लेकिन उसकी कुल पूंजी पर कोई फर्क नहीं पड़ता,

जैसे – अगर किसी कंपनी का स्टॉक PRICE जिसकी कीमत मार्केट में है 100 रूपये और उसका FACE VALUE है 2 रूपये, और कंपनी के पास कुल शेयर है 10 लाख, और इस तरह कंपनी की कुल पूंजी है – 10 लाख X 2 = 20 लाख और बाजार पूंजीकरण है – $100 \times 10 \text{ लाख} = 10 \text{ करोड़}$,

और कंपनी 1:1 के अनुपात में स्टॉक स्प्लिट करती है, तो कंपनी के FACE VALUE जो पहले 2 रूपये है, अब 1:1 के अनुपात (RATIO) में SPLIT होने से कंपनी के शेयर 10 लाख से बढ़ कर 20 लाख हो जायेंगे, और साथ ही कंपनी की FACE VALUE 2 रूपये से कम होकर हो जाएगी -1 रूपये,

और इस तरह आप देखेंगे कि भले ही शेयर की कुल संख्या 10 लाख से बढ़कर 20 लाख हो गई, लेकिन कंपनी की शेयर कैपिटल और MARKET कैपिटलाइजेशन जो पहले था, वो अभी भी है –

यानी शेयर पूँजी पहले भी भी 20 लाख था जो अभी भी है = 20 लाख शेयर X 2 रूपये फेस वैल्यू = 20 लाख

और बाजार पूँजीकरण जो पहले था वो अभी भी रहेगा, क्योंकि जैसे ही शेयर की संख्या बढ़ती है, बाजार मूल्य उसी अनुपात में एडजस्ट हो जाता है, जिस अनुपात शेयर split होने के बाद बढ़े हैं, यानि शेयर price भी AUTOMATICALLY 100 रूपये से 50 रूपये के आस पास एडजस्ट हो जायेगा,

और कंपनी की मार्केट कैपिटलाइजेशन होगी – 50 रूपये प्रति शेयर x 20 लाख शेयर = 10 करोड़,

SPLIT STOCK के सम्बन्ध में ध्यान देने वाली बातें

“स्टॉक स्प्लिट से कंपनी के कुल शेयर की संख्या बढ़ जाती है,”

जैसे : अगर मेरे पास किसी कंपनी के 100 स्टॉक हैं, और अगर 1:1 के अनुपात में स्टॉक स्प्लिट होता है, तो मेरे पास

अब 200 शेयर हो जायेंगे, जिनकी फेस वैल्यू इसी अनुपात में कम हो जाएगी,

“Stock Split से कंपनी के शेयर कैपिटल और मार्केट कैप पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा”

इसका मतलब ये हुआ कि स्टॉक स्प्लिट करने से कंपनी के शेयर की कुल संख्या बढ़ती है, लेकिन शेयर कैपिटल वैल्यू, और मार्केट कैपिटल वैल्यू उतना ही रहेगा, जितना स्टॉक

स्पलिट से पहले था, और इसलिए स्टॉक स्पलिट से कंपनी के शेयर कैपिटल और मार्केट कैप पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा,

स्टॉक स्पलिट से कंपनी के शेयर का फेस वैल्यू कम किया जाता है,

स्टॉक स्पलिट से सबसे बड़ा प्रभाव कंपनी के प्रति शेयर फेस वैल्यू में होता है, और जिस अनुपात में कंपनी स्टॉक स्पलिट करती है, उसी अनुपात में कंपनी के प्रति शेयर फेस वैल्यू में कमी आ जाती है,

स्टॉक स्पलिट से कंपनी और निवेशक के फायदे

स्टॉक स्पलिट से कंपनी को सबसे बड़ा फायदा ये होता है, कि कंपनी के शेयर के मार्केट वैल्यू और फेस वैल्यू दोनों में कमी आ जाती है, और जिस से कंपनी के शेयर नए निवेशकों के लिए काफी सस्ते लगने लगते हैं, और आम निवेशक भी आसानी से निवेशक कर सकता है, निवेशक के पॉइंट ऑफ व्यू से फायदा ये होता है कि – पुराने निवेशक के पास कंपनी के शेयर की संख्या ज्यादा हो जाती है, जिसका लाभ उन्हें डिविडेंड के रूप में होता है, और उन्हें ज्यादा लाभ मिलता है,

और साथ ही अब नए निवेशक आसानी से कंपनी के शेयर खरीद सकते हैं,

स्टॉक स्पलिट से कंपनी को एक और बड़ा फायदा ये होता है कि कंपनी के शेयर के भाव में कमी और शेयर की संख्या ज्यादा हो जाने से कम्पनी के शेयर में लिकिडिटी की समस्या में कमी आ जाती है, लिकिडिटी (Liquidity) का मतलब ये होता है कि शेयर खरीदने वाले को ने आसानी से शेयर बेचने वाले मिल जाते हैं और शेयर बेचने वाले को आसानी से शेयर खरीदने वाले मिल जाते हैं, |

कंपनी स्टॉक या शेयर क्यों SPLIT क्यों करती है ?

Stock Split से कंपनी को होने वाले फायदों को समझने के बाद आप आसानी से समझ सकते हैं कि कंपनी स्टॉक स्पलिट क्यों करती है, स्टॉक स्पलिट करने के पीछे कंपनी ये चाहती है कि –

- कंपनी के शेयर की मार्केट में अच्छी liquidity हो, और
- कंपनी के शेयर में आम जनता भी आसानी से निवेश कर सके.

Dividend क्या होता है



DIVIDEND KYA HOTA HAI ? (लाभांश क्या होता है)

डिविडेंड किसी कंपनी के द्वारा उसके शेयर होल्डर को दिया जाने वाला कम्पनी के NET PROFIT (शुद्ध लाभ) का एक हिस्सा होता है,

कम्पनी को जो भी लाभ होता है, उसमें टैक्स और सभी तरह के दुसरे ADJUSTMENT करने के बाद बची NET PROFIT (शुद्ध लाभ) को कम्पनी के शेयर होल्डर में बराबर बराबर बाटा जाता है, और जिस व्यक्ति के पास जितने शेयर होते हैं, उस व्यक्ति को उसी अनुपात में डिविडेंड का लाभ प्राप्त होता है,

जैसे – अगर मेरे पास TCS के 100 शेयर है, जिस पे TCS ने 5 रूपये प्रति शेयर का डिविडेंड दिया, इसका मतलब मुझे कुल डिविडेंड मिलेगा : $100 \times 5 = 500$ रूपये,

DIVIDEND देने का फैसला

ध्यान देने वाली बात है कि डिविडेंड देना है या नहीं, ये पूरी तरह कम्पनी के बोर्ड ऑफ़ डायरेक्टर्स के ऊपर निर्भर करता है, अगर Board of Directors चाहे तभी कम्पनी डिविडेंड देने की घोषणा करती है,

डिविडेंड देने का फैसला कंपनी की Annual General Meeting (AGM) में बोर्ड ऑफ़ डायरेक्टर द्वारा किया जाता है,

ध्यान देने वाली बात ये है कि – ज्यादातर कंपनी जो मार्केट में नए होते हैं, या जो इस पालिसी पर चलते हैं कि वे लाभ को वापस बिज़नेस में ही लगा कर बिज़नेस को और बढ़ाएंगे, ऐसी कंपनी डिविडेंड बहुत कम देती है, या नहीं देती है,

DIVIDEND का कैलकुलेशन

इस बात को खास ध्यान रखे कि डिविडेंड हमेशा शेयर के **FACE VALUE** पर दिया जाता है, और इसका कैलकुलेशन भी **FACE VALUE** पर ही किया जाता है,

जैसे किसी स्टॉक का करंट मार्केट price है – 500 रूपये,

लेकिन उस स्टॉक का फेस वैल्यू अगर 10 रूपये है, और कम्पनी 100 % डिविडेंड देने का फैसला करती है,

तो इसका मतलब है शेयर का फेस वैल्यू है 10 रुपये, तो 100% डिविडेंड का मतलब है प्रति शेयर 10 रुपये का डिविडेंड मिलेगा,

ध्यान रहे डिविडेंड का current MARKET PRICE से कोई लेना देना नहीं होता है,

DIVIDEND निवेशक को किस ACCOUNT में दिया जाता है,

डिविडेंड उस BANK ACCOUNT में CREDIT होता है, जो हमारे DEMAT ACCOUNT में LINKED होता है, जिसमें शेयर होल्डिंग्स पड़ी हुई होती है,

जैसे अगर मेरा आईसीआईसीआई बैंक का अकाउंट **DEMAT ACCOUNT** के साथ लिंक्ड है, और मेरे इस DEMAT ACCOUNT में TCS के शेयर क्रेडिट है,

और अगर TCS, कंपनी डिविडेंड देने कि घोषणा करती है, तो मुझे मेरे आईसीआईसीआई बैंक के अकाउंट में डिविडेंड डायरेक्टली क्रेडिट हो जायेगा,

DIVIDEND कितने तरह के होते हैं –

- **INTERIM DIVIDEND** – जब कंपनी फाइनेंसियल इयर के भीतर ही quarterly डिविडेंड की घोषणा करती है, तो इसे INTERIM DIVIDEND कहा जाता है,
- **FINAL DIVIDEND** – जब कंपनी Financial Year के अंत में Annual डिविडेंडकी घोषणा करती है, तो इसे FINAL DIVIDEND कहा जाता है,
DIVIDEND के फायदे

डिविडेंड के कुछ प्रमुख फायदे इस प्रकार हैं

- डिविडेंड TAX FREE INCOME होता है, इसलिए अगर आपको किसी स्टॉक/शेयर/म्यूच्यूअल फण्ड पर जब डिविडेंड मिलता है, तो डिविडेंड पर कोई टैक्स नहीं लगता है,
- डिविडेंड एक पूरी तरह **PASSIVE INCOME** है, और एक बैलेंस्ड निवेश पोर्टफोलियो में डिविडेंड इनकम को भी शामिल क्या जाता है.
- कोई फर्क नहीं होता है, कम्पनी अगर डिविडेंड देना चाहती है, तो शेयर के फेस वैल्यू पर दे देती है,
- डिविडेंड एक फिक्स्ड इनकम की तरह होता है, बड़ी बड़ी स्थापित और वर्षों पुरानी कंपनी अक्सर निश्चित समय पर डिविडेंड देती रहती है,

DIVIDEND YIELD क्या होता है ?



DIVIDEND YIELD एक फाइनेंसियल RATIO है, जो स्टॉक के डिविडेंड कमाने की क्षमता को दिखाता है,

और इस तरह डिविडेंड यील्ड निवेशक को किसी स्टॉक के डिविडेंड कमाने की क्षमता और उसके शेयर के मार्केट प्राइस के बीच सम्बन्ध को बताता है.

जैसे – मान लीजिए अगर INFOSYS कंपनी जिसके स्टॉक का FACE VALUE 5 रूपये, और मार्केट वैल्यू है 800 रूपये प्रति शेयर ,

और INFOSYS 200 % डिविडेंड की घोषणा करती है,

इसका मतलब इनफोसिस से मिलने वाला डिविडेंड होगा,
शेयर के फेस वैल्यू का $200\% = 10$ रूपये,

और अगर DIVIDEND YIELD की बात की जाये तो, हमें
शेयर के डिविडेंड वैल्यू को मार्केट वैल्यू से भाग देना होगा,

इस तरह

**INFOSYS के शेयर का डिविडेंड यील्ड होगा =
 $(10/800)*100 = .0125 \times 100 = 1.25\%$**

और इस तरह INFOSYS का डिविडेंड यील्ड होगा = 1.25 %

DIVIDEND ANNOUNCEMENT DATES

जब कोई कंपनी DIVIDEND देने की घोषणा करती है, तो डिविडेंड तुरंत ही नहीं दे दिया जाता है, बल्कि डिविडेंड की घोषणा और डिविडेंड के पेमेंट के बीच चार प्रमुख DATES होते हैं, और अंतिम Date पर ही डिविडेंड का पेमेंट होता है,

ये चार Date इस प्रकार है –

- 1) **Dividend declaration date-** यह वो Date होता है, जिस दिन कंपनी डिविडेंड देने की घोषणा अपने शेयर होल्डर को करती है,
- 2) **Last Cum-dividend date/.Ex-Dividend date –** यह वो Date है, जो Last date होता है, इस Date के बाद अगर किसी ने स्टॉक या शेयर खरीदा है, तो उसे डिविडेंड नहीं मिलेगा, अगर आपको किसी स्टॉक का डिविडेंड पाना है, तो आपको इस Last Cum-dividend date से पहले उस स्टॉक को खरीदना होगा.

3) **Date of record या Record date** – यह वो Date होता है, जिस दिन कंपनी अपने रिकॉर्ड बुक्स में ये देखती है, अभी उसके शेयर किन किन लोगो के पास है, इस Date पर कंपनी के रिकॉर्ड बुक में जिन लोगो का नाम रहता है, वही शेयर का डिविडेंड पाने के हक़दार होते हैं।

4) **Date of डिविडेंड Payment.** – यह वो Date होता है, जब कंपनी द्वारा वास्तव में डिविडेंड का पेमेंट किया जाता है।

बोनस शेयर क्या होता है ?



Bonus share को समझने के लिए आइए सबसे पहले समझते हैं, बोनस का हिंदी अर्थ क्या है,

बोनस का हिंदी अर्थ – अतिरिक्त लाभ (premium), या पारितोषिक (Gift),

और इस तरह बोनस शेयर का अर्थ है- अतिरिक्त शेयर,

अक्सर हमें सुनने को मिलता है, कि – “XYZ कंपनी ने बोनस शेयर जारी किए”,

या फिर – “ABC बोनस शेयर जारी करने वाली है”

अब ऐसे में हमें दो बाते समझने की ज़रूरत है कि आखिर बोनस शेयर क्या होता है ? और कंपनी के बोनस शेयर जारी करने से निवेशकों को क्या फायदा है? और साथ ही कंपनी बोनस शेयर क्यों जारी करती है?

तो दोस्तों,

आज के इस टॉपिक में हम इसी बात को डिटेल में समझेंगे कि BONUS SHARE क्या होता है? बोनस शेयर से कंपनी और निवेशक को क्या फायदे है? और कंपनी बोनस शेयर क्यों जारी करती है?

सबसे पहले देखते हैं –

बोनस शेयर क्या होता है?

बोनस शेयर, कंपनी के CURRENT SHAREHOLDER को बिल्कुल FREE दिया जाने वाला अतिरिक्त शेयर होता है,

जैसे – किशोर ने IFOSYS कंपनी के 100 शेयर खरीदे हुए है, और कम्पनी 1:1 (1 शेयर के बदले 1 बोनस) के अनुपात में, बोनस शेयर जारी करने की घोषणा करती है,

तो ऐसे में किशोर को 1 शेयर के बदले 1 बोनस यानी कंपनी द्वारा 100 शेयर के बदले 100 अतिरिक्त शेयर किशोर को बिल्कुल फ्री में देगी,

और इस तरह किशोर को 1:1 के बोनस शेयर मिल जाने से किशोर के खाते में, बिना कुछ भी अतिरिक्त कीमत चुकाए कुल 200 शेयर हो जायेंगे,

बोनस शेयर के सम्बन्ध में ध्यान देने वाली बातें

(Important Notes on Bonus Share)

- 1) Bonus Share बिल्कुल फ्री होता है,
- 2) बोनस शेयर, हमेशा एक अनुपात (Ratio) में जारी किया जाता है, जैसे –
1:1 यानी (1 शेयर के बदले 1 बोनस)

2:1 यानी (1 शेयर के बदले 2 बोनस)

3:1 यानी (1 शेयर के बदले 3 बोनस)

4:1 यानी (1 शेयर के बदले 4 बोनस)

3) किसी निवेशक के पास के पास पहले से उस कंपनी के जितने शेयर हैं उसी से तय होगा कि आपको कंपनी के कितने बोनस शेयर मिलेंगे, जैसे – 1:1 के अनुपात में बोनस शेयर की घोषणा पर, अगर आपके पास सौ शेयर है, तो आपको उतने ही और यानि 100 शेयर और मिल जायेंगे, और आपके पास कुल शेयर हो जायेगा – 200

4) बोनस शेयर के सम्बन्ध में सबसे खास बात जो हमें ध्यान देना चाहिए वो ये कि –

बोनस शेयर जारी करने से निवेशक के पास “शेयर की संख्या” तो बढ़ जाती है, लेकिन “निवेश की राशी” नहीं बढ़ती है,

क्योंकि बोनस शेयर जिस अनुपात में जारी किये जाते हैं, कंपनी उसी अनुपात में शेयर के भाव को कम कर देती है,

जैसे – मान लीजिए किशोर ने INFOSYS के 100 शेयर 1000 प्रति शेयर से खरीदा हुआ है, और इस तरह किशोर ने कुल $1000 \times 100 = 1$ लाख रूपये निवेश किया हुआ है,

अब मान लीजिए कंपनी ने 1:1 के अनुपात में बोनस शेयर जारी किया,

तो किशोर को कुल 100 एक्स्ट्रा शेयर, बोनस के रूप में मिल जायेंगे, और किशोर के पास कुल 200 शेयर हो जायेंगे, लेकिन बोनस शेयर जारी होने पर कंपनी के शेयर PRICE भी

1:1 के अनुपात में कम हो जायेंगे, यानी शेयर का पहले price था 1000, जो अब घटकर हो जायेगा – 500 रूपये,

और इस तरह किशोर के द्वारा कुल निवेश की गई रकम होगी – 200 शेयर \times 500 = 1 लाख रूपये,

इस तरह आपने देखा कि – बोनस शेयर जारी होने से किशोर के पास शेयर की संख्या तो दो गुनी यानी 100 से बढ़कर 200 शेयर हो गए, लेकिन दूसरी तरफ शेयर का PRICE 1000 रूपये से घटकर आधा यानी 500 रूपये प्रति शेयर हो गया,

और इसका मतलब ये हुआ कि – किशोर के पास सिर्फ सिर्फ शेयर की संख्या में बढ़ने का फायदा हुआ, लेकिन उसे किसी तरह के पैसे मिलने के मामले में कोई लाभ नहीं हुआ

BONUS SHARE से निवेशक को होने वाले फायदे

1) शेयर की संख्या में वृद्धि – निवेशक के पास शेयर की संख्या बढ़ जाती है।

2) अतरिक्त डिविडेंड का लाभ – शेयर की संख्या बढ़ने से निवेशक को ज्यादा शेयर पर डिविडेंड मिलने का लाभ होता है, जैसे – अगर ऊपर बताये गए एक्साम्प्ल में किशोर जिसके पास 100 शेयर है, और कंपनी अगर प्रति शेयर 2 रूपये का डिविडेंड देती है, तो किशोर को कुल डिविडेंड मिलेगा – $100 \times 2 = 200$

लेकिन किशोर को 1:1 के अनुपात में 100 एक्स्ट्रा शेयर बोनस मिलने से, किशोर के पास कुल शेयर हो जायेंगे 200 और अब किशोर को 200 शेयर पर डिविडेंड मिलेगा यानी – $200 \times 2 = 400$ रूपये,

3) नए रिटेल निवेशक को लाभ – बोनस शेयर जारी होने पर कंपनी के शेयर प्राइस में कमी आ जाती है, जैसे ऊपर के एक्साम्प्ल में बोनस जारी होने से पहले infosys के शेयर का भाव था 1000 रुपये प्रति शेयर, और बोनस शेयर जारी होने के बाद infosys का शेयर का price हो जाता है – 500

इस तरह बोनस शेयर जारी होने से शेयर के भाव कम हो जाते हैं, जिस से नए और छोटे निवेशक भी आसानी से शेयर को खरीद सकते हैं,

BONUS SHARE से कंपनी को होने वाले फायदे

1) जब कंपनी के पास जमा cash reserve फण्ड बहुत बड़ा हो जाता है, तो इस reserve fund को कंपनी, नए बोनस शेयर जारी करके, अपने रिज़र्व फण्ड को पूँजी यानि कैपिटल में बदल देती है,

2) कंपनी जब बोनस शेयर जारी करती है, तो उसके शेयर के भाव में कमी आ जाती है, जिस से ज्यादा से ज्यादा लोग उस कंपनी के शेयर को कम भाव में खरीद सकते हैं, और ज्यादा खरीद और विक्री होने से शेयर के मार्केट में cash liquidity बहुत अच्छी हो जाती है,

COMPANY BONUS SHARE क्यों ISSUE करती है?

Company द्वारा बोनस शेयर जारी करने का सबसे बड़ा कारण होते हैं, कंपनी के बढ़े हुए शेयर price को कम करना, जिस से की ज्यादा से ज्यादा निवेशक और आम निवेशक भी कंपनी के शेयर को खरीद सकें,

इसके आलावा कंपनी अपनी रिज़र्व फण्ड को जब अपनी पूँजी को बढ़ाने के उद्देश्य से भी बोनस शेयर जारी करती है.

RIGHT ISSUE क्या होता है ?



जब भी कोई कंपनी (सूचीबद्ध कंपनी) 'राईट इश्यू' जारी करती है, तो वह कंपनी सबसे पहले अपने शेयर धारकों को प्राथमिकता देती है. यानि मान लीजिये रिलायंस कंपनी ने राईट शेयर की घोषणा की तो राईट शेयर उन्ही शेयरधारकों को खरीदने की अनुमति होगी जिनके पास रिलायंस के शेयर पहले से होंगे. कंपनी अपने शेयर धारकों के सामने उनके शेयर्स के अनुपात में नये शेयर्स खरीदने का प्रस्ताव रखती है. जैसे – यदि कंपनी 2:4 के अनुपात में राईट इश्यू देने की घोषणा करती है, इसका मतलब यह हुआ कि आपको उस कंपनी के 4 शेयर्स पर 2 शेयर्स खरीदने का हक्क होगा. कंपनी अपने ब्यापार के विस्तार के लिए राईट इश्यू के जरिये अपने शेयर धारकों को कम प्राइस पर शेयर खरीदने का ऑफर देती है। कंपनी अपने मौजूदा शेयर धारकों को राईट इश्यू 'मार्किट प्राइस' से कम कीमत पर खरीदने का ऑफर देती है. शेयर धारक इस प्रस्ताव को स्वीकार करे या ना करें ये उसकी इच्छा पर निर्भर करता है. यदि कोई शेयर धारक राईट

इश्यू को नहीं खरीदना चाहता, तो वह अन्य शेयर होल्डर को भी ट्रांसफर कर सकता है।

कंपनी के ‘बोर्ड ऑफ डायरेक्टर’ राईट इश्यू को मंजूरी देते हैं। इसमें “कम राईट प्राइस” और “एक्स राईट प्राइस” का अहम रोल होता है। कंपनी को अपने शेयर धारकों को राईट इश्यू लाने की बजह बताना होता है कि वह राईट इश्यू किस उद्देश्य के लिए ला रही है। राईट इश्यू जारी करने के बाद कंपनी अपने निवेशकों को एक फॉर्म भेजती है। इस फॉर्म को भरकर चेक के साथ जमा करना होता है। राईट इश्यू में ‘रिकॉर्ड डेट’ का बहुत महत्व होता है।

कम राईट प्राइस और एक्स राईट प्राइस क्या है ?

कम राईट : कंपनी द्वारा एक निश्चित तारीख की घोषणा की जाती है। इस तारीख से पहले खरीदे गए शेयरों पर निवेशकों को राईट इश्यू का अधिकार होता है। राईट इश्यू जारी होने से पहले की कीमत शेयर की “कम राईट प्राइस” कहलाता है।

एक्स राईट : शेयर आवंटित होने के बाद शेयर की बाजार कीमत एक्स राईट प्राइस कहलाता है।

शेयर बायबैक क्या है ?



बायबैक(BUYBACK) **आईपीओ** का बिलकुल उल्टा है, आईपीओ के जरिये कंपनी निवेशकों को शेयर बेचती है. जबकि बायबैक में कंपनी अपने शेयर धारकों से शेयर वापस खरीदती है. यानि जब कोई कंपनी अपने शेयरधारकों से अपने ही शेयर वापस खरीदती है तो इसे बायबैक प्रणाली कहा जाता है. बायबैक में कंपनी अपने शेयर धारकों से मुख्यतः दो तरीकों से शेयर खरीदती है .

- 1) टेंडर ऑफर के जरिये.
- 2) दूसरा ओपन मार्किट के जरिये कंपनी बायबैक का ऐलान करती है.

टेंडर ऑफर के जरिये : इस ऑफर के जरिये कंपनी अपने शेयर धारकों से अपने शेयर वापस खरीदने का प्रस्ताव रखती है.

ओपन मार्किट के जरिये : इस ऑफर के जरिये कंपनी ओपन मार्किट से शेयर खरीदने की घोषणा करती है.

बायबैक(BUYBACK) की क्या प्रक्रिया है ?

कंपनी का बोर्ड शेयर बायबैक(BUYBACK) के लिए एक प्रस्ताव पारित करता है और इसे मंजूरी देता है. इसके बाद कंपनी बायबैक का घोषणा करती है. इसमें रिकार्ड डेट और बायबैक की समयावधि यानि बायबैक कब किया जायेगा उसका वर्णन होता है. रिकॉर्ड डेट क्या होता है ? रिकॉर्ड डेट का यह मायना होता है कि उस निश्चित समय तक जिन निवेशकों के पास कंपनी के शेयर हैं, वे बायबैक में अपने शेयर दे सकते हैं.

कंपनी अपने शेयर बायबैक(BUYBACK) क्यों करती है ?

कंपनी कई कारणों से अपने शेयर BUYBACK करती है. जिनमें से कुछ कारण निम्नलिखित इस प्रकार हैं :

- 1) कंपनी के पास अतिरिक्त नकदी का होने पर कंपनी अपने शेयर धारकों से शेयर वापस खरीदने का प्रस्ताव रखती है. कंपनी शेयर बायबैक के जरिए अपने अतिरिक्त नकदी का इस्तेमाल करती है.
- 2) बायबैक से कंपनी में प्रमोटर अपनी हिस्सेदारी बढ़ाते हैं और जिससे टेकओवर का खतरा कम हो जाता है.
- 3) प्रति शेयर कमाई(ईपीएस) को बढ़ावा देने का प्रयास.

- 4) कंपनी शेयर प्रीमियम पर खरीदकर मार्किट में इनकी संख्या को कम करती हैं और प्रमोटर की होल्डिंग को बढ़ाती है।
- 5) शेयर बायबैक या वापस खरीदने का सामान्य कारण शेयरधारकों को अतिरिक्त नकद वितरित करना भी होता है क्योंकि बायबैक प्रस्ताव आम तौर पर शेयर के वर्तमान मूल्य से अधिक होता है।
- 6) कभी-कभी जब कंपनी को लगता है कि शेयर का प्राइस अंडरवैल्यूड है, तो स्टॉक बायबैक का इस्तेमाल शेयर के प्राइस को बढ़ाने के लिए किया जाता है।
- 7) टैक्स लाभ के लिए भी कंपनियां बायबैक का प्रस्ताव लाती हैं।

EPS क्या होता है ?

EPS का पूरा नाम 'EARNING PER SHARE' यानि प्रति शेयर आय होता है. प्रत्येक निवेशक को किसी भी कंपनी में निवेश करने से पहले इस बात की जानकारी होनी चाहिए, कि उस शेयर का 'EPS' यानि प्रति शेयर आय और PE RATIO क्या है. और इसकी गणना कैसे की जाती है. कंपनी की परफॉरमेंस कैसी है, यह जांचने के लिए ईपीएस एक महत्वपूर्ण टूल है.

EPS(प्रति शेयर आय) की परिभाषा :

किसी भी कंपनी के प्रति शेयर आय को 'EARNING PER SHARE' कहा जाता है. दुसरे शब्दों में कह सकते हैं, कि कंपनी के कुल शुद्ध लाभ का प्रत्येक शेयर के हिस्से में जो आय आती है, उसे 'ईपीएस' कहते हैं। EPS को गिनने का तरीका :

इसका कैलकुलेशन बहुत ही आसान है. कंपनी की कुल सुद्ध लाभ को उसके कुल शेयरों की संख्या से विभाजित करके ईपीएस हासिल किया जा सकता है. यानि

प्रति शेयर आय = कुल शुद्ध लाभ / कुल शेयरों की संख्या

उदहारण के जरिये समझें : माना किसी कंपनी की कुल पूँजी 1 करोड़ रूपये है, और 100 रूपये प्रति शेयर के 1 लाख शेयर है. यदि कंपनी अपने बित्तीय वर्ष के दौरान 40 लाख का लाभ कमाती है, तो उसका EARNING PER SHARE (40 लाख / 1 लाख = 40) चालीस रूपये होगी.

यदि कोई कंपनी अपने तिमाही नतीजे घोषित करती है, और आपको उसका 'ईपीएस' जानना है, तो आप उसके

तिमाही नतीजों के आधार पर 'ईपीएस' कैलकुलेशन(गिनती) कर सकते हैं।

जानिए कैसे करें तिमाही नतीजों के आधार पर EPS की गणना :

उदाहरण : पहले वाले उदहारण के अनुसार से यदि कंपनी अपने तिमाही नतीजों में 15 लाख का नेट प्रॉफिट करती है, तो हम अनुमान लगा सकते हैं, कि उस वित्तीय वर्ष में कंपनी का ईपीएस(प्रति शेयर आय) 60 रूपये के आस-पास होगी।इसी तरह हम छमाही नतीजों को देखकर भी वार्षिक प्रति शेयर आय की कैलकुलेशन कर सकते हैं।

तिमाही और छमाही नतीजों के अनुमान से वार्षिक ईपीएस की गणना करते समय इन बातों को जरुर ध्यान में रखें :

- 1) यदि किसी कंपनी का कोई प्रोजेक्ट खत्म होने की कगार पर हो, और उसका लाभ वर्तमान तिमाही रिजल्ट में ही समाहित हो, और भविष्य में कोई प्रोजेक्ट मिलने की संभावना न हो तो ऐसी स्थिति में कंपनी की आगे की स्थिति को देखकर ही वार्षिक प्रति शेयर आय का अनुमान लगाना चाहिए।
- 2) यदि कंपनी का व्यापार पुरे साल एक सा नहीं रहता हो, तो ऐसी स्थिति में भी ईपीएस का वार्षिक अनुमान लगाना गलत साबित हो सकता है इत्यादि ।

PRICE EARNING RATIO किसे कहते हैं?



PE(PRICE EARNING RATIO) यानि प्राइस एर्निंग मल्टीपल या मूल्य आय अनुपात कंपनी के शेयर का मूल्य तथा शेयर द्वारा अर्जित आय का अनुपात है. किसी कंपनी के चार से पांच वर्षों की अवधि के दौरान उस कंपनी के शेयर की औसत मूल्य और शेयर द्वारा अर्जित लाभ का अनुपात निकालने के लिए PE रेश्यो यानि 'मूल्य आय अनुपात' एक महत्वपूर्ण साधन है.

किसी भी कंपनी का 'PRICE EARNING RATIO' जानकर ये अंदाजा लगाना आसान हो जाता है, कि उस शेयर की मूल्य में बढ़त की कितनी संभावना है. यदि किसी कंपनी के शेयर का 'मूल्य आय अनुपात' ज्यादा है, तो निवेशक उस कंपनी की

ओर ज्यादा आकर्षित होते हैं। यानि यदि किसी शेयर का PE RATIO उच्च स्तर पर हो तो यह दर्शाता है, कि निवेशक उस शेयर को ज्यादा महत्व दे रहे हैं।

PE RATIO यह भी दर्शाता है, कि किसी शेयर को बाज़ार में कितना ऊँचा ऑँका गया है। इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए, कि किसी भी शेयर का PE अधिक होने का मतलब भविष्य में बढ़िया रिटर्न्स की गारंटी नहीं हो सकती है। ऐसा भी हो सकता है, कि किसी शेयर के कीमत में कृत्रिम उछाल आने से उसका PE बढ़ गया हो। इसलिए निवेशक को सारी परिस्थितियों यानि कंपनी का बिज़नेस मोडूल, बैलेंस शीट, ईपीएस, इत्यादि को ध्यान में रखकर ही शेयर में निवेश करना चाहिए।

इसी प्रकार पुरे बाजार का PE रेश्यो देखकर बाज़ार के बढ़ने का अनुमान लगाया जा सकता है।

PRICE EARNING RATIO के माध्यम से किसी भी उद्योग के शेयर्स के बढ़ोतरी का अंदाजा लगाया जा सकता है। इसी तरह किसी दो शेयरों या दो कंपनियों की तुलना करनी हो तो 'PE RATIO' एक बहुत ही महत्वपूर्ण मापक है। यदि किसी दो शेयरों की तुलना करें जिनकी एक निश्चित अवधि में अर्जित लाभ (आय) समान हो किंतु उनका 'मूल्य आय अनुपात' भिन्न है तो यह माना जा सकता है कि जिस शेयर का PE रेश्यो अधिक है, उस कंपनी पर निवेशकों का विश्वास अधिक है।

PRICE EARNING RATIO निकालने का आसान तरीका क्या है ? PE RATIO जानने का आसान तरीका यह है, कि यदि एक निश्चित अवधि के दौरान किसी शेयर की औसत मूल्य को उस अवधि के दौरान उस शेयर द्वारा अर्जित

आय से यानि **EPS** (EPS की अधिक जानकारी के लिए **EPS** पोस्ट को जरुर पढ़ें) से विभाजित कर दिया जाय, तो उस शेयर का PE RATIO ज्ञात हो जाता है. यानि

मूल्य आय अनुपात = शेयर की औसत कीमत / प्रति शेयर आय

PE RATIO = MARKET PRICE / EARNING PER SHARE(EPS)

उदहारण के जरिये समझें : माना किसी कंपनी के 100 रूपये प्रति शेयर के कीमत के 100000 शेयर हैं। और कंपनी की वार्षिक आमदनी 500000 रूपये है। तो शेयर का EPS $500000 / 100000 = 5$ रूपये होगा। यदि अब शेयर का मार्किट प्राइस 50 रूपये है तो शेयर का PE RATIO होगा :

PRICE EARNING RATIO = 50/5 = 10.

PRICE EARNING RATIO का प्रयोग करने के लिए कंपनी के शेयर के कीमत का इतिहास उठा कर देख लीजिये कि कंपनी के शेयर का और जिस इंडस्ट्रीज में वह कंपनी है, और पुरे बाजार का अधिकतम PE रेश्यो क्या रहा है? इनकी तुलना से यह अनुमान लगाना आसान हो जाता है, कि कंपनी के शेयर की कीमत में बढ़ने की कितनी संभावना है।

Short Selling क्या होता है ?



Short selling का हिंदी अर्थ है – अपूर्ण विक्री (Incomplete Sell)

शोर्ट सेलिंग के लिए पहले स्टॉक को बेचा जाता है, और बाद में उसे खरीदा जाता है,

क्या स्टॉक के भाव कम होने पर भी लाभ कमाया जा सकता है ?

दोस्तों, short selling के प्रोसेस को समझना बहुत मजेदार है, क्योंकि इस concept में पहले बेचा जाता है और बाद में खरीदा जाता है, और स्टॉक के भाव में कमी आने से भी लाभ कमाया जा सकता है,

सामान्यतया हम सभी यही जानते हैं कि स्टॉक मार्केट में स्टॉक खरीद (Buy) और बेचकर (Sell) लाभ कमाया जाता है,

यानी स्टॉक मार्केट में लाभ कमाने के लिए स्टॉक को कम भाव में खरीदो और ज्यादा भाव में बेचो,

(Buy Low – Sell High)

और इस तरह हमें पहले स्टॉक कम भाव में खरीदना होता है, और बाद में स्टॉक का भाव बढ़ जाने पर उसे ज्यादा भाव में बेच कर लाभ कमाया जाता है,

लेकिन स्टॉक मार्केट में इसके ठीक उल्टा एक concept है, जिसे कहते हैं – “Short selling”

short selling के इस concept में अगर कोई स्टॉक मेरे पास नहीं भी है, तो भी अगर मैं चाहूं तो उस स्टॉक पहले बेचने का आर्डर दे सकता हु, और लाभ कमा सकता हु,

आइए जानते हैं कैसे –

स्टॉक मार्केट में लाभ कमाने के लिए जरुरी नहीं कि स्टॉक का भाव बढ़ेगा तभी लाभ आप लाभ कमाएंगे, बल्कि किसी स्टॉक के भाव गिरने पर बहुत अच्छा लाभ कमाया जा सकता है,

जी हा – अगर किसी स्टॉक का भाव गिर रहा है, तो भी आप उसमें लाभ कमा सकते हैं,

स्टॉक का भाव गिरने पर लाभ कमाने के लिए,

आपको स्टॉक को पहले ज्यादा कीमत पर बेचना होता है, भले ही आपके पास वो स्टॉक हो या नहीं, और बाद में जब स्टॉक का भाव गिर जाता है, तो उसे कम भाव में वापस खरीदना होता है,

इस तरह जब आप कोई स्टॉक पहले बेचते हैं, और बाद में खरीदते हैं, तो इसे Short Selling कहा जाता है,

SHORT SELLING में PROFIT और LOSS कब होता है?

PROFIT ON SHORT SELLING

Short Sell के केस में लाभ तब होता है, जब हम स्टॉक को high price पर sell करके, बाद में जैसे ही स्टॉक का भाव गिरे उसे Low price में खरीद ले,

Profit (Short Selling) = Sell High – Buy Low

जैसे – मान लीजिए आपको पता है कि रिलायंस के शेयर का भाव गिरने वाला है, तो ऐसे केस में जब भाव गिरने वाला है तो भी आप रिलायंस के शेयर में लाभ कमा सकते हैं,

इसके लिए आपको पहले रिलायंस के शेयर को high price पर बेचना होगा, और जैसे ही रिलायंस के शेयर का भाव गिरे तो आपको उसे low price पर खरीदना होगा,

मान लीजिए, आपने रिलायंस के 10 शेयर को आपने पहले 100 रुपये के भाव से पहले बेच दिया,

और आपके बेचने के बाद जैसा आपने सोचा था, रिलायंस का भाव गिर जाता है, और ये 95 रुपये हो जाता है,

तो जैसे ही 95 हुआ आपने रिलायंस के 10 शेयरशेयर 95 के भाव से खरीद लिया ,

इस तरह आपने कुल कितने मूल्य का बेचा = $100 \times 10 = 1000$

और कुल कितने का खरीदा = $95 \times 10 = 950$

तो इस तरह short selling में होने वाला लाभ होगा : $1000 (\text{sell}) - 950 (\text{purchase}) = 50 (\text{profit})$

LOSS ON SHORT SELLING

आइये अब बात करे है Short Sell के केस में आपको नुकसान यानि loss कब होता है,

याद रखिए –

short selling में आपक loss तब होता है, जब आप स्टॉक को high price पर sell करके, आपके सोच कि अनुसार स्टॉक का भाव गिरता नहीं है, और आपने जितने में उसे बेचा उस से ऊपर चला जाता है, तो ऐसे केस में आपको अपनी short selling के सौदे को कम्पलीट करने के लिए आपको high price पर भी स्टॉक खरीदना ही पड़ता है,

क्योंकि आपने जिसको स्टॉक पहले बेचा है, उसे तो स्टॉक आपको तय समय में देने ही पड़ेंगे, नहीं तो आपका सौदा पूरा नहीं होगा,

तो इस तरह जब आप high price पर स्टॉक को sell कर देते है, और उसे sell price से भी ऊपर के high price पर आपको वापस स्टॉक खरीदना पड़ता है, तो ऐसे केस में आपको loss होता है,

Loss (Short Selling) = Sell price (Lower than Buy) – Buy price (High than sell)

जैसे – मान लीजिए आपको पता चला कि रिलायंस के शेयर का भाव गिरने वाला है, और आपने सोचा कि short selling करके लाभ कमाते है,

और इसके लिए आपने रिलायंस 10 शेयर को आपने पहले 100 रुपये के भाव से पहले बेच दिया (short sell),

और आपके बेचने के बाद जैसा आपने सोचा था, वैसा नहीं हुआ और रिलायंस का भाव गिरने के बजाये, रिलायंस के शेयर का भाव ऊपर चला 105 रूपये हो जाता है,

और आपको अपने सौदे को दिन के अंत में पूरा भी करना है, तो आपको अपने सौदे को पूरा करने के लिए मजबूरन रिलायंस के शेयर को 105 रूपये पर खरीदना होगा,

और इस तरह आपने पहले बेचा 100 रूपये पर,

और बाद में खरीदा 105 रूपये से, तो आपको प्रति शेयर 5 रूपये का loss हुआ,

यानी

तो इस तरह short selling में होने वाला loss : 1000 (total sell) – 1050 (total purchase) = 50 (profit)

ध्यान दीजिए कि ये एक short selling एक incomplete Transaction होता है, और वो तभी पूरा होता है, जब आप बेचे गए स्टॉक खरीद लेते हैं,

और इस तरह आपको तय समय के अन्दर अपने सौदे को अनिवार्य रूप से कम्पलीट करना होता है, और इसी अनिवार्यता के कारण आपको मज़बूरी में शेयर का भाव ज्यादा होने पर भी खरीदना होता है, ताकि आपका सौदा पूरा हो जाये, लेकिन जब आप ऐसा करते हैं, तो आपको loss भी हो जाता है,

SHORT SELLING कब और कैसे किया जाता है –

short selling दो तरह से किया जा सकता है

- 1) **Intra day short selling – Equity**
- 2) **Positional Short selling – Future and Option**

INTRADAY में SHORT SELLING

Short selling आम तौर पर किसी particualr स्टॉक के सम्बन्ध में intra day trading में किया जाता है, यानी आपने आज ही स्टॉक को बेचा और आज ही स्टॉक को मार्केट बंद होने से पहले खरीदा और अपने सौदे को कम्पलीट कर लिया,

Important point in Short selling :

अगर आप किसी वजह से स्टॉक को पहले short sell करने के बाद उस सौदे को पूरा नहीं करते हैं, यानी मान लीजिए आपने स्टॉक को बेच दिया short sell कर दिया, लेकिन उसे खरीदना भूल जाते हैं,

तो ऐसे केस में आपने जिसको स्टॉक बेचा है, उसको स्टॉक कि डिलीवरी नहीं मिल पायेगी, और स्टॉक एक्सचेंज इस सौदे में आपको short selling का डिफाल्टर मानते हुए, आपके ऊपर बहुत बड़ी रकम कि वसूली fine और penalty के रूप में कर सकता है,

इसलिए जब short selling करे तो ध्यान रखें, कि आप सौदे को समय के अन्दर कम्पलीट कर ले,

FUTURE AND OPTION (DERRIVATE) में SHORT SELLING

Future और option (derrivate) की trading में Short selling बहुत ही पोपुलर है, क्योंकि इसमें आप intra day के

साथ साथ अपनी short selling पोजीशन को expiry date जो की महीने का आखिरी गुरुवार होता है,

तब तक अपनी short पोजीशन को carry कर सकते हैं,

SHORT SELLING का PURPOSE

short selling का purpose होता है, हेजिंग, जिसे हम अपनी निवेश कि सुरक्षा भी कह सकते हैं,

स्टॉक मार्केट में short टर्म में मार्केट बहुत सारे उतार चढ़ाव देखने को मिलते हैं, इन उतार चढ़ाव से बचने के लिए हमें अपनी पोर्टफोलियो कि सुरक्षा करने होती है, जिसे हेजिंग कहते हैं,

और पोर्टफोलियो कि short टर्म में उतार चढ़ाव से सुरक्षा के लिए हेजिंग का इस्तेमाल किया जाता है, और हेजिंग के लिए short selling बहुत अच्छा काम करता है,

जैसे – मान लीजिए मेरे पास रिलायंस के १ लाख रूपये के शेयर है, और किसी दिन पता चलता है कि स्टॉक मार्केट में रिलायंस के भाव गिरने वाले हैं, लेकिन ऐसा सिर्फ अनुमान है, जरुरी नहीं कि स्टॉक का भाव गिरे हीं,

लेकिन अगर रिलायंस के भाव जितने रूपये से गिरेंगे, तो उसमे उतना हमारा loss होगा,

तो इस loss से बचने के लिए, मैं रिलायंस के फ्यूचर का short selling का सहारा ले सकता हु,

और short selling में जो भी लाभ होगा, वो मेरे स्टॉक निवेश पर होने वाले नुकसान कि भरपाई कर डेता है,

तो इस तरह short selling का मक्सद है, अपने लम्बे समय के निवेश पर loss कि भरपाई, यानि पोर्टफोलियो हेजिंग

लेकिन आजकल लोग इसका ज्यादा इस्तेमाल सट्टा लगाने (**speculation**) में ही कर रहे हैं,

SHORT SELLING कब करने चाहिए

- 1) जब बजट जैसी की बड़ा इवेंट होने वाला है, और बजट अच्छा नहीं होने की उम्मीद ऐसा लगता है, कि शेयर के भाव गिरेंगे.
- 2) जब कभी इंटरनेशनल मार्केट में गिरावट हो और जिसका असर इंडियन मार्केट में पड़ने वाला है.
- 3) जब किसी कम्पनी का फाइნेंसियल रिपोर्ट खराब होने कि उम्मीद हो.
- 4) जब कोई राजीनीतिक बदलाव की उम्मीद में लोग स्टॉक मार्केट को लेकर ज्यादा उत्साहित नहीं है, और मार्केट गिरने कि उम्मीद हो.
- 5) जब रिज़र्व बैंक किसी तरह कि नयी पालिसी लाता है, या किसी पालिसी में बदलाव करता है.
- 6) जब किसी कम्पनी के मैनेजमेंट में बदलाव होने से कंपनी के स्टॉक के भाव गिरने कि उम्मीद हो.
- 7) ऐसी कोई भी घटना जिस से स्टॉक मार्केट बहुत ज्यादा प्रभावित होने वाला हो, और ऐसा लगे कि स्टॉक के भाव गिरेंगे.

Penny Stocks क्या होता है।



Penny का हिंदी अर्थ सिक्का होता है, UK और आयरलैंड दोनों जगह की करेंसी में PENNY शब्द का इस्तेमाल किया जाता है,

स्टॉक मार्केट में Penny Stocks उन स्टॉक्स को कहा जाता है, जिनका मूल्य आम तौर पर काफी कम होता है, और पेनी स्टॉक कंपनी का **मार्केट कैपिटलाइजेशन** भी काफी कम होता है,

भारत में पेनी स्टॉक के मूल्य की बात की जाये तो आम तौर पर Penny Stocks का मूल्य 1 रुपये से लेकर 25 रुपये तक हो सकता है, पेनी स्टॉक कंपनियों का मार्केट कैप 100 करोड़ या स्माल कैप कंपनी जैसा या उनसे कम होता है,

पैनी स्टॉक्स शेयर कैसे पता करे ?

किस कंपनी का शेयर पैनी स्टॉक है ये जानने का कोई निश्चित तरीका नहीं है, पैनी स्टॉक, एक स्टॉक मार्केट में सस्ते मूल्य के शेयर के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक शब्द है,

आम तौर पर पैनी स्टॉक शेयर का पता लगाने के लिए कंपनी का **मार्केट कैप** देखना जरुरी होता है, पैनी स्टॉक कंपनी का मार्केट कैप **Small Market Cap कम्पनी** जैसा या उनसे भी कम होता है, और इनके शेयर का मूल्य भी 25 रूपये से नीचे होता है,

PENNY स्टॉक्स के फायदे और नुकसान

Penny Stocks के भाव में कम होने और सस्ता होने से ये स्टॉक ने निवेशक को बहुत आकर्षक लगते हैं, पैनी स्टॉक्स के कुछ FACTS यानि फायदे और नुकसान इस प्रकार हैं

- 1) पैनी स्टॉक में इन्वेस्ट करना बहुत अच्छा और सही लगता है, क्योंकि कम पैसे में बहुत ज्यादा शेयर मिल जाते हैं, जैसे – अगर आपके पास 10000 रूपये हैं, तो आप 500 रूपये वाले शेयर सिर्फ 20 ले सकते हैं, जबकि अगर आप 10 रूपये वाले शेयर लेते हैं तो आपको 1000 शेयर मिल जाते हैं, और इस तरह अगर आपने 10 रूपये वाले 1000 शेयर लिए हैं तो अगर शेयर 1 रुपए से बढ़ता है तो आपको 1000 का फायदा हो सकता है, जबकि 500 रूपये का 20 शेयर लेने पर जब वो 50 रूपये बढ़ेगा तभी आपको 1000 का फायदा होगा, दूसरी तरफ ध्यान देने वाली बात ये भी है कि अगर 10 रूपये वाला 1000 शेयर के भाव में 1 रूपये की कमी आने पर आपको 1000 का सीधा Loss

हो सकता है, जबकि 500 रुपये के 20 शेयर में जब 50 रुपये की कमी आएगी तभी आपको 1000 का loss होगा.

2) पेनी स्टॉक खरीदते समय निवेशक को लगता है कि 10 का शेयर आसानी से 20 रुपये हो सकता है, जबकि 500 रुपये का शेयर 1000 तक जाने में काफी समय लग सकता है, इस बात का दूसरा पहलु ये भी है कि 10 रुपये का शेयर 5 रुपये हो जाना भी बहुत आम बात है, और 500 रुपये का शेयर 250 रुपये पर आना थोड़ा मुश्किल लगता है, इसलिए पेनी स्टॉक में निवेश बहुत सोच समझ कर करना चाहिए.

3) पेनी स्टॉक एक आम आदमी को बहुत ही आकर्षक लगते हैं, और ऐसा लगता है कि पेनी स्टॉक आम आदमी के लिए बनाया गया है, और अक्सर आम आदमी पैनी स्टॉक में ही फसते हैं और अपनी पूंजी गवाते हैं,

आइये एक उदहारण से समझते हैं,

जैसे आज MRF LIMITED कंपनी का एक शेयर 65000 रुपये का है, जो की एक आम निवेशक के लिए खरीदना बहुत ही मुश्किल है, अगर एक आम निवेशक के पास 65000 रुपये हैं तो भी वो MRF का एक शेयर कभी नहीं लेगा, जबकि दूसरी तरफ कोई शेयर 13 रुपये पर ट्रेड कर रहा है, तो एक आम निवेशक आसानी से उस कम मूल्य वाले शेयर की तरफ आकर्षित हो जायेगा.

निष्कर्ष –

Penny Stocks के बारे में समझने के बाद अब दो सवाल आते हैं,

पहला ये की क्या हमें भी Penny Stocks में इन्वेस्टमेंट करना चाहिए या नहीं, – तो इसका जवाब है , निवेश किया जा सकता है ,लेकिन अगर स्टॉक मार्केट एक्सपर्ट की मने तो हमारे PORTFOLIO का एक बहुत छोटा हिस्सा लगभग 5% से कम पैसा ही Penny Stocks में निवेश करना चाहिए,

दूसरा सवाल ये कि क्या Penny Stocks में निवेश बिलकुल सुरक्षित है- तो इसका जवाब है , बिलकुल नहीं,

स्टॉक मार्केट में निवेश में पूँजी सुरक्षा की कोई गारंटी नहीं होती, और खास तौर से जब आप पैनी स्टॉक में निवेश करते हैं, तो पैनी स्टॉक कम्पनी छोटी होने के कारण, किसी भी आर्थिक संकट के आने से बहुत जल्दी ढूँढ़ने के कगार पर आ जाती है,

PENNY STOCKS कम्पनी के बारे में आम तौर पर मार्केट में कोई NEWS नहीं रहता है, जिसकी वजह से इन कंपनी में निवेश करना और भी रिस्क हो जाता है, क्योंकि इन कंपनी के शेयर में मैनीपुलेशन बहुत आसानी से किया जा सकता है,

इसलिए पैनी स्टॉक में निवेश काफी सावधानी पूर्व करना चाहिए और समय समय पर अपने INVESTMENT का रिव्यु करते रहना चाहिए.

Technical Analysis



Technical Analysis और स्टॉक मार्केट

SHARE MARKET से होने वाले लाभों को देख कर, हमारा इसकी तरफ आकर्षित होना बिल्कुल उचित है,

क्योंकि हर कोई अपने बचत के पैसों का निवेश कर के ज्यादा से ज्यादा लाभ कमाना चाहता है, लेकिन इस बात को बिल्कुल भी IGNORE नहीं किया जा सकता कि SHARE MARKET जोखिम से भरा हुआ है,

शेयर बाजार कि सबसे बड़ी सच्चाई ये है कि – यहाँ हर कोई शेयर बाजार से लाभ कमाने के लिए ही ENTRY करता है, लेकिन सिर्फ 10% लोग ही शेयर बाजार से सही तरह से पैसे बना पाते हैं, और बाकी 90 % लोगों को LOSS होता है,

और यहाँ 90 % लोगों को LOSS होने का कारण है कि उन्हें ये पता नहीं होना कि –

- शेयर्स कब खरीदे,
- शेयर्स किस भाव में खरीदे
- शेयर्स कितना खरीदे
- शेयर्स कब बेचे
- शेयर्स किस भाव में बेचे
- शेयर्स कितना बेचे
- और LOSS की स्थिति में अपने LOSS को कैसे नियंत्रित करे,

इन सभी बातों का पता लगाने के लिए हमें टेक्निकल एनालिसिस को सिखने और समझने की जरूरत होती है.

शेयर बाजार का RISK और RISK पे नियंत्रण

वैसे तो पूरे शेयर बाजार में दो ही काम होता है, शेयर खरीदना और शेयर बेचना, अब यही सबसे मजेदार पार्ट भी है, और इस बाजार कि दूसरी सच्वाई और सबसे निराली बात ये है कि, किसी को भी ठीक ठीक नहीं पता कि, कोई शेयर्स कब खरीदना चाहिए, और कब बेचना चाहिए, यही इसका जोखिम पार्ट भी है,

बाजार में जोखिम इसी बात का है कि, किसी को भी ठीक ठीक नहीं पता कि कोई शेयर्स कब खरीदे, कितने भाव में खरीदे, और कब बेचे तथा कितने भाव में बेचे,

सारा जोखिम इसी बात का है,

क्योंकि यहाँ कोई भी हमेशा 100 % सही नहीं हो सकता, और कोई भी ऐसा एक तरीका नहीं है जो सिख के हम ये कह सके

कि हम शेयर बाजार के बारे में सब सिख चुके हैं, और हम शेयर बाजार में हमेशा फायदे में ही रहेंगे.

शेयर बाजार के जोखिम को नियंत्रित करने के उपाय –

हमने देखा कि शेयर बाजार में दो कम होते हैं – शेयर्स खरीदना और शेयर्स बेचना,

इन्ही दोनों से जुड़ी कुछ मुख्य बातें हैं, जैसे –

शेयर खरीदना – शेयर कब खरीदें? कितने मूल्य में खरीदें?
शेयर कितना खरीदें ?

शेयर बेचना – शेयर कब बेचें? शेयर कितने मूल्य में बेचें?
शेयर कितना बेचें ?

साथ ही साथ LOSS कि दशा में, पूँजी कि सुरक्षा कैसे करें?

इन सब के बारे में जानकारी रखने और उसे अमल में लाने से शेयर बाजार में मौजूद जोखिम को नियंत्रित किया जा सकता है, और अपने पूँजी कि रक्षा के साथ साथ सही तरह से लाभ कमाने कि अपेक्षा की जा सकती है,

जैसा कि हम पहले ही स्पष्ट कर चुके हैं कि, कोई भी इन्सान हमेशा ठीक ठीक नहीं बता सकता कि, कोई शेयर कब खरीदना चाहिए, कितने में खरीदना, कितने में बेचना, और कब और कितना बेचना चाहिए,

लेकिन इसके कुछ उपाय हैं, जिसके द्वारा हम, शेयर्स के बारे में इस बात को कि, हम कब, किस मूल्य पर, और कितना शेयर बेचना चाहिए, इस बारे में अपना एक बेहतर POINT OF VIEW को हम अमल में लाकर, शेयर बाजार के

जोखिमों को नियंत्रित कर, LOSS को कम करके लाभ को बढ़ाया जा सकता है,

और इन उपायों के नाम हैं – **FUNDAMENTAL ANALYSIS** और **TECHNICAL ANALYSIS**

आइये, अब बात करते हैं –

TECHNICAL ANALYSIS के बारे में

जब हम किसी कंपनी का शेयर सिर्फ इस आधार पर देखते हैं, कि उसके भाव कब कब बढ़ जाते हैं और कब कब कम हो जाते हैं, और इस बात पर जोर नहीं दिया जाता कि कंपनी और उसके लाभ कमाने कि क्षमता कितनी STRONG है, यानी जब सिर्फ शेयर के PAST PERFORMANCE को ध्यान में रखा जाता है तो इस तरह कि BUYING या SELLING को हम TECHNICAL ANALYSIS के आधार पर खरीदना और बेचना कहते हैं,

और इस तरह हम कह सकते हैं कि, FUNDAMENTAL ANALYSIS और **TECHNICAL ANALYSIS** आधार पर ही आप अच्छे तरीके से किसी शेयर के FUTURE PERFORMANCE का एक अनुमान बता सकते हैं,

इस सन्दर्भ में **TECHNICAL ANALYSIS**, शेयर्स के खरीदने का मूल्य, खरीदने का समय, कितना खरीदना और कब बेचना, कितना बेचना, कितने भाव में बेचना, स्टॉप लोस लगाना आदि के बारे में हमें बताता है,

और इसी लिए बड़े से बड़े INVESTOR भी FUNDAMENTAL ANALYSIS और TECHNICAL ANALYSIS कि मदद से मार्केट में हो रहे बदलाव और

शेयर्स के सौदों के बारे में बताते हैं कि हमें कब खरीदना और बेचना चाहिए ताकि ज्यादा से ज्यादा हम लाभ कमा सकें, तो आइए टेक्निकल एनालिसिस सीखना शुरू करते हैं –

Technical Analysis – Introduction

Technical Analysis – क्या है ?

Technical Analysis – क्या है ? आइए हम इसको एक CRICKET के EXAMPLE से समझते हैं,

अगर आप CRICKET में रुचि रखते हैं, तो आपको पता होगा कि, जब भी कोई खिलाड़ी किसी MATCH में खेलने जाता है, तो वो जिस टीम के खिलाफ या जिस मैदान पर खेल रहा होता है, तो वहां पर उसके पिछले RECORD और PERFORMANCE के बारे में ज़रुर बात की जाती है,

और ऐसी सम्भावना व्यक्त कि जाती है कि, क्योंकि वह खिलाड़ी उस टीम के खिलाफ या उस मैदान पर अच्छा खेलता है, तो हम ये संभावना व्यक्त करते हैं, कि वह खिलाड़ी आज भी कुछ वैसा ही PERFORMANCE करेगा और खेल दिखायेगा, जैसा उसने इस से पहले किया हुआ है,

और आपने **भारत और पाकिस्तान के बीच WORLD CUP** में खेले गए मैच के बारे में भी ज़रुर सुना होगा कि, **भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ अपने सभी मैच जीते हैं**,

और यही वजह है कि भारत और पाकिस्तान के बीच जब भी WORLD CUP के MATCH होते हैं, तो सभी CRICKET EXPERT इस बात को दोहराते हैं और सम्भावना व्यक्त करते हैं कि **इस बार भी भारत पाकिस्तान को ज़रुर हराएगा**,

हालाँकि ऐसा होना ज़रुरी नहीं है, कोई भी 100% नहीं कह सकता कि RESULT बिलकुल वैसा ही होगा, जैसा कि पिछले कई बार हुआ है,

लेकिन फिर इस बात पे जोर दिया जाता है, कि पिछली बार कि तरह इस बार भी मैच का RESULT कुछ ऐसा ही होगा,

और सच्चाई यही है कि फ़िलहाल तो ऐसा होता आया है,

और आपको भी ये बताने के बाद कि , **पाकिस्तान आज तक WORLD CUP में भारत से नहीं जीता है**, आपसे ये पूछा जाये कि जब अगली बार भारत और पाकिस्तान के बिच WORLD CUP का मैच होगा, **तो कौन जीतेगा ?**

तो आप भी जरुर कहेंगे, वैसे तो CRICKET अनिश्चिताओं का खेल है, लेकिन फिर भी **भारत के जितने कि सम्भावना ज्यादा है**,

और अब आपको अगर इस मैच पे दाव लगाने को कहा जाये कि कौन जीतेगा ?, तो निश्चित ही आपमें से ज्यादातर लोग भारत के सभी पिछले मैच और PERFORMANCE के आधार पर यही कहेंगे कि – इस बार भी **भारत जरुर जीतेगा**, और आप भारत पर दाव लगायेंगे.

अगर हम ध्यान से देखे तो, जाने या अनजाने में, हम इस तरह के दाव लगाने के समय, **TECHNICAL ANALYSIS** के आधार पर ही सम्भावना कर रहे है कि, **भारत जीतेगा**.

क्योंकि TECHNICAL ANALYSIS का पूरा CONCEPT यही है, “इतिहास अपने आपको दोहराता है” “HISTORY REPEATS ITSELF”

बिल्कुल इसी तरह, शेयर बाजार में भी जब किसी STOCK को खरीदने या बेचने कि बात आती है, यानी जब किसी शेयर पर दाव लगाने की बात आती है,

तो अगर हम उस SHARE के **PERFORMANCE HISTORY** के आधार पर एक चार्ट के द्वारा ये पता लगाते हैं कि शेयर्स का भाव , अलग अलग कंडीशन में क्या रहा है, और ट्रेंड को देखते हुए, अब यहाँ शेयर्स के भाव कहा जा सकते हैं, कितना ऊपर या कितना निचे, तो इस तरह कि STUDY को **TECHNICAL ANALYSIS** कहा जाता है,

निष्कर्ष – टेक्निकल एनालिसिस

TECHNICAL ANALYSIS कि मदद से हम ये जान सकते हैं कि, हमें मार्केट कब ENTRY यानी सौदा लेना चाहिए, और कब EXIT यानी सौदे को पूरा करना चाहिए,

इस तरह हम TECHNICAL ANALYSIS कि मदद से उस चीज़ से बच पाते हैं, जिसकी वजह से 90 % लोग LOSS करते हैं, और TECHNICAL ANALYSIS की मदद से हमें ये समझ आता है कि हम

शेयर्स कब खरीदे ?

- शेयर्स किस भाव में खरीदे ?
- शेयर्स कितना खरीदे?
- शेयर्स कब बेचे ?
- शेयर्स किस भाव में बेचे ?
- शेयर्स कितना बेचे ?
- और LOSS की स्थिति में अपने LOSS को कैसे नियंत्रित करे ?

TECHNICAL ANALYSIS के फायदे

अगर बात कि जाये Technical Analysis के बारे में तो मार्केट में हर कोई जो लोग PARTICIPATE करते हैं, वो लोग Technical Analysis को अलग अलग तरह से इस्तेमाल करते हैं, कुछ लोग इस से जल्द से जल्द पैसा बनाने वाले उपाय के बारे में देखते हैं, जो कि काफी हद तक संभव है

लोग Technical Analysis को अलग अलग तरह से इस्तेमाल करते हैं, कुछ लोग इस से जल्द से जल्द पैसा बनाने वाले उपाय के बारे में देखते हैं, जो कि काफी हद तक संभव है, लेकिन उसके लिए आपको Technical Analysis को बहुत अच्छी तरह से समझना, और उसे implement करते आना चाहिए,

और कुछ लोग ज्यादा से ज्यादा पैसे बनाने के लिए भी Technical Analysis का सहारा लेते हैं,

यहाँ एक बार फिर कहना होगा कि Technical Analysis बहुत अच्छा Tools है, शेयर मार्केट के दिशा को समझने, और सौदों को कन्फर्म करने के लिए, लेकिन इसके लिए आपको Technical Analysis का सही तरह से ज्ञान और Implement करते आना चाहिए –

आइये Technical Analysis के कुछ फ़ायदों और सीमाओं पे नजर डाले –

TECHNICAL ANALYSIS से होने वाले फायदे और सीमाए

1. SHORT TERM TRADES : Technical Analysis का उपयोग SHORT TERM TRADES की पहचान करने के लिए किया जाता है, LONG TERM TRADE के बारे में जानने के लिए Technical Analysis का उपयोग नहीं करना चाहिए, LONG TERM TRADER के लिए Fundamental Analysis ज्यादा बेहतर है,

हालाँकि एक अच्छा निवेशक एक लॉन्ग टर्म ट्रेड के लिए Fundamental Analysis के साथ साथ मार्केट में Entry और Exit के लिए Technical Analysis का भी इस्तेमाल करेगा.

2. RETURN ON PER TRADE : Technical Analysis आधारित ट्रेडों में आमतौर पर ज्यादा लाभ कि अपेक्षा नहीं करनी चाहिए, बल्कि Technical Analysis का इस्तेमाल करके छोटे छोटे फायदे उठाते रहना चाहिए.

3. HOLDING PERIOD : Technical Analysis के आधार पर किये जाने वाले Trades कि समय सीमा 1 मिनट से लेकर कुछ हफ्तों तक कि हो सकती है, और कम टाइम फ्रेम में Technical Analysis अच्छा काम करता है

4. RISK जोखिम : Technical Analysis के आधार पर किये जाने वाले trades अगर loss कि स्थिति आये तो Loss बुक करना जरुरी हो जाता है, क्योंकि ऐसा नहीं करने पर यह तकनीक के खिलाफ होगा और स्थिती ऐसे और ज्यादा ख़राब हो सकती है अगर स्टॉप loss न लगाया जाये..

इस तरह आप समझ सकते हैं कि Technical Analysis का हम किस तरह से लाभ उठा सकते हैं, और Technical Analysis की मदद से हम कैसे बेहतर सौदे कर सकते हैं.

TECHNICAL ANALYSIS की सबसे बड़ी विशेषता



टेक्निकल अनलिसिस कि बहुउपयोगिता

(VERSATILE USE OF TECHNICAL ANALYSIS)

दोस्तों, आज हम बात करेंगे VERSATILE USE OF TECHNICAL ANALYSIS के बारे में,

TECHNICAL ANALYSIS सीखने और समझने का सबसे बड़ा फायदा ये है कि आप इसका इस्तेमाल, किसी भी ASSET CLASS कि study में कर सकते हैं, अगर उस ASSET CLASS का आपके पास HISTORICAL TIME SERIES DATA है, जैसे- TECHNICAL ANALYSIS का इस्तेमाल आप सिर्फ STOCK MARKET में SHARE की STUDY में नहीं, बल्कि ASSET के अन्य CLASS जैसे COMMODITIES, FOREIGN EXCHANGE, FIXED

INCOME, और भी बहुत जगह आप अपने फायदे के अनुसार इस्तेमाल कर सकते हैं,

यहाँ HISTORICAL TIME SERIES DATA से मतलब ये है कि, आपके पास उस ASSET CLASS का टाइम के अनुसार PRICE में CHANGE और एक REGULAR INTERVAL का DATA उपलब्ध हो, जैसे – DAILY, WEEKLY, MONTHLY और OPEN, CLOSE, LOW, HIGH, दोस्तों,

FUNDAMENTAL ANALYSIS और TECHNICAL ANALYSIS

इस तरह अगर आप TECHNICAL ANALYSIS को FUNDAMENTAL ANALYSIS से COMAPRE करते हैं, तो TECHNICAL ANALYSIS का सबसे बड़ा फायदा ये दिखता है कि, आप इसका इस्तेमाल न सिर्फ़ स्टॉक मार्केट में study कर सकते हैं, बल्कि SAME RULES का इस्तेमाल आप दूसरे ASSET CLASS की STUDY करके आप लाभ उठा सकते हैं,

इस तरह आप अगर TECHNICAL ANALYSIS सीखते हैं, तो न सिर्फ़ स्टॉक मार्केट बल्कि COMMODITIES MARKET, FOREX MARKET में यही RULES APPLY करके अपने लिए लाभ का मौका खोज सकते हैं,

TECHNICAL ANALYSIS सीखना बिल्कुल इस तरह है कि अगर आप कोई एक BIKE चलाना सिख जाते हैं, तो आप लगभग हर तरह कि BIKE आराम से चला सकते हैं,

जबकि अगर FUNDAMENTAL ANALYSIS सीखने और implement करने कि बात कि जाये तो, FUNDAMENTAL ANALYSIS सभी ASSET CLASS में अलग अलग हो जाती है, जैसे – STOCK MARKET के FUNDAMENTAL ANALYSIS की तुलना में COMMODITIES MARKET और FOREIGN EXCHANGE का FUNDAMENTAL ANALYSIS बिल्कुल अलग अलग है,

यहाँ आपको अलग अलग ASSET CLASS के अनुसार अलग अलग तरह STUDIES करनी पड़ती है, VERSATILITY OF TECHNICAL ANALYSIS

इस तरह आप समझ सकते हैं कि TECHNICAL ANALYSIS सीखना हमारे लिए कितना फ़ायदेमंद है, एक तकनीक सीख-कर आप उसका इस्तेमाल कितनी ही जगह जगह कर सकते हैं, और फायदा उठा सकें हैं,

इसी कारण TECHNICAL ANALYSIS को एक VERSATILE STUDY कहा जाता है, जो इसे और दिलचस्प और मजेदार SUBJECT बनता है,

ASSUMPTION IN TECHNICAL ANALYSIS (TECHNICAL ANALYSIS की अवधारणा)

स्टोक मार्केट में कुछ Technical Analysis Assumption हैं जो इसके आधार हैं, और Technical Analysis के इन Assumption को समझना बहुत जरुरी हो जाता है, अगर बात की जाये की Technical Analysis आखिर का क्या आधार है,

तो Technical Analysis पूरी तरह STOCK के पिछले PRICE DATA पर आधारित है, और आज हम उसी BASE यानी Technical Analysis के पीछे कि अवधारणा के बारे में बात करेंगे,

Technical Analysis का इस बात से कोई लेना देना नहीं है, किसी STOCK का मूल्य उसके BOOK VALUE से बहुत ज्यादा है, या बहुत कम है, यानी STOCK OVERVALUED है या UNDERVALUED,

Technical Analysis पूरी तरह STOCK कि पिछले PRICE DATA की STUDY करने पर आगे STOCK का PRICE कहा जा सकता है, पिछले PRICE DATA के आधार पर STOCK का PRICE बढ़ेगा या घटेगा, पूरी तरह से सिर्फ इसी बात कि संभावना को व्यक्त करता है,

और अगर हम बात करे कि Technical Analysis किस बात पर आधारित है, तो हमें ये याद रखना चाहिए कि Technical Analysis Study नीचे बताये गए चार तथ्यों पर आधारित है, जिसे हम Technical Analysis का ASSUMPTION कहते हैं,

- 1) Markets discount everything
- 2) The ‘how’ is more important than ‘why’
- 3) Price moves in trend
- 4) History tends to repeat itself

आइये आगे हम इन अवधारणा यानी Technical Analysis के ASSUMPTIONS के बारे में DETAILS में बात करते हैं-

1) MARKETS DISCOUNT EVERYTHING -

दोस्तों, Technical Analysis की इस अवधारणा के अनुसार किसी STOCK का PRICE उन सभी बातों से प्रभावित होता है जो उस STOCK से RELATED होती है, भले ही किसी को कुछ पता हो या नहीं , मार्केट में शेयर का भाव, उस STOCK से जुड़ी बहुत सारी बातों को STOCK अपने PRICE में हो रहे CHANGES के द्वारा बताता रहता है,

जैसे- किसी कम्पनी के एक खास आदमी को कंपनी के किसी ऐसे CONTRACT के बारे में पता चलता है, जिस से कंपनी को फायदा होने वाला है, तो वह इस बात का फायदा उठाने के लिए चुपचाप कंपनी के SHARES को बड़ी मात्रा में खरीदेगा, ताकि जैसे ही उस CONTRACT के बारे में लोगों को NEWS द्वारा पता चलेगा, तो लोग उस SHARES को खरीदेंगे, और इस तरह DEMAND बढ़ने से SHARE का PRICE बढ़ेगा और वह आदमी उस वक्त अपने शेयर को बेच कर लाभ कमा सके,

तो जैसे ही वह बड़ी QUANTITY में SHARES खरीदेगा, तो उस कि इस ACTIVITY से SHARE के PRICE में तुरंत CHANGES आने लगेंगे, और इस तरह एक Technical

Analyst इस तथ्य को पहचान लेगा, और वो भी इस मौके का फायदा उठा सकता है।

इस तरह यह इस अवधारणा को स्पष्ट करता है, SHARES का PRICE सब कुछ कहता है, उसे बस समझने कि जरुरत होती है,

2) THE ‘HOW’ IS MORE IMPORTANT THAN ‘WHY’

स्टॉक मार्केट कि इस अवधारणा के अनुसार, Technical Analysis में इस बात पे जोर दिया जाता कि STOCK का PRICE “कैसे” कम या ज्यादा हो रहा है, और आने वाले समय में ये किस तरह और कम या ज्यादा हो सकता है, ताकि अवसर देख कर लाभ उठाया जा सके,

ना कि इस बात को समझने कि स्टॉक का PRICE “क्यों” कम या ज्यादा हो रहा है, और आने वाले समय में क्यों कम या ज्यादा होगा।

इसलिए कहा जाता है – कि “Technical Analysis में HOW ज्यादा महत्पूर्ण है, ना कि WHY”

अगर बात कि जाये ऊपर वाले EXAMPLE कि तो यहाँ एक Technical Analyst इस बात कि STUDY करेगा कि, STOCK का PRICE कैसे ऊपर या नीचे जा रहा है, और इस तरह उस STOCK के आने वाले समय में ऊपर या नीचे जाने कि क्या सम्भावना है,

दूसरी तरफ वह यह इस बात का पता लगाएगा यानी वह यह नहीं पूछेगा कि “ स्टॉक का PRICE क्यों बढ़ रहा है”

3) PRICE MOVES IN TREND

स्टॉक मार्केट कि इस अवधारणा के अनुसार, Technical Analysis इस बात पे आधारित है कि STOCK हमेशा TREND को FOLLOW करता है, और इसलिए जब मार्केट में एक TREND बन जाता है तो STOCK उस TREND को FOLLOW करता है,

Trend का मतलब एक ऐसा पैटर्न, जो किसी एक दिशा की ओर जाता है , जैसे या तो Trend ऊपर जाएगा, या Trend नीचे जाएगा, या फिर एक Price Range में ही ऊपर नीचे होता रहेगा,

Trend तीन तरह का होता है,

- 1) Trend जब ऊपर जाता है तो उसे UP Trend कहा जाता है,
- 2) Trend जब नीचे जाता है तो उसे Down Trend कहा जाता है ,
- 3) Trend जब ज्यादा ऊपर या ज्यादा नीचे नहीं जाके, सिर्फ एक छोटे Price Change के Range में तो उसे Sideways Trend कहा जाता है .

Technical Analysis के मूल तत्व

दोस्तों, अगर बात कि जाये Technical Analysis के लिए सबसे जरूरी क्या है, जो हमारे पास होनी ही चाहिए, और उसके बगैर हम Technical Analysis नहीं कर सकते,

यानी Technical Analysis का मूल तत्व (Basic Elements) क्या है, जैसे अगर हम कोई सब्जी पकाने जाते हैं, तो हमें सबसे जरूरी चीज़ जैसे तेल, नमक, मसाला, आदि कि जरुरत होती है, और इसके बगैर सब्जी का स्वाद नहीं आता,

वैसे ही Technical Analysis के लिए जो सबसे जरूरी चीज़ है वो है – Time Series (डेली, वीक-ली, etc.) और Price Data (Price & Volume)

अब हम इन दोनों तत्वों के बारे में थोड़े Detail में बात करते हैं-

टाइम सीरीज (TIME SERIES)

दोस्तों, जैसा कि आप जानते हैं, INDIAN SHARE MARKET सोमवार से शुक्रवार सुबह 9:15 पे OPEN होता है, और दोपहर 3:30 बजे बंद होता है,

और इस बीच कोई एक शेयर को लाखों लोग खरीदते और लाखों लोग अलग अलग PRICE पे लाखों कि मात्रा बेचते हैं,

ऐसे में हर Second में हजारों शेयर खरीदे और बेचे जाते हैं, और इस तरह हम सभी के सभी सौदों पे नजर नहीं रख सकते,

इस लिए किसी Share के Price Movment को समझने के लिए हमें सबसे पहले एक समय यानी TIME को FIX करना होता है, इस हम टाइम फ्रेम भी कहते हैं,

Technical Analysis में इस्तेमाल होने वाला टाइम फ्रेम –

हर मिनट में होने वाला ट्रेड

हर पांच मिनट में होने वाला ट्रेड

हर दस मिनट में होने वाला ट्रेड

हर पंद्रह मिनट में होने वाला ट्रेड

हर आधे घंटे में होने वाला ट्रेड

हर घंटे में होने वाला ट्रेड

हर दिन होने वाले घंटे में ट्रेड

हर WEEK होने वाला ट्रेड

हर MONTH होने वाला ट्रेड

हर साल होने वाला ट्रेड.....

हमारे पास TIME का DATA इस तरह से होना चाहिए कि हम सभी ट्रेड को एक नजर में समझ सके और इन TIME FRAME में उसे DIVIDE कर सके,

Technical Analysis करने के लिए हमें सबसे पहले TIME FRAME को निर्धारित करना होता है, कि हम किस TIME FRAME के बीच काम करना चाहते हैं, 1 मिनट, 5 मिनट, या जो भी,

एक बार जब हम DECIDE कर लेते हैं कि हमें किस TIME FRAME में काम करना है, सौदा लेना है, तो फिर हम उसी TIME FRAME में उस SHARE के पिछले DATA को

देखते हैं, और कुछ MATHEMATICAL CALCULATION करते हैं, कि इस TIME FRAME में पहले क्या क्या PRICE CHANGE हुए हैं।

अब आइये दुसरे तत्व यानी PRICE DATA की बात करते हैं।

PRICE DATA (PRICE & VOLUME)

Technical Analysis किसी भी STOCK के PRICE में होने वाले FUTURE बदलाव को समझने के लिए किया जाता है, जिस से ये पता लगाया जा सके कि, STOCK का PRICE किस दिशा में जायेगा, ऊपर या नीचे,

इसलिए STOCK का PRICE DATA भी बहुत ही महत्वपूर्ण है,

शेयर के PRICE DATA में दो बातें महत्वपूर्ण हैं

1) शेयर का किसी PARTICULAR टाइम फ्रेम में OPEN PRICE, और CLOSING PRICE तथा LOWEST (LOW) PRICE और HIGHEST(HIGH) PRICE.

2) शेयर का किसी PARTICULAR टाइम फ्रेम में OPEN PRICE, और CLOSING PRICE तथा LOWEST (LOW) PRICE और HIGHEST(HIGH) PRICE के साथ साथ उसका VOLUME यानी उस टाइम फ्रेम में कुल खरीदे और बेचे जाने वाले शेयर कि कुल मात्रा,

आप समझ पाए होंगे कि Technical Analysis का सबसे मूल तत्व क्या है, इसी दो मूल तत्वों के आधार पर Technical

Analysis के लिए हम किसी भी TIME FRAME के बीच HONE वाले हजारों, सौदों को हम एक SUMMARIZE करके एक नजर में ये समझ पाते हैं – कि उस TIME FRAME में SHARE का PRICE RANGE क्या था और कितना था. आप समझ पाए होंगे कि Technical Analysis का सबसे मूल तत्व क्या है, इसी दो मूल तत्वों के आधार पर Technical Analysis के लिए हम किसी भी TIME FRAME के बीच HONE वाले हजारों, सौदों को हम एक SUMMARIZE करके एक नजर में ये समझ पाते हैं – कि उस TIME FRAME में SHARE का PRICE RANGE क्या था और कितना था.

TECHNICAL ANALYSIS CHART TYPE

Technical Analysis chart में बहुत सारे Data को एक साथ Process करके कुछ Mathematical Calculation किये जाते हैं, और उसके Base पे हम Future Price का निष्कर्ष निकलते हैं,

और एक साथ बहुत सारे Data को आसानी से देखने और समझने के लिए, Technical analysis में चार्ट का इस्तेमाल किया जाता है,

Technical Analysis में तीन तरह की चार्ट का इस्तेमाल किया जाता है,

- 1) **लाइन चार्ट (Line Chart)**
- 2) **बार चार्ट (Bar Chart)**
- 3) **कैंडिलिस्टिक चार्ट (Candlestick Chart)**

आइए अब हम इन तीनों चारों के बारे में विस्तार से देखते हैं,

लाइन चार्ट (LINE CHART)- TECHNICAL ANALYSIS CHART TYPE

लाइन चार्ट में किसी भी टाइम फ्रेम के मुताबिक, उस टाइम फ्रेम के एक एक क्लोजिंग प्राइस को मिलाकर लाइन खींचते हैं, और इस तरह हमारा चार्ट बन जाता है,

अगर इस तरह अगर हम कोई चार्ट बनाते हैं तो वह नीचे दिए गए पिक्चर के जैसा चार्ट बन जाएगा,

इस तरह के Line Chart से हमें एक नजर में stock का टेंडर तो समझ मे आ जाता है, लेकिन ये सिर्फ closing price को cover करता है, ये OPEN, High, और Low इन तीनों price

point को नजरअंदाज कर देता है ,जिस से इसकी विश्वसनीयता कम हो जाती है,

और ये हमें किसी Future Price के बारे में नहीं बात पाता,

इस कारण Technical Analysis के लिए Line Chart का बिल्कुल न के बराबर इस्तेमाल किया जाता है,

बार चार्ट (BAR CHART)- TECHNICAL ANALYSIS CHART TYPE

Line Chart की अपेक्षा Bar Chart अधिक लाभकारी जानकारी प्रदान करता है,

Bar Chart में किसी Stock Price के चारो Point यानी Open, Close, और Low और High, सभी पॉइंट्स को Cover हो जाते हैं, इसलिए इस से ज्यादा अच्छी तरह से हम Stock का Price Analysis कर सकते हैं,

बार chart में तीन भाग होते हैं

- 1) Central Line (बीच की रेखा)
- 2) Right Line (दायी रेखा)
- 3) Left Line (बाँयी रेखा)

जहां Central Line किसी Stock के Low और High को दिखाता है, जबकि Left Side Line किसी Stock के Open Price को दिखाता है, जबकि Right Side Line किसी Stock के Closing Price को दिखाता है,

Line Chart की अपेक्षा Bar Chart बेहतर है, और कुछ ट्रेडर इसका इस्तेमाल करते हैं,

लेकिन फिर भी Technical Analysis में इसका इस्तेमाल बहुत कम किया जाता है, क्योंकि एक साथ अगर किसी ज्यादा समय के Data को अगर चार्ट में Show किया जाए तो एक नए Trader के लिए इसको समझना मुश्किल हो जाता है,

और यह बहुत कॉम्प्लिकेटेड लगता है, और Volume Point को cover नहीं करता

इस कारण जब कैंडिलिस्टिक चार्ट के रूप में इस से बेहतर विकल्प उपलब्ध होने के कारण Bar Chart का भी इस्तेमाल बहुत कम किया जाता है,

कैंडिलिस्टिक चार्ट(CANDLESTICK CHART) – TECHNICAL ANALYSIS CHART TYPE’]

कैंडिलिस्टिक चार्ट , Technical Analysis के लिए इस्तेमाल होने सबसे ज्यादा Popular Chart विकल्प है,

कैंडिलिस्टिक चार्ट , Line Chart और Bar Chart की कमियों को दूर करने के साथ साथ , एक बहुत ही Advanced Level तक का information साफ और सुंदर तरीके से उपलब्ध कराता है.

TECHNICAL ANALYSIS TREND

TECHNICAL ANALYSIS में ‘TREND’ का मतलब है, CANDLES या STOCK PRICE POINT को जोड़ने से बनने वाला DIRECTION –(दिशा)

यह TECHNICAL ANALYSIS में सबसे महत्वपूर्ण CONCEPTS अवधारणाओं में से एक है। और हम TECHNICAL ANALYSIS में इसी ट्रेंड्स को समझने का प्रयास करते हैं।

ट्रेंड के बारे में ऐसा माना जाता है, कि जो भी ट्रेंड्स बना हुआ है, वो आगे भी बना रहेगा, जब तक कि कोई दूसरा ट्रेंड न आये,

यानी अगर कोई STOCK UP TREND LINE दिखा रहा है, मतलब वो कुछ समय और हो सकता है UPTREND यानी (तेजी) बना रहेगा,

यानी अगर कोई STOCK DOWN TREND LINE दिखा रहा है, मतलब वो कुछ समय तक हो सकता है DOWNTREND (मंदी) में रहेगा, और BULLISH बना रहेगा।

अगर सीधा सीधा कहा जाये तो मार्केट में, तेजी और मंदी को एक नजर में समझने के लिए हम ट्रेंड लाइन का इस्तेमाल करते हैं।

TRENDS LINE क्या होता है ?

एक चार्ट पे किसी STOCK के PRICE को उसके TIME FRAME के अनुसार उसके अलग अलग PRICE POINT

को मिलाते हुए एक लाइन खिंची जाती है, इसी लाइन को STOCK की ट्रेंड लाइन कहते हैं।

ट्रेंड लाइन के प्रकार –

पुरे TECHNICAL ANALYSIS में ट्रेंड लाइन तीन प्रकार की होती है,

1) UP TREND LINE

जब TREND LINE ऊपर की तरफ जाये तो कह सकते हैं कि STOCK , UP TREND कहते हैं

अप ट्रेंड को बुलिश ट्रेंड (तेजी का दौर) भी कहा जाता है,

2) DOWN TREND LINE

जब ट्रेंड लाइन नीचे की तरफ जाये तो कह सकते हैं कि STOCK , डाउन ट्रेंड में है ,डाउन ट्रेंड को बिअरिश ट्रेंड (मंदी का दौर) भी कहा जाता है।

3) SIDEWAYS TREND LINE

जब TREND LINE ना ऊपर जाये और ना ही नीचे, बल्कि सीधी लाइन बन जाये तो इस तरह कि TREND LINE को SIDEWAYS ट्रेंड (करेक्शन, CORRECTION)भी कहते हैं,

TIMES OF TRENDS- TRENDS कितने समय के लिए होता है,

अगर बात की जाये कि, कोई TREND कितने समय के लिए होता है, तो हमें एक चीज़ समझनी चाहिए कि, इसका कोई निश्चितता नहीं है कि TREND कितने समय के लिए बना रहेगा,

उतार चढ़ाव तो लगे ही रहते हैं, और कोई भी TREND उस STOCK से जुड़ी किसी खास बात से कभी भी टूट सकता है, वो खास बात कुछ भी सकता है, जो लोगों को लगता है कि उस NEWS का उस कंपनी के STOCK पर प्रभाव रहेगा.

अगर जो ट्रेंड पहले से बना हुआ है, उसकी बात की जाये तो हम ट्रेंड को तीन भाग में बाट सकते हैं,

1) SHORT TERMS TRENDS

अगर किसी स्टॉक का ट्रेंड एक महीने या उस से कम समय के लिए बना हुआ है, तो इस तरह के ट्रेंड को SHORT TERM TREND कहते हैं। इस तरह के शॉर्ट टर्म ट्रेंड कि पहचान करने के लिए आपको कुछ महीनों यानी पिछले 2 से 3 महीने का चार्ट देखना पड़ता है।

2) MEDIUM TERM TRENDS

अगर किसी स्टॉक का ट्रेंड एक महीने से ज्यादा और लगभग एक साल तक के लिए बना हुआ है, तो इस तरह के ट्रेंड को MEDIUM TERM TREND कहते हैं। इस तरह के MEDIUM TERM TRENDS कि पहचान करने के लिए आपको पिछले 2 से 3 साल का चार्ट देखना पड़ता है।

3) LONG TERM TRENDS –

अगर किसी स्टॉक का ट्रेंड एक साल या उस भी ज्यादा समय के लिए बना हुआ है, तो इस तरह के ट्रेंड को LONG TERM TREND कहते हैं।

इस तरह के LONG TERM TRENDS कि पहचान करने के लिए आपको पिछले 2 साल से अधिक का चार्ट देखना पड़ता है।

Candlestick chart and Patter

CANDLESTICK CHART AND PATTERNS

Candlestick chart analysis में Candle की मदद से Trading patterns को identify किया जाता है,

और इस Candlestick patterns की मदद से Technical Analyst कोई भी Trade कर सकता है,

CANDLESTICK PATTERNS क्या होता है ?

Candlestick patterns, कुछ खास बनावट वाले Single Candle और दो या दो से अधिक Candle के द्वारा बनने वाले Trading Pattern होते हैं,

जो Traders द्वारा बार बार Repeat की जाने वाली trading patterns के ऊपर आधारित होता है,

CANDLESTICK PATTERNS के फायदे

Candlestick patterns कि मदद से Trader किसी trade से

मतलब हम Candlestick patterns मार्केट में एक Trading का signal देता है, और इसके अलावा Candlestick patterns कि सबसे खास बात ये होती है, कि हम इसके आधार पर अगर कोई Trade लेते हैं, तो Risk Management भी उसी Candle कि मदद से किया जा सकता है, आपको कहा stop loss लगाना है, ये बहुत आसानी से हर Candle patterns में साफ़ साफ़ समझ आ जाता है.

CANDLESTICK PATTERNS के प्रकार

Candlestick patterns दो तरह के होते हैं,

- 1) **Single candlestick pattern** – जो सिर्फ़ एक Candle द्वारा बनते हैं,
- 2) **Multiple candlestick patterns**– जो दो या दो से अधिक Candle द्वारा बनते हैं,

SINGLE CANDLESTICK PATTERN और उसके प्रकार –

Single candlestick pattern यानी एक Candle की मदद से बनने वाला candlestick pattern होता है, इस तरह के patterns में केवल एक single Candle ही trading कि आगे कि दिशा यानी Trend को बताता है,

SINGLE CANDLESTICK PATTERN के अंतर्गत आने वाले CANDLES हैं,

- 1) MARUBOZU – (मारुबोजु)
- 2) Bullish Marubozu (बुलिश मारुबोजु)
- 3) Bearish Marubozu (बीअरिश मारुबोजु)
- 4) Spinning Top (स्पिनिंग टॉप)
- 5) Doji (डोजी)
- 6) Paper Umbrella (पेपर अम्ब्रेला)
- 7) Hammer (हैमर)
- 8) Hanging Man (हैंगिंग मैन)
- 9) Shooting Star (शूटिंग स्टार)

MULTIPLE CANDLESTICK PATTERN-और उसके प्रकार

Multiple candlestick pattern दो या दो से अधिक Candles की मदद से बनने वाला candlestick pattern होता है, इस तरह के Patterns में कुछ Candle को एक साथ संबंधित होते हैं और वो मिलकर Trading की आगे कि दिशा यानी Trend को बताते हैं,

Multiple candlestick pattern के अंतर्गत आने वाले Candles patterns हैं,

- 1) ENGULFING PATTERN (इनलाफिंग पैटर्न)
- 2) BULLISH ENGULFING (बुलिश इनाल्फिंग पैटर्न)
- 3) BEARISH ENGULFING (बीअरिश इनाल्फिंग पैटर्न)
- 4) HARAMI Patterns(हरामी पैटर्न)
- 5) BULLISH HARAMI (बुलिश हरामी)
- 6) BEARISH HARAMI (बीअरिश हरामी)
- 7) PIERCING PATTERN (पिअर्शिंग पैटर्न)
- 8) DARK CLOUD COVER (डार्क क्लाउड कवर)
- 9) MORNING STAR (मोर्निंग स्टार)
- 10) EVENING STAR (इवनिंग स्टार)

अगर आप इन नामों को पढ़ कर कुछ सोच रहे हैं कि, ये ऐसा क्यों हैं, तो आपको बता दे कि Candlestick chart analysis एक जापानी analysis तकनीक है, और ये सभी नाम जापानी नाम हैं.

TECHNICAL ANALYSIS- MARUBOZU

MARUBOZU एक Single candlestick पैटर्न का पहला और एक बहुत IMPORTANT candlestick पैटर्न है,

मारुबुजो के फायदे -

मारुबुजो का सबसे बड़ा फायदा ये है कि, मारुबुजो पैटर्न से, मार्केट में किसी स्टॉक के परफॉरमेंस के बारे में, हमें एक TREND का पता चलता है,

MARUBOZU से मार्केट के TREND का बहुत सही तरह से पता लगाया जा सकता है, कि मार्केट ऊपर जायेगा या नीचे, बस हमें सही तरह से मारुबुजो कैंडल पहचान करना आना चाहिए.

मारुबुजो की पहचान –

- 1) मारुबुजो चार्ट में कही भी आ सकता है,
- 2) मारुबुजो बनने से पहले क्या TREND था, यानी पिछला TREND महत्वपूर्ण नहीं होता,
- 3) मारुबुजो कि पहचान ये है कि, मारुबुजो कैंडल की सिर्फ REAL BODY होती है,
- 4) उसका LOW (LOWER SHADOW) या HIGH (UPPER SHADOW) नहीं होता, अगर बहुत थोड़ा LOWER SHADOW या UPPER SHADOW है, तो भी उसे MARUBOZU कह सकते हैं.

MARUBOZU CANDLE दो प्रकार के होते हैं,

1. बुलिश मारुबुजो

जब CANDLE का COLOR, BULLISH यानी BLUE या GREEN है, तो वैसे MARUBOZU को हम BULLISH

**मारुबुजो CANDLE कहते हैं,
अगर चार्ट में BULLISH MARUBOZU बनता है, तो
इसका क्या मतलब निकलता है ?**

अगर चार्ट में MARUBOZU BULLISH CANDLE है तो इसका मतलब है, तो इसका मतलब जिस TIME FRAME में MARUBOZU candle बना है, उस TRADING SESSION में सभी खरीदने वाले यानी BULLS का जोरदार प्रभाव रहा है, और शेयर के खरीद दर, जिस भाव पे शेयर बिक रहा है, उसे खरीद रहे हैं,

बीअरिश मारुबुजो

जब CANDLE का COLOR, BEARISH यानी RED हो , तो वैसे मारुबुजो को हम BEARISH MARUBOZU CANDLE कहते हैं,

**अगर CHART में MARUBOZU CANDLE बनता है,
तो इसका क्या मतलब निकलता है ?**

अगर मारुबुजो BEARISH CANDLE है तो इसका मतलब है , जिस TIME FRAME में मारुबुजो कैंडल बना है, उस TRADING SESSION में सभी बेचने वाले यानी BEARS का जोरदार प्रभाव रहा है, और शेयर जिस भाव पे बिक सकता है लोग उसे उस भाव पे लोग उसे बेच रहे हैं,

मारुबुजो कैंडल पैटर्न के ऊपर हमारा ACTION PLAN

बुलिश मारुबुजो के ऊपर ट्रेड

1. अगर BULLISH मारुबुजो है, इसका मतलब मार्केट ऊपर जाने का संकेत दे रहा है, और इसलिए हमें Stock को Buy करना चाहिए. और अपनी पोजीशन Long होनी चाहिए.

2.BUY PRICE – BULLISH मारुबुजो CANDLE के CLOSING PRICE के आस पास

3.STOP LOSS – BULLISH मारुबुजो CANDLE के LOW PRICE के आस पास

बीअरिश मारुबुजो के ऊपर ट्रेड

अगर BEARISH मारुबुजो है, इसका मतलब मार्केट ऊपर नीचे जाने का संकेत दे रहा है, और इसलिए हमें Stock को SELL करना चाहिए. और अपनी पोजीश SHORT की होनी चाहिए.

SELL PRICE – BEARISH मारुबुजो CANDLE के CLOSING PRICE के आस पास

STOP LOSS – BEARISH मारुबुजो CANDLE के HIGH PRICE के आस पास

NOTES : अगर आप किसी भी CANDLESTICK PATTERN के आधार पर ट्रेड लेते हैं, STOCK खरीदते हैं, या बेचते हैं, तो आपको अपने TARGET PRICE का इन्तेजार करना है, और अगर आपका STOP LOSS हिट होता है, तो आपको TRADE से Exit करके दुसरे TRADE में मौका ढूँढ़ना चाहिए,

अगर आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आप TECHNICAL ANALYSIS को फॉलो नहीं कर रहे हैं, आप कुछ और कर रहे हैं.

TECHNICAL ANALYSIS- SPINNING TOP

SPINNING TOP एक Single candlestick पैटर्न का बहुत IMPORTANT candlestick पैटर्न है,

स्पिनिंग टॉप के फायदे -

स्पिनिंग टॉप एक ऐसा CANDLESTICK पैटर्न है, जो मार्केट में आगे जो भी होने वाला है, वो स्पष्ट नहीं बताता, बल्कि ये हमें सावधानी के साथ आगे बढ़ने का सन्देश देता है, स्पिनिंग टॉप कैंडल आने के बाद मार्केट ऊपर भी जा सकता और नीचे भी, हमें अपने TRADE लेने से पहले स्पिनिंग टॉप दिखने पे सावधान रहना चाहिए,

स्पिनिंग टॉप कैंडल कैसे बनता है -

स्पिनिंग टॉप कैंडल तब बनता है जब किसी STOCK के OPENING PRICE और CLOSING PRICE में तो एक छोटा अंतर हो, लेकिन STOCK के LOW PRICE और HIGH PRICE में बहुत ज्यादा अंतर होता है,

स्पिनिंग टॉप की पहचान

- 1) स्पिनिंग टॉप बनने से पहले क्या TREND था, यानी पिछला TREND महत्वपूर्ण नहीं होता,
- 2) एक छोटा REAL BODY और LONG UPPER और LONG LOWER SHADOW से मिलकर बना होता है,
(स्पिनिंग टॉप का REAL BODY किसी शेयर के OPENING और CLOSING PRICE का RANGE होता है)
(स्पिनिंग टॉप का UPPER AND LOWER SHADOW

किसी शेयर के जो STOCK के WIDE RANGE PRICE MOVEMENT को बताता है)

3 स्पिनिंग टॉप कैंडल का COLOR उतना IMPORTANT नहीं होता है, IMPORTANT बस इतना है कि यह CANDLESTICK PATTERN मार्केट में INDESICON यानी अनिश्चितता को बताता है, कुछ भी हो सकता है, MARKET ऊपर भी जा सकता और निचे भी.

SPINNING TOP का प्रभाव –

आइये अब बात करते हैं कि स्पिनिंग टॉप का मार्केट में क्या प्रभाव होता है,

1) BULLISH TREND में स्पिनिंग टॉप का प्रभाव -

अगर स्पिनिंग टॉप BULLISH TREND में आता है, तो इसका दो प्रभाव हो सकता है, या तो थोड़े CORRECTION के बाद BULLISH TREND बना रहेगा,

या फिर हो सकता है स्पिनिंग टॉप के कारण MARKET का BULLISH TREND टूट जाये, और मार्केट निचे की तरफ जाये.

2) BEARISH TREND में स्पिनींग टॉप का प्रभाव -

अगर स्पिनिंग टॉप BEARISH TREND में आता है, तो इसका दो प्रभाव हो सकता है, या तो थोड़े CORRECTION के बाद BEARISH TREND बना रहेगा,

या फिर हो सकता है स्पिनिंग टॉप के कारण MARKET का BEARISH TREND टूट जाये, और मार्केट ऊपर की तरफ जा सकता है.

SPINNING TOP – इसके ऊपर TRADER ACTION PLAN

अगर सीधा सीधा कहा जाये तो स्पिनिंग टॉप जब दिखता है, तो हमें ये समझना चाहिए कि मार्किट में किसी TREND को निश्चित नहीं माना जा सकता,

यानी स्पीनिंग टॉप के बाद होने वाले मार्केट में उतार चढ़ाव के बारे में कोई CLARITY नहीं होती,

इसलिए एक TRADER को ऐसा करना चाहिए –

अगर वो TRADE लेना चाहता है, तो पूरी QUANTITY न लेके आधी QUANTITY में TRADE लिया जा सकता है.

MARKET में एक नए TREND के बनने तक का WAIT किया जा सकता है.

NOTES : अगर आप किसी भी CANDLESTICK PATTERN के आधार पर ट्रेड लेते हैं, STOCK खरीदते हैं, या बेचते हैं, तो आपको अपने TARGET PRICE का इन्तेजार करना है, और अगर आपका STOP LOSS हिट होता है, तो आपको TRADE से NIKALKAR दुसरे TRADE में मौका ढूँढ़ना चाहिए,
अगर आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आप TECHNICAL ANALYSIS को फॉलो नहीं कर रहे हैं, आप कुछ और कर रहे हैं.

TECHNICAL ANALYSIS- DOJİ

TECHNICAL ANALYSIS- DOJİ

DOJI एक Single candlestick पैटर्न का बहुत IMPORTANT candlestick पैटर्न है, जो न तो BULLISH TREND को कन्फर्म करता है, और ना ही BEARISH TREND को, बल्कि DOJİ एक स्पीड ब्रेकर के जैसा मार्केट में आगे बढ़ते समय थोड़ा रुक कर संभल कर आगे बढ़ने का MESSAGE देता है

DOJI (डोजी) के फायदे -

DOJI और SPINNING TOP CANDLE ये दोनों ऐसे SINGLE CANDLESTICK पैटर्न हैं, जिनका प्रभाव एक जैसा होता है, ये दोनों CANDLE मार्केट में अनिश्चितता को दर्शाते हैं, इसलिए हम कह सकते हैं कि डोजी एक ऐसा CANDLESTICK पैटर्न है, जो मार्केट में आगे जो भी होने वाला है, वो स्पस्ट नहीं बताता, बल्कि ये हमें सावधानी के साथ आगे बढ़ने का सन्देश देता है, डोजी कैंडल आने के बाद मार्केट ऊपर भी जा सकता और नीचे भी, हमें अपने TRADE लेने से पहले डोजी दिखने पे सावधान रहना चाहिए,

DOJI (डोजी) कैंडल कैसे बनता है -

डोजी कैंडल तब बनता है जब किसी STOCK के OPENING PRICE और CLOSING PRICE दोनों बराबर होता है या फिर एक न (.5% या उस से भी कम) के बराबर छोटा सा अंतर होता है, लेकिन STOCK के LOW PRICE और HIGH PRICE में बहुत ज्यादा अंतर होता है,

डोजी की पहचान -

1) डोजी बनने से पहले क्या TREND था, यानी पिछला TREND महत्वपूर्ण नहीं होता,

एक बहुत छोटा सा लाइन या एक बहुत ही छोटा न के बराबर REAL BODY और LONG UPPER और LONG LOWER SHADOW से मिलकर बना होता है,

(डोजी का एक लाइन जैसा REAL BODY होना किसी शेयर के OPENING PRICE और CLOSING PRICE दोनों का बराबर या लगभग बराबर होना बताता है)

(डोजी का UPPER AND LOWER SHADOW किसी शेयर के जो STOCK के WIDE RANGE PRICE MOVEMENT को बताता है)

2) डोजी कैंडल का COLOR उतना IMPORTANT नहीं होता है, IMPORTANT बस इतना है की यह CANDLESTICK PATTERN मार्केट में INDESICON यानी अनिश्चितता को बताता है, कुछ भी हो सकता है, MARKET ऊपर भी जा सकता और निचे भी।

डोजी कैंडल का उदहारण -

DOJI का प्रभाव –

आइये अब बात करते हैं कि डोजी का मार्केट में क्या प्रभाव होता है,

1) BULLISH TREND में डोजी का प्रभाव -

अगर डोजी BULLISH TREND में आता है, तो इसका दो प्रभाव हो सकता है, या तो थोड़े CORRECTION के बाद BULLISH TREND बना रहेगा,

या फिर हो सकता है डोजी के कारण MARKET का BULLISH TREND टूट जाये, और मार्केट निचे की तरफ जाये.

2) BEARISH TREND में डोजी का प्रभाव -

अगर डोजी BEARISH TREND में आता है, तो इसका दो प्रभाव हो सकता है, या तो थोड़े CORRECTION के बाद BEARISH TREND बना रहेगा,

या फिर हो सकता है डोजी के कारण MARKET का BEARISH TREND टूट जाये, और मार्केट ऊपर की तरफ जा सकता है.

3) SIDWAYS TREND में डोजी ,

डोजी CANDLE दिखने के बाद MARKET थोड़ा CORRECTION भी कर सकता है, और कुछ SESSIONS में SIDEWAYS भी हो सकता है,

डोजी CANDLE को देखकर हमें ऐसा समझना है कि

डोजी एक SPEED BRAKER है, जो हमें थोड़ा रुक के मार्केट कि अगली चाल को देख कर उसके हिसाब से आगे बढ़ने का सन्देश देता है.

DOJI – इसके ऊपर TRADER ACTION PLAN

अगर सीधा सीधा कहा जाये तो डोजी जब दिखता है, तो हमें ये समझना चाहिए कि मार्किट में किसी TREND को निश्चित नहीं माना जा सकता,

यानी डोजी के बाद होने वाले मार्केट में उतार चढ़ाव के बारे में कोई CLEARITY नहीं होती,

- 1) अगर वो TRADE लेना चाहता है, तो पूरी QUANTITY न लेके आधी QUANTITY में TRADE लिया जा सकता है.
- 2) MARKET में एक नए TREND के बनने तक का WAIT किया जा सकता है.

NOTES : अगर आप किसी भी CANDLESTICK PATTERN के आधार पर ट्रेड लेते हैं, STOCK खरीदते हैं, या बेचते हैं, तो आपको अपने TARGET PRICE का इन्तेजार करना है, और अगर आपका STOP LOSS हिट होता है, तो आपको TRADE से NIKALKAR दुसरे TRADE में मौका ढूँढ़ना चाहिए,
अगर आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आप TECHNICAL ANALYSIS को फाँलो नहीं कर रहे हैं, आप कुछ और कर रहे हैं.

TECHNICAL ANALYSIS PAPER UMBRELLA HAMMER (HAMMER AND HANGING MAN)

PAPER UMBRELLA एक Single candlestick पैटर्न का बहुत IMPORTANT candlestick पैटर्न है, पेपर अम्ब्रेला वास्तव में हमें दो तरह के signal देता है, जब पेपर अम्ब्रेला डाउन ट्रेंड में दीखता है इसका मतलब, TREND REVERSAL सूचक है, और अब MARKET ऊपर कि तरफ जा सकता है,

PAPER UMBRELLA के इस दो अलग अलग SIGNAL देने के कारण इसको दो अलग अलग नाम दिया गया है , HAMMER या HANGING MAN,

इस तरह PAPER UMBRELLA के दो प्रकार होते हैं

- 1) BULLISH PAPER UMBRELLA – जो हैमर (HAMMER) के नाम से POPULAR है.
- 2) BEARISH PAPER UMBRELLA – जो हैंगिंग मैन (HANGING MAN) के नाम से POULAR है.

PAPER UMBRELLA (पेपर अम्ब्रेला) के फायदे

- 3)_PAPER UMBRELLA से हमें TRADE के डायरेक्शनल ट्रेंड का पता चलता है,
- 4) पेपर अम्ब्रेला ट्रेंड REVERSAL सूचक पैटर्न है,
- 5) पेपर अम्ब्रेला सीधा सीधा बताता है कि आगे मार्केट निचे जाने वाला है या ऊपर,
- 6) बुलिश पेपर अम्ब्रेला यानी HAMMER से हमें आगे के मार्केट की BULLISH होने कि संभावना पता चलता है, जबकि इसका पिछला ट्रेंड, DOWN TREND होता है,

7) बुलिश पेपर अम्ब्रेला यानी HANGING MAN से हमें आगे के मार्केट की BEARISH होने कि संभावना पता चलता है, जबकि इसका पिछला ट्रेंड, UP TREND होता है,

अब हम दोनों पेपर अम्ब्रेला केंडल को अलग अलग नामों से बारी बारी समझने कि कोशिश करेंगे,

1 PAPER UMBRELLA HAMMER

HAMMER केंडल पैटर्न कैसे बनता है ?

PAPER UMBRELLA HAMMER तब बनता है जब कोई STOCK DOWN TREND में हो, और एक दिन यानी हैमर बनने के दिन STOCK अपने अपने OPEN PRICE से निचे चला जाता है, जो कि स्टॉक के BEARISH TREND में होता है, लेकिन फिर उसी दिन STOCK में BUYER (BULLS) की संख्या बढ़ जाती है, और BULLS कि तरफ से अच्छा SUPPORT मिलने से STOCK का CLOSING PRICE अपने OPEN PRICE के आस पास हो जाता है, और इस तरह चार्ट में एक हैमर केंडल दिखने लगता है,

PAPER UMBRELLA HAMMER की पहचान –

- 1) HAMMER बनने से पहले स्टॉक DOWN TREND में होना चाहिए,
- 2) अगर HAMMER candle के BODY की बात कि जाये तो एक SMALL REAL BODY और और एक LONG LOWER SHADOW होता है,
- 3) CANDLE का COLOR ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि स्टॉक का पिछला TREND और CANDLE कि BODY में

SMALL REAL BODY और LONG LOWER SHADOW के बीच 1:2 के RATIO में होना चाहिए.

4) HAMMER का REAL BODY यानी कैंडल का OPEN PRICE और CLOSE PRICE 1 % से 2% के अंतर से होना चाहिए,

और HAMMER का LOWER SHADOW उस CANDLE के REAL BODY से दुगुना या उस से ज्यादा होना चाहिए.

HAMMER कैंडल का उदहारण -

1) DOWN TREND में PAPER अम्ब्रेला यानी हैमर (HAMMER) दिखने के बाद , ऐसी आशा की जाती है कि , अब REVERSAL आ सकता है, और मार्केट BULLISH रहेगा,

PAPER UMBRELLA – हैमर (HAMMER) के ऊपर TRADER ACTION PLAN

हैमर एक बुलिश कैंडल है इसलिए, हमें हैमर कैंडल के ऊपर अपनी POSITION LONG रखनी चाहिए, यानी हमें STOCK BUY करना चाहिए और फिर अपना TARGET मिलने पर हम SELL करके लाभ कमा सकते हैं,

और इस तरह हैमर का ऊपर हमारा ट्रेड सेट अप इस तरह रहेगा.

TRADE SET UP – BASED ON HAMMER CANDLESTICK PATTERN

1) अगर आप RISK TAKER ट्रेडर हैं तो आप हैमर कैंडल कन्फर्म होने के साथ तुरंत ट्रेड लें सकते हैं, और अगर आप

RISK TAKER नहीं है तो आप हैमर कैंडल बनने के बाद अगले कैंडल के बुलिश होने पर डबल कन्फर्मेशन के साथ ट्रेड ले सकते हैं.

- 2) TRADE का SET UP इस तरह हो सकता है,
- 3) BUY PRICE = CLOSE PRICE of HAMMER
- 4) STOP LOSS = LOW PRICE of HAMMER
- 5) TARGET = आप अपनी RISK MANAGEMENT के अनुसार टारगेट सेट कर सकते हैं.

NOTES : अगर आप कोई भी ट्रेड लेते हैं तो तीन चीज़ हो सकता है ..

- 1) मार्केट आपकी सोच के अनुसार BULLISH हो सकता है – आप अपना PROFIT BOOK सही समय देखकर जरुर कर ले.
- 2) मार्केट आपकी सोच के विपरीत BEARISH हो सकता है – आप अपना STOP LOSS हिट हो रहा है तो , TRADE से EXIT कर ले.
- 3) अगर MARKET SIDWAYS हो जाता है, तो आप इन्तेज़ार कर सकते हैं, और अपनी नजर बनाये रखें.
- 4) अगर आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आप TECHNICAL ANALYSIS को फॉलो नहीं कर रहे हैं, आप कुछ और कर रहे हैं, और फिर सब कुछ किस्मत के भरोसे यानी GAMBILING हो जाएगी.

TRADE SET UP – BASED ON HAMMER CANDLESTICK PATTERN

- 1) अगर आप RISK TAKER ट्रेडर हैं तो आप हैमर कैंडल कन्फर्म होने के साथ तुरंत ट्रेड ले सकते हैं, और अगर आप RISK TAKER नहीं हैं तो आप हैमर कैंडल बनने के बाद अगले

कैंडल के बुलिश होने पर डबल कन्फर्मेशन के साथ ट्रेड ले सकते हैं,

- 2) TRADE का SET उप इस तरह हो सकता है,
- 3) BUY PRICE = CLOSE PRICE of HAMMER
- 4) STOP LOSS = LOW PRICE of HAMMER
- 5) TARGET = आप अपनी RISK MANAGEMENT के अनुसार टारगेट सेट कर सकते हैं.

NOTES : अगर आप कोई भी ट्रेड लेते हैं तो तीन चीज़ हो सकता है ..

- 1) मार्केट आपकी सोच के अनुसार BULLISH हो सकता है – आप अपना PROFIT BOOK सही समय देखकर जरुर कर ले.
- 2) मार्केट आपकी सोच के विपरीत BEARISH हो सकता है – आप अपना STOP LOSS हिट हो रहा है तो , TRADE से EXIT कर ले.
- 3) अगर MARKET SIDWAYS हो जाता है, तो आप इन्टेज़ार कर सकते हैं, और अपनी नजर बनाये रखें. अगर आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आप TECHNICAL ANALYSIS को फॉलो नहीं कर रहे हैं, आप कुछ और कर रहे हैं, और फिर सब कुछ किस्मत के भरोसे यानी GAMBLING हो जाएगी.

PAPER UMBRELLA – HANGING MAN

HANGING MAN कैंडल पैटर्न कैसे बनता है ?

हैंगिंग मैन कैंडल तब बनता है जब कोई STOCK UP TREND में हो, और एक दिन यानी हैंगिंग मैन बनने के दिन STOCK अपने अपने OPEN PRICE से निचे चला जाता है, जो कि स्टॉक के BEARISH TREND में होता है, लेकिन फिर उसी दिन STOCK में BUYER (BULLS) की संख्या बढ़ जाती है, और BULLS की तरफ से अच्छा SUPPORT मिलने के कारण STOCK का CLOSING PRICE अपने OPEN PRICE के आस पास हो जाता है, और इस तरह चार्ट में एक हैंगिंग मैन कैंडल दिखने लगता है,

HANGING MAN की पहचान –

- 1) HANGING MAN बनने से पहले स्टॉक UP TREND में होना चाहिए,
- 2) अगर HANGING MAN candle के BODY की बात कि जाये तो एक SMALL REAL BODY और और एक LONG LOWER SHADOW होता है,
- 3) CANDLE का COLOR ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि स्टॉक का पिछला TREND महत्वपूर्ण है जो UP TREND हो, और CANDLE की BODY में SMALL REAL BODY और LONG LOWER SHADOW के बीच 1:2 के RATIO में होना चाहिए.
- 4) HANGING MAN का REAL BODY यानी कैंडल का OPEN PRICE और CLOSE PRICE 1 % से 2% के अंतर से होना चाहिए,

और HANGING MAN का LOWER SHADOW उस CANDLE के REAL BODY से दुगुना या उस से ज्यादा होना चाहिए.

हैंगिंग मैन के ऊपर TRADER ACTION PLAN

हैंगिंग मैन एक BEARISH कैंडल है इसलिए, हमें हैमर कैंडल के ऊपर अपनी SHORT POSITION रखनी चाहिए, यानी हमें STOCK SELL करना चाहिए और फिर अपना TARGET मिलने पर हम वापस BUY करके लाभ कमा सकते हैं,

और इस तरह हैंगिंग मैन का ऊपर हमारा ट्रेड सेट अप इस तरह रहेगा.

TRADE SET UP – BASED ON HANGING MAN CANDLESTICK PATTERN

- 1) अगर आप RISK TAKER ट्रेडर हैं तो आप हैंगिंग मैन कैंडल कन्फर्म होने के साथ तुरंत ट्रेड ले सकते हैं, और अगर आप RISK TAKER नहीं हैं तो आप हैंगिंग मैन कैंडल बनने के बाद अगले कैंडल के BEARISH होने पर डबल कन्फर्मेशन के साथ ट्रेड ले सकते हैं,
- 2) TRADE का SET उप इस तरह हो सकता है,
- 3) SELL PRICE = CLOSE PRICE of HANGING MAN
- 4) STOP LOSS = HIGH PRICE of HANGING MAN
- 5) TARGET = आप अपनी RISK MANAGEMENT के अनुसार टारगेट सेट कर सकते हैं.

NOTES:

अगर आप कोई भी ट्रेड लेते हैं तो तीन चीज़ हो सकता है ..

- 1) मार्केट आपकी सोच के अनुसार BEARISH हो सकता है – आप अपना PROFIT BOOK सही समय देखकर जरुर कर ले.
- 2) मार्केट आपकी सोच के विपरीत BULLISH हो सकता है और अगर आपका STOP LOSS हिट हो रहा है तो , TRADE से EXIT कर ले.
- 3) अगर MARKET SIDWAYS हो जाता है, तो आप इन्तेज़ार कर सकते हैं, और अपनी नजर बनाये रखें. अगर आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आप TECHNICAL ANALYSIS को फॉलो नहीं कर रहे हैं, आप कुछ और कर रहे हैं, और फिर सब कुछ किस्मत के भरोसे यानी GAMBLING हो जाएगी.

MULTIPLE CANDLESTICK PATTERN – ENGULFING PATTERN

ENGULFING PATTERN एक MULTIPLE candlestick Pattern वाला पैटर्न है, और ये दो कैंडल यानी दो TRADING SESSION को एक साथ देखने पर पैटर्न दिखता है,

ENGULFING का अर्थ होता है निगलना, और इस पैटर्न में जो दो कैंडल बनते हैं, उसमें पहले कैंडल को दूसरा कैंडल निगलता हुआ ही दीखता है, इसिलए इसे ENGULFING PATTERN कहा जाता है,

जिसमें पहला कैंडल एक छोटा कैंडल होता है, और दूसरा कैंडल पहले कैंडल के मुकाबले काफी बड़ा कैंडल होता है,

ENGULFING PATTERN दोनों तरह के TREND यानी UP TREND और DOWN TREND दोनों में बनता है,

अगर ENGULFING PATTERN चार्ट में DOWN TREND में बनता है तो TREND REVERSAL यानी आगे BULLISH TREND हो जाने कि सम्भावना होती है,

BULLISH ENGULFING PATTERN

BULLISH ENGULFING PATTERN जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि या एक बुलिश पैटर्न है, और यह डाउन ट्रेंड में एकदम निचे BOTTOM में बनता है, BULLISH PATTERN है इसलिए एक ट्रेडर को ENGULFING के आधार पर LONG POSITION का मौका देखना चाहिए और शेयर्स खरीदना चाहिए,

BULLISH ENGULFING PATTERN कैंडल पैटर्न कैसे बनता है?

- 1) बुलिश इनगुल्फिंग पैटर्न बनने से स्टॉक पहले से डाउन ट्रेंड में होता है, और price और निचे जाता रहता है,
- 2) और इनगुल्फिंग पैटर्न बनने के पहले सेशन में एक छोटा रेड (BEARISH) कैंडल बनता है, जो कि डाउन ट्रेंड में अक्सर होता है,
- 3) लेकिन दुसरे सेशन में एक ग्रीन (BULLISH) कैंडल बनता है, जिसका OPEN PRICE और LOW PRICE पहले बने रेड कैंडल से भी काफी कम होता है, लेकिन उसका CLOSE PRICE और HIGH PRICE पहले बने रेड कैंडल से काफी ज्यादा लगभग दोगुना होता ह.
- 4) और इस तरह एक नया और मजबूत बुलिश कैंडल बनने से आगे ऐसी आशा कि जाती है, स्टॉक का जो पिछला DOWN TREND चला आ रहा था, वो अब टूट जायेगा और इस कारण अब आगे मार्केट बुलिश रहेगा, और हमको हमारी ट्रेड कि POSITION लॉन्ग रखनी चाहिए, और स्टॉक BUY करने चाहिए.

BULLISH ENGULFING PATTERN की पहचान –

- 1) BULLISH ENGULFING PATTERN बनने से पहले स्टॉक DOWN TREND में होना चाहिए,
- 2) BULLISH ENGULFING PATTERN का पहला कैंडल एक SMALL REAL BODY के साथ छोटा और सबसे महत्वपूर्ण रेड यानी BEARISH कैंडल होना चाहिए,

- 3) बुलिश एन्गुल्फिंग पैटर्न का दूसरा कैंडल एक REAL BODY के साथ LONG और बुलिश यानी ग्रीन कैंडल होना चाहिए ,
- 4) दोनों CANDLE का COLOR महत्वपूर्ण है, पहला BEARISH और दूसरा बुलिश
- 5) दोनों कैंडल को देखने पर ऐसा लगे कि पहला कैंडल, दुसरे कैंडल कि रियल बॉडी के अन्दर आ जायेगा.

BULLISH ENGULFING PATTERN का प्रभाव –

आइये अब बात करते हैं कि बुलिश एन्गुल्फिंग पैटर्न का मार्केट में क्या प्रभाव होता है,

- 1) DOWN TREND में बुलिश एन्गुल्फिंग पैटर्न दिखने के बाद , ऐसी आशा की जाती है कि , अब REVERSAL आ सकता है, और मार्केट BULLISH रहेगा, इसीलिए हमें स्टॉक खरीदने के मौके देखने चाहिए.

BULLISH ENGULFING PATTERN के ऊपर TRADER ACTION PLAN

बुलिश एन्गुल्फिंग पैटर्न एक BULLISH कैंडल है इसलिए, हमें इस पैटर्न के आधार पर अपनी LONG POSITION रखनी चाहिए, यानी स्टॉक को खरीदना चाहिए

अब सवाल है कि कब खरीदे और कितने में खरीदे और STOP LOSS क्या हो ?

और इस तरह बुलिश एन्गुल्फिंग पैटर्न के ऊपर हमारा ट्रेड सेट अप इस तरह रहेगा.

TRADE SET UP – BASED ON BULLISH ENGULFING PATTERN

- 1) अगर आप RISK TAKER ट्रेडर हैं तो आप बुलिश एन्गुलिंग पैटर्न कन्फर्म होने के साथ तुरंत ट्रेड ले सकते हैं, और अगर आप RISK TAKER नहीं हैं तो आप बुलिश एन्गुलिंग पैटर्न बनने के बाद अगले कैंडल के BULLISH होने पर डबल कन्फर्मेशन के साथ ट्रेड ले सकते हैं,
- 2) TRADE का SET UP इस तरह हो सकता है,
- 3) BUY PRICE = पैटर्न के दुसरे यानी BULLISH कैंडल के CLOSING PRICE के आस पास
- 4) STOP LOSS = पैटर्न का सबसे LOWEST PRICE
- 5) TARGET = आप अपनी RISK MANAGEMENT के अनुसार टारगेट सेट कर सकते हैं.

NOTES: अगर आप कोई भी ट्रेड लेते हैं तो तीन चीज़ हो सकता है ..

- 1) मार्केट आपकी सोच के अनुसार BULLISH हो सकता है – आप अपना PROFIT BOOK सही समय देखकर जरुर कर ले.
- 2) मार्केट आपकी सोच के विपरीत BEARISH हो सकता है – और अगर आपका STOP LOSS हिट हो रहा है तो , TRADE से EXIT कर ले.
- 3) अगर MARKET SIDWAYS हो जाता है, तो आप इन्तेज़ार कर सकते हैं, और अपनी नजर बनाये रखें. अगर आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आप TECHNICAL ANALYSIS को फॉलो नहीं कर रहे हैं, आप कुछ और कर रहे हैं, और फिर सब कुछ किसमत के भरोसे यानी GAMBLING हो जाएगी.

BEARISH ENGULFING PATTERN

BEARISH ENGULFING PATTERN जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि यह एक BEARISH पैटर्न है, और यह UP TREND में एकदम ऊपर TOP में बनता है, क्योंकि यह एक BEARISH PATTERN है इसलिए एक ट्रेडर को बिअरिश एन्गुलिफिंग पैटर्न के आधार पर SHORT POSITION का मौका देखना चाहिए और शेयर्स बेचना चाहिए,

BEARISH ENGULFING PATTERN कैंडल पैटर्न कैसे बनता है ?

- 1) बिअरिश इन्गुलिफिंग पैटर्न बनने से स्टॉक पहले से UP TREND में होता है, और price और ऊपर जाता रहता है,
- 2) और बिअरिश इन्गुलिफिंग पैटर्न बनने के पहले सेशन में एक छोटा ग्रीन (BULLISH) कैंडल बनता है, जो कि ऊपर ट्रेंड में अक्सर होता है,
- 3) लेकिन दुसरे सेशन में एक RED (BEARISH) कैंडल बनता है, जिसका OPEN PRICE और LOW PRICE पहले बने रेड कैंडल से ज्यादा होता है, लेकिन उसका CLOSE PRICE और HIGH PRICE पहले बने रेड कैंडल से काफी कम और लगभग दोगुना का अंतर होता है,
- 4) और इस तरह एक नया और मजबूत बिअरिश कैंडल बनने से आगे ऐसी आशा कि जाती है, स्टॉक का जो पिछला UP TREND चला आ रहा था, वो अब टूट जायेगा और इस कारण अब आगे मार्केट बिअरिश रहेगा , और हमको हमारी ट्रेड में SHORT SELLING का मौका देखना चाहिए.

BEARISH ENGULFING PATTERN की पहचान –

- 1) BEARISH ENGULFING PATTERN बनने से पहले स्टॉक UP TREND में होना चाहिए,
- 2) BEARISH ENGULFING PATTERN का पहला कैंडल एक SMALL REAL BODY के साथ छोटा और सबसे महत्वपूर्ण GREEN यानी BULLISH कैंडल होना चाहिए,
- 3) बिअरिश एन्गुल्फिंग पैटर्न का दूसरा कैंडल एक REAL BODY के साथ LONG और BEARISH यानी RED कैंडल होना चाहिए .
- 4) दोनों CANDLE का COLOR महत्वपूर्ण है, पहला BULLISH और दूसरा BEARISH.
- 5) दोनों कैंडल को देखने पर ऐसा लगे कि पहला कैंडल, दुसरे कैंडल कि रियल बॉडी के अन्दर आ जायेगा,

BEARISH ENGULFING PATTERN का प्रभाव –

आइये अब बात करते हैं कि बिअरिश एन्गुल्फिंग पैटर्न का मार्केट में क्या प्रभाव होता है,

- 1) UP TREND में बिअरिश एन्गुल्फिंग पैटर्न दिखने के बाद , ऐसी आशा की जाती है कि , अब REVERSAL आ सकता है, और मार्केट अब BEARISH रहेगा, इसीलिए हमें स्टॉक SHORT SELLING के मौके देखने चाहिए.

BEARISH ENGULFING PATTERN के ऊपर TRADER ACTION PLAN

बिअरिश एन्गुल्फिंग पैटर्न एक BEARISH कैंडल पैटर्न है, इसलिए, हमें इस पैटर्न के आधार पर अपनी SHORT POSITION रखनी चाहिए, यानी स्टॉक को बेचना चाहिए

अब सवाल है कि कब बेचे ?

और कितने में बेचे ?

और STOP LOSS क्या हो ?

और इस तरह बिअरिश एन्गुल्फिंग पैटर्न के ऊपर हमारा ट्रेड सेट अप इस तरह रहेगा.

TRADE SET UP – BASED ON BEARISH ENGULFING PATTERN

- 1) अगर आप RISK TAKER ट्रेडर हैं तो आप बिअरिश एन्गुल्फिंग पैटर्न कन्फर्म होने के साथ तुरंत ट्रेड ले सकते हैं, और अगर आप RISK TAKER नहीं हैं तो आप बिअरिश एन्गुल्फिंग पैटर्न बनने के बाद अगले कैंडल के BEARISH होने पर डबल कन्फर्मेशन के साथ ट्रेड ले सकते हैं,
- 2) TRADE का SET उप इस तरह हो सकता है,
- 3) SELL PRICE = पैटर्न के दुसरे यानी BEARISH कैंडल के CLOSING PRICE के आस पास
- 4) STOP LOSS = पैटर्न का सबसे LOWEST PRICE
- 5) TARGET = आप अपनी RISK MANAGEMENT के अनुसार टारगेट सेट कर सकते हैं.

NOTES : अगर आप कोई भी ट्रेड लेते हैं तो तीन चीज़ हो सकता है .

- 1) मार्केट आपकी सोच के अनुसार BEARISH हो सकता है – आप अपना PROFIT BOOK सही समय देखकर जरुर कर ले.
- 2) मार्केट आपकी सोच के विपरीत BULLISH हो सकता है और अगर आपका STOP LOSS हिट हो रहा है तो , TRADE से EXIT कर ले.
- 3) अगर MARKET SIDWAYS हो जाता है, तो आप इन्तेज़ार कर सकते हैं, और अपनी नजर बनाये रखें. अगर आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आप TECHNICAL ANALYSIS को फॉलो नहीं कर रहे हैं, आप कुछ और कर रहे हैं, और फिर सब कुछ किस्मत के भरोसे यानी GAMBLING हो जाएगी.

GAP UP AND GAP DOWN OPENING CONCEPT

GAP OPENING CONCEPT

Technical Analysis में candlestick से सम्बंधित और महत्वपूर्ण कॉन्सेप्ट है – **GAP OPENING CONCEPT**,

आइये पहले देखते हैं, गैप क्या होता है,

गैप का अर्थ है, जब चार्ट में एक कैंडल के बाद दूसरा कैंडल बनता है, उस समय कभी कभी पहले कैंडल के CLOSING PRICE और दुसरे कैंडल के OPENING PRICE के बीच काफी ज्यादा अंतर होता है,

पहले कैंडल के CLOSING PRICE और दुसरे कैंडल के OPENING PRICE के इस अंतर (DIFFERENCE of PRICE) को ही हम गैप कहते हैं,

गैप के प्रकार – **TYPES OF GAP**

दो कैंडल के बीच इस तरह के गैप दो प्रकार के होते हैं,

1. **GAP UP OPENING**
2. **GAP DOWN OPENING**

GAP UP OPENING

GAP UP OPENING का मतलब है, दो कैंडल के बीच जो गैप बना है, वो ऊपर की तरफ यानी बुलिश गैप है,

और इस तरह गैप ओपनिंग का सीधा अर्थ है कि मार्केट में BULLS का जोरदार प्रभाव है, और इस तरह किसी स्टॉक का गैप ओपनिंग हमें बताता है कि बुल्स यानी BUYERS उस

STOCK को उसके CLOSING PRICE से भी ज्यादा भाव में खरीदना चाहते हैं,

अगर किसी STOCK का CLOSING PRICE 100 रूपये था, लेकिन उसकी OPENING PRICE सीधे 103 से शुरू हो रही है,

यानी इस तरह कि 3% के पॉजिटिव अंतर को ही गैप अप OPENING कहते हैं, और जैसे हमने पहले बात कि गैप अप ओपनिंग का अर्थ है, BUYERS का जोरदार प्रभाव.

गैप डाउन ओपनिंग – GAP DOWN OPENING

गैप डाउन OPENING का मतलब है, दो कैंडल के बीच जो गैप बना है, वो नीचे की तरफ यानी BEARISH गैप बना होता है, और इस तरह गैप डाउन ओपनिंग का सीधा अर्थ है कि मार्केट में BEARS का जोरदार प्रभाव माना जाता है, और उस स्टॉक का गैप डाउन ओपनिंग हमें बताता है कि बेअर्स यानी SELLERS उस STOCK को उसके CLOSING PRICE से भी कम भाव में बेचना चाहते हैं,

जैसे – अगर किसी STOCK का CLOSING PRICE 100 रूपये था, लेकिन उसकी OPENING PRICE सीधे 97 से शुरू हो रही है,

यानी इस तरह कि 3% के NEGATIVE अंतर को ही गैप डाउन OPENING कहते हैं, और जैसे हमने पहले बात कि गैप डाउन ओपनिंग का अर्थ है, SELLERS का जोरदार प्रभाव.

कैंडलस्टिक पैटर्न के सम्बन्ध में कुछ ध्यान देने वाली बातें

कैंडलस्टिक पैटर्न (CANDLESTICK PATTERN) के सम्बन्ध में कुछ ध्यान देने वाली बातें

कैंडलस्टिक पैटर्न के बारे में कुछ महत्वपूर्ण पॉइंट्स को समझना हम सभी के लिए आवश्यक है, आइए इन पॉइंट्स को थोड़े डिटेल में समझते हैं –

ENTRY AND EXIT POINT –

कैंडलस्टिक पैटर्न से हमें सिर्फ ये पता चलता है कि, Trade लेते समय Entry point क्या होना चाहिए, और Trade का Stop loss क्या होना चाहिए, कैंडलस्टिक पैटर्न की हेल्प से हमें ट्रेड में प्रॉफिट कब बुक करना है, ये समझ में नहीं आता है,

BULLS और BEARS की स्पस्ट पहचान

कैंडलस्टिक पैटर्न से हमें Bulls और Bear को पचानने के साथ उनके बीच बनने वाले अलग अलग पैटर्न और मार्केट में बनने वाले ट्रेंड को बहुत आसानी से समझने का मौका मिलता है,

सभी कैंडलस्टिक पैटर्न को समझना अनिवार्य नहीं है –

हमने अभी तक 16 महत्वपूर्ण, और ज्यादा पोपुलर कैंडलस्टिक के बारे में पढ़ा है, वैसे Candlestick Pattern और बहुत सारे भी है, लेकिन ध्यान देने वाली बात ये है कि – हमें सभी कैंडलस्टिक पैटर्न को समझना जरुरी नहीं है, बल्कि जितने कैंडलस्टिक पैटर्न के बारे में हमने अभी तक पढ़ा,

उनको समझना ही काफी होगा, अगर हम इनको पहचानना सिख ले, तो हम मार्केट के उतार चढ़ाव को आसानी से समझ जायेंगे,

कैंडलस्टिक पैटर्न, मार्केट की कहानी को चित्र द्वारा बताता है

Candlestick Pattern अलग अलग चित्रों यानि पैटर्न के माध्यम से मार्केट के बारे में हो रहे सभी उतार चढ़ाव के बारे में स्पष्ट चित्र देता है, और मार्केट के बारे में होने वाले बार बार के पैटर्न से लाभ उठाने के मौके भी देता है, जब कैंडलस्टिक को समझना शुरू कर देते हैं, तो फिर ऐसा लगता है जैसे हर चार्ट आपसे बात करता है, और कुछ बताना चाहता है, बस आपको ध्यान देने की जरूरत है, और सही पैटर्न को पहचानने की भी जरूरत होती है,

कैंडलस्टिक पैटर्न ट्रेंड्स को बताता है,

Candlestick Pattern से हमें बहुत आसानी से UP TREND, DOWN TREND, और SIDEWAYS के बारे में समझने का और किसी TRADE के लिए POINT OF VIEW बनाने का मौका मिलता है,

CANDLESTICK PATTERN – SUMMARY

जैसे मैंने पहले कहा – अलग अलग बहुत सारे Candlestick Pattern हमें सभी Candlestick Pattern को सीखना और समझना जरूरी नहीं है, बल्कि कैंडलस्टिक को समझने का मुख्य उद्देश्य ये है कि मार्केट में हो रहे उतार चढ़ाव, Bulls और Bears , और मार्केट की दिशा यानि Trend को को समझा जाये,

और इसलिए कैंडलस्टिक के इन पोपुलर पैटर्न को समझने के बाद, इनकी सही प्रैक्टिस करके इनको चार्ट में पहचानते हुए, अपने ट्रेड के लिए Point of View को समझना महत्वपूर्ण है।

Volume (वॉल्यूम)- Technical Analysis

VOLUME का अर्थ

Volume (वॉल्यूम) का हिंदी अर्थ होता है – मात्रा, यानि कुल संख्या,

और स्टॉक मार्केट के समबन्ध में वॉल्यूम का अर्थ होता है, किसी स्टॉक में होने वाली खरीद और विक्री की मात्रा (कुल संख्या -वॉल्यूम) से होता है,

स्टॉक मार्केट में स्टॉक का VOLUME

अगर मैं आपसे पुछूँ कि – मैंने रिलायंस के जो सौ शेयर खरीदे वो मेरे दोस्त ने 100 शेयर बेचे थे , तो इन दोनों सौदे के बाद स्टॉक का Trade volume कितना होना चाहिए-

- कुछ लोगों का जवाब होगा 100 शेयर खरीदे गए और 100 शेयर बेचे गए, इसका मतलब वॉल्यूम 200 होगा, जो कि एक गलत जवाब है,
- सही जवाब ये है कि – मैंने 100 शेयर कितनी संख्या में खरीदे बेचे गए तो ध्यान से देखे तो पता चलता है कि – दोस्त ने 100 शेयर बेचे और मैंने वही 100 शेयर खरीदे और इसलिए शेयर का वॉल्यूम तो 100 ही हुआ,

क्योंकि वास्तव में 100 शेयर ही इधर से उधर हुए है, न की 200

स्टॉक मार्केट VOLUME तेजी और मंदी दोनों में बढ़ सकती है –

ध्यान दीजिए, कि मार्केट में किसी स्टॉक में मंदी हो या तेजी, दोनों ही कंडीशन में स्टॉक का VOLUME का बढ़ सकता है, अगर मंदी में वॉल्यूम बढ़ता है, इसका मतलब ज्यादा से ज्यादा लोग उस स्टॉक को बेचना चाहते हैं,

और अगर तेजी (BULLISH MARKET) में वॉल्यूम बढ़ता है तो इसका मतलब है कि उस स्टॉक को ज्यादा से ज्यादा लोग खरीदना चाहते हैं,

स्टॉक मार्केट में स्टॉक का VOLUME कैसे बनता है -

ऊपर के example से हमें ये अच्छी तरह से समझ जाना चाहिए कि स्टॉक मार्केट में volume कैसे बनता है, और हमें इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि -

- मार्केट में उतने ही शेयर खरीदे जा सकते हैं, जितने कि शेयर बेचे गए हैं, यानि अगर अगर किसी दिन १ लाख शेयर खरीदे गए, तो इसका मतलब है दूसरी तरफ से १ लाख शेयर बेचे गए हैं, और इस तरह कुल १ लाख शेयर इधर से उधार ट्रान्सफर हो रहे हैं न कि २ लाख, और इसलिए उस दिन स्टॉक का trade volume भी १ लाख ही होगा.
- वॉल्यूम वास्तव में ट्रेड में किए गए शेयर के ट्रान्सफर की कुल संख्या है, यानि जितने शेयर ट्रान्सफर हो रहे हैं, उसी को volume कहा जाता है.

और वॉल्यूम इस तरह बनता है कि

किसी एक सौदे को ट्रेड कहा जाता है और एक ट्रेड जितने शेयर खरीदे और बेचे जा रहे हैं, उस ट्रेड में लेन देन किये जाने वाले शेयर की कुल संख्या ही उस स्टॉक का वॉल्यूम कहा जायेगा,

जैसे – अगर किसी सौदे में 100 शेयर खरीदे और बेचे जा रहे हैं, तो उस स्टॉक में trade तो 1 हुआ और उस trade का volume 100 होगा, जो कि उस दिन उस स्टॉक का वॉल्यूम कहा जायेगा,

VOLUME बनने के पीछे की कहानी

वॉल्यूम तभी बढ़ता है, जब लोग ट्रेड या तो ज्यादा लेते हैं, तो ऐसे में इस बात को ध्यान में रखना जरुरी है कि Volume के बढ़ने के दो प्रमुख कारण हो सकते हैं –

- 1) **रिटेल इन्वेस्टर का जोर (इंटरेस्ट)** – जब किसी स्टॉक का ज्यादा से ज्यादा रिटेल इन्वेस्टर खरीदना चाहते हैं, या फिर किसी स्टॉक का ज्यादा से ज्यादा रिटेल इन्वेस्टर बेचना चाहते हैं तो स्टॉक के वॉल्यूम में ये बात स्पष्ट देखने को मिलती है,
- 2) **बड़ी फाइनेंसियल कम्पनी/इन्वेस्टिंग हाउस का जोर (इंटरेस्ट)** – जब किसी स्टॉक को किसी बड़े मार्केट प्लेयर द्वारा खरीदा या बेचा जाता है, जैसे **FII, या DII, या MUTUAL FUND HOUSE** अक्सर बड़ी मात्रा में स्टॉक को खरीदते या बेचते हैं, जो कि उस स्टॉक के वॉल्यूम को बढ़ा देता है, इस तरह किसी स्टॉक में जब भी कोई मजबूत (STRONG) VOLUME दिखे तो समझने की कोशिस करने चाहिए, कि किस तरह के लोग इस volume को बढ़ा रहे हैं, और उसी के अनुसार एक आम निवेशक को वॉल्यूम की दिशा और PRICE में होने वाले उतार चढ़ाव के अनुसार ही मार्केट में अपनी पोजीशन बनानी चाहिए.

TECHNICAL ANALYSIS में VOLUME का महत्व

Volume का महत्व Technical Analysis में इसलिए बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि वॉल्यूम की हेल्प से हमें इन प्रमुख बातों का पता चलता है।

1) Stock Insights : किसी स्टॉक के ऊपर लोगों का कितना झुकाव है, लोग किस स्टॉक में कितना ट्रेड ले रहे हैं, ये बात किसी स्टॉक के trade volume को देख कर आसानी से लगाया जाना जा सकता है,

2) Technical Pattern and Trend Confirmation: – Technical Analysis में volume को इसलिए और खास महत्व दिया जाता है क्योंकि किसी स्टॉक में ट्रेड वॉल्यूम को देख कर इस बात का आसानी से पता लगाया जा सकता है, उस स्टॉक का ट्रेंड कितना मजबूत (Strong) या कमज़ोर (Weak) है, इसके आलावा Technical Analysis में प्रयोग किये जाने वाले सभी tools, द्वारा जो भी signal निकाला जाता है, वास्तव में वो signal कितना स्टोंग है या कितना weak है इस बात का पता भी volume से ही चलता है।

3) Stock में तेजी या मंदी के समय (Time Frame) का वास्तविक सूचक – Technical Analysis में volume को इसलिए और खास महत्व दिया जाता है क्योंकि किसी स्टॉक में ट्रेड वॉल्यूम को देख कर इस बात का आसानी से पता लगाया जा सकता है, कि किसी स्टॉक में होने वाले ट्रेड में कौन से समय में लोग सबसे ज्यादा खरीदी कर रहे हैं, या कौन से समय के बीच स्टॉक की विक्री ज्यादा हो रही है।

4) Stock के Active या Not Active का सूचक – Technical Analysis के अन्दर इस बात का खास ध्यान रखा जाता है कि सौदे लेते समय इस बात को चेक किया जाता है, जिस कंपनी के

स्टॉक पर दाव लगाया जा रहा है, उसमे पर्याप्त volume है या नहीं, यानि वो share सौदे के नजर से अच्छी तरह से active है या नहीं, कहीं ऐसा तो नहीं लोग उस शेयर को बहुत कम मात्रा में खरीद और बेच रहे हैं, लोग कितनी मात्रा में खरीद या बेच रहे हैं, इस बात का पता सिफ्फ स्टॉक के trade volume को देख कर ही लगाया जा सकता है, ध्यान देने वाली बात ये है कि – जिस स्टॉक में सबसे ज्यादा लोग ट्रेड लेते हैं, यानि जिस स्टॉक के ट्रेड का volume ज्यादा होता है, उसे उतना ज्यादा active शेयर माना जाता है.

Moving Average मूविंग एवरेज

MOVING AVERAGE का अर्थ

Moving Average का हिंदी अर्थ है – गतिशील औसत,

यानी Moving Average ऐसा औसत है, जो गतिशील है, समय के साथ आगे बढ़ (move) रहा है, हर औसत, पिछले औसत से आगे चलता जा रहा है, जबकि टाइम frame निश्चित है,

Moving Average को multiple time frame का average भी कहा जा सकता है, क्योंकि टेक्निकल एनालिसिस में कई अलग अलग टाइम फ्रेम के सामान्य Average को, चार्ट पर एक साथ एक लाइन पर दिखाया जाता है,

MOVING AVERAGE (MA) और SIMPLE MOVING AVERAGE (SMA)

Moving Average (MA) और Simple Moving Average (SMA) दोनों एक ही है, इन दोनों में कोई अंतर नहीं है,

इस बात का ध्यान रखें कि अगर Moving Average (MA) की बात हो रही है तो वास्तव में Simple Moving Average (SMA) की ही बात की जा रही है,

मूविंग एवरेज लाइन और सिंपल मूविंग एवरेज लाइन दोनों एक ही है, एक तरह से कैलकुलेट किए जाते हैं, बस कुछ लोग मूविंग एवरेज कहते हैं और कुछ लोग इसे सिंपल मूविंग एवरेज या short में SMA कहते हैं,

इसलिए इन दोनों को अलग अलग समझ कर किसी तरह के कंफ्यूजन से बचे,

मूविंग एवरेज लाइन

टेक्निकल एनालिसिस करते समय मूविंग एवरेज को उपयोग में लिया जाता है, मूविंग एवरेज वास्तव में चार्ट पे एक लाइन खीच कर बनाया जाता है,

मूविंग एवरेज की यह लाइन, कई सामान्य औसत के बिन्दुओं को एक साथ मिलाने से बनती है,

जैसे –

10 दिन के मूविंग एवरेज का अर्थ है, जिस डेट से मूविंग एवरेज कैलकुलेट करने की बात की जा रही है, उस डेट से पिछले 10 दिनों का सामान्य औसत,

फिर अगले दिन वापस पिछले दिन का सामान्य औसत,

और फिर अगले दिन, पिछले दस दिन का सामान्य औसत,

और इन सभी सामान्य औसत को चार्ट पर एक बिंदु में लिख कर बाद में सभी बिंदु को एक साथ मिला दिया जाता है, जिस से मूविंग एवरेज की लाइन बन जाती है,

सामान्य औसत और मूविंग एवरेज

हम Day to Day लाइफ में जो औसत शब्द का इस्तेमाल करते हैं, उसमे सिर्फ औसत एक ही संख्या होती है,

जैसे – अगर हमें कुछ संख्या पता है, जैसे – रवि ने पिछले पांच दिन में बाइक से जो घुमा है, वो इस तरह से है

पहले दिन रवि बाइक से घूमता है – 6 km, दुसरे दिन 10 km, तीसरे दिन 9 km, चौथे दिन 8 km, पांचवे दिन -7 km

तो इस तरह अगर रवि के बाइक से घुमने का एवरेज होगा
=रवि द्वारा घुमने की कुल संख्या/दिन की संख्या

$$=(6+10+9+8+7)/5 =40/5 = 8$$

और इसलिए ये कहा जा सकता है, कि रवि रोज 8 km औसत रूप से बाइक से घूमता है,

जबकि मूविंग एवरेज एक लाइन होती है, जिस पर एक निश्चित टाइम frame के कई अलग अलग कई सामान्य एवरेज होते हैं, जिन्हें एक लाइन द्वारा मिलाया जाता है,

Exponential Moving Average (EMA -एक्सपोनेंशियल मूविंग एवरेज)

EMA – EXPONENTIAL MOVING AVERAGE क्या है?

Exponential Moving Average (एक्सपोनेंशियल मूविंग एवरेज)जिसे short में EMA कहा जाता है ,

EMA एक टेक्निकल एनालिसिस का एक टूल है, जिसकी मदद से हमें स्टॉक मार्केट में स्टॉक के भाव के बारे में एनालिसिस करने में मदद मिलती है, जैसा हमने देखा इसका पूरा नाम है – **Exponential Moving Average, (एक्सपोनेंशियल मूविंग एवरेज)**

और वास्तव में EMA एक मूविंग एवरेज का प्रकार है, इससे पहले मूविंग एवरेज के बारे में देखा था, समझा था,

EMA – मूविंग एवरेज का एक प्रकार

मूविंग एवरेज मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं –

पहला – SIMPLE MOVING AVERAGE (सिंपल मूविंग एवरेज) जिसे short में SMA कहा जाता है, और SIMPLE MOVING AVERAGE के कैलकुलेशन में सभी DATA POINT को एक समान महत्व दिया जाता है,

दूसरा – Exponential Moving Average (एक्सपोनेंशियल मूविंग एवरेज) जिसे short में EMA कहा जाता है, और Exponential MOVING AVERAGE के कैलकुलेशन में DATA POINT के शुरुआत के DATA को कम महत्व दिया जाता है और LATEST DATA POINT को ज्यादा महत्व दिया जाता है,

SMA और EMA में अंतर

- 1) SMA और EMA में सबसे बड़ा अंतर DATA के महत्व का है, जहां SMA में सभी DATA POINT एक बराबर माना जाता है, और SMA का कैलकुलेशन काफी हद तक सामान्य औसत के कैलकुलेशन जैसा होता है, जबकि EMA में DATA POINT के शुरुआत के DATA को कम महत्व दिया जाता है और LATEST DATA POINT को ज्यादा महत्व दिया जाता है.
- 2) SMA का कैलकुलेशन काफी आसान है, और हम इसे आसानी से कर सकते हैं, जबकि EMA का कैलकुलेशन करना कठिन हो जाता है, क्योंकि DATA POINT के महत्व को कैलकुलेट करने में दिक्कत आती है, हालाँकि SMA या फिर EMA दोनों के कैलकुलेशन किसी भी टेक्निकल एनालिसिस के चार्ट सॉफ्टवेयर में बड़ी आसानी से की जा सकती है, हमें इस मैन्युअली कैलकुलेट करने की जरूरत नहीं होती।
- 3) EMA – EXPONENTIAL MOVING AVERAGE का क्या इस्तेमाल है?

Stock Market में एक कांसेट है – Market Price of Stock Discounts Everything,

यानि किसी स्टॉक का मार्केट price उस स्टॉक से जुड़ी सभी तरह के जानकारी को बता देता है, और इस कारण से स्टॉक का लेटेस्ट price सबसे महत्वपूर्ण पॉइंट बन जाता है, Latest price Point में उस स्टॉक की सभी तरह की जानकारी शामिल मानी जाती है,

और इसी कारण से टेक्निकल एनालिसिस के समय सिंपल मूविंग एवरेज जो सभी data point को एक समान महत्व देता है, उसे उतना इफेक्टिव नहीं माना जाता है,

और मूविंग एवरेज के बेहतर इस्तेमाल के लिए Exponential Moving Average (EMA) को इस्तेमाल में लिया जाता है, क्योंकि जैसा हमने पहले देखा EMA के कैलकुलेट करने के लिए हम LATEST DATA POINT को ज्यादा महत्व देते हैं,

और इसी कारण से EMA का इस्तेमाल करके हम स्टॉक के Price movement और stock के bullish या bearish trend को कन्फर्म करते हैं,

EMA – EXPONENTIAL MOVING AVERAGE का कैलकुलेशन

दूसरी तरफ अगर बात की जाये Exponential Moving Average (EMA) को कैलकुलेट करने की तो EMA को कैलकुलेट करना थोड़ा MATHEMATICAL हो सकता है,

लेकिन चार्टिंग सॉफ्टवेयर की मदद से इस आसानी से कैलकुलेट किया जा सकता है,

चार्टिंग सॉफ्टवेयर में बस आपको EMA नाम के TOOLS को सेलेक्ट करना होगा, और बाद में आपको सॉफ्टवेयर में ये INPUT लिखना होगा कि आप कितने समय (TIME FRAME) के अनुसार EMA कैलकुलेट करना चाहते हैं,

जैसे – 5 DAYS, 10 DAYS, 15 DAYS, 20 DAYS, 50 DAYS,

और इस तरह आप बड़ी आसानी से आपको चार्ट पर एक EMA की लाइन मिल जाएगी,

इसके अलावा अगर बात बात की जाये कि EMA को कैलकुलेट करने के पीछे क्या PROCESS है तो वो कुछ इस प्रकार है –

अगर किसी स्टॉक का १ से २० तारीख का DATA दिया हुआ है, और हमें ५ DAYS का EMA निकालना है तो सबसे लेटेस्ट DATA यानि पांचवे और चौथे दिन के DATA को महत्वपूर्ण मानते हुए LATEST DATA POINT को एक खास WEIGHTAGE (भार) दिया जाता है, और फिर उसके अनुसार EMA कैलकुलेट किया जाता है,

जैसे मैंने पहले कहा ,

EMA को मैन्युअली कैलकुलेट करने में काफी समय लग सकता है, लेकिन सॉफ्टवेर की मदद से इस आसानी से २ सेकंड में किया जा सकता है,

EMA – EXPONENTIAL MOVING AVERAGE के ऊपर कैसे TRADE लिया जाये ?

ध्यान देने वाली बात ये है कि सिर्फ MOVING AVERAGE चाहे SMA हो या EMA, इन के आधार पर भी आप स्टॉक खरीद और बेच सकते हैं,

जैसा आपको पता है कि SMA या EMA चार्ट में कैलकुलेट करने पर हमें एक MOVING AVERAGE LINE मिल जाती है,

अब इस LINE को ध्यान में रखते हुए हम TRADE ले सकते हैं,

आइए जानते हैं कैसे ?

1) **CURRENT PRICE अपने AVERAGE PRICE से ऊपर होने पर** – अगर स्टॉक का करंट प्राइस अपने मूविंग एवरेज की लाइन से ऊपर जा रहा है, इसका मतलब मार्केट BULLISH है और इसलिए हम भी स्टॉक खरीद सकते और बुलिश ट्रेंड का लाभ उठा कर प्रॉफिट बुक कर सकते हैं.

2) **CURRENT PRICE अपने AVERAGE PRICE से नीचे होने पर** – अगर स्टॉक का करंट प्राइस अपने मूविंग एवरेज की लाइन से नीचे जा रहा है, इसका मतलब मार्केट BEARISH है और इसलिए हम भी स्टॉक में SHORT SELLING के मौके की तलाश करना चाहिए, ताकि BERAISH TREND का लाभ उठाया जा सके.

3) **SIDEWAYS MARKET** – ध्यान देने वाली बात ये है कि MOVING AVERAGE SIDEWAYS TREND में सही तरह से काम नहीं करता है, और इसलिए SIDEWAYS MARKET के समय आपको इसका इस्तेमाल करते समय बहुत सावधानी रखनी चाहिए.

Moving Average Crossover System

मूविंग एवरेज क्रॉसओवर सिस्टम

Moving Average Crossover System मूविंग एवरेज को और ज्यादा इफेक्टिव बनाने के लिए, काम में लिया जाने वाला tools है, असल में Moving Average System को टेक्निकल एनालिसिस का एक स्ट्रेटजी कह सकते हैं, जिसका आधार Simple Moving Average (SMA) और Exponential Moving average (EMA) ही है,

अगर आप Simple Moving Average (SMA) और Exponential Moving average (EMA) को अच्छी तरह से समझते हैं, तो मूविंग Moving Average System (मूविंग एवरेज क्रॉसओवर सिस्टम) को समझाना आपके लिए बहुत आसान हो जाता है,

मूविंग एवरेज क्रॉसओवर सिस्टम के फायदे

Moving Average crossover System सामान्य Simple Moving Average (SMA) और Exponential Moving average (EMA) के कुछ प्रॉब्लम को काफी अच्छे तरीके से solve करता है, जो कि मूविंग एवरेज क्रॉसओवर सिस्टम के फायदे कहे जा सकते हैं, जैसे –

- 1) Moving average सामान्यतया स्टॉक के खरीदने या बेचने के बहुत अधिक signal देते हैं, जिसमें ज्यादातर profitable नहीं होते हैं.
- 2) Moving average के इस्तेमाल से सबसे ज्यादा प्रॉब्लम sideways market में होती है, जहाँ moving average स्टॉक के खरीदने या बेचने के बहुत अधिक signal देते हैं,

मूविंग एवरेज क्रॉसओवर सिस्टम कैसे काम करता है

Moving Average crossover System को बहुत ही सिंपल तरीके से काम में लिया जाता है, जैसा कि हम जानते हैं कि moving average चाहे वो SMA हो या EMA ये चार्ट पर एक सिंपल और सिंगल लाइन खीचते हैं, जिसमें हमें ये देखना होता है कि स्टॉक कर करंट price, मूविंग एवरेज से नीचे है या ऊपर,

तो इसी तरीके को जब डबल कन्फर्मेशन के लिए जब इस्तेमाल कर देते हैं, तो वो बन जाता है Moving Average crossover System,

और इस तरह Moving Average crossover System में दो moving average की लाइन खीचते हैं, और दोनों को एक साथ देखकर ये समझने की कोशिश करते हैं, कि कौन सा signal स्टॉक के खरीदने या बेचने के लिए DOUBLE कन्फर्मेशन दे रहा है,

यानि अगर एक लाइन में कहूँ तो मूविंग एवरेज क्रॉसओवर सिस्टम दो EMA या फिर दो SMA की लाइन होती है, जिसमें हमें बहुत ज्यादा signal से कुछ अच्छे सौदे (trade) की तलाश करते हैं,

ध्यान देने वाली बात ये है कि – ये दो मूविंग एवरेज अलग अलग टाइम frame के होते हैं,

जैसे – एक 25 DAYS EMA और दूसरा 50 DAYS EMA या दूसरा एक 9 DAYS EMA और दूसरा 21 DAYS EMA और ऐसे ही अलग अलग टाइम के दो EMA इस्तेमाल में लिए जाते हैं,

इन दोनों मूविंग एवरेज की लाइन को चार्ट पर एक साथ खीचने से हमें मूविंग एवरेज का crossover सिस्टम देखने को मिलता है,

ये दोनों लाइन कभी चार्ट में कभी एक दुसरे से दूर होती है, कभी पास और कभी एक जगह पर मिल जाती है, और इसी के आधार पर ट्रेडर अपनी ट्रेड के signal को कन्फर्म करने की कोशिश करता है,

POPULAR MOVING AVERAGE CROSSOVER SYSTEM

Moving Average crossover System के कुछ पोपुलर कॉम्बिनेशन इस प्रकार हैं,

- 1) 9 DAYS EMA और 21 DAYS EMA की दो लाइन,-
यह सिस्टम short term trade के लिए अच्छा माना जाता है, इसका इस्तेमाल कुछ दिनों से लेकर एक week तक के trade के लिए किया जाता है,
- 2) 25 DAYS EMA और 50 DAYS EMA की दो लाइन,-
इसे Swing Trading के लिए अच्छा माना जाता है, इसका इस्तेमाल कुछ दिनों से लेकर एक week से लेकर एक महीने तक के trade के लिए किया जाता है,
- 3) 50 DAYS EMA और 100 DAYS EMA की दो लाइन,-
इसे एक लिटिल लॉन्ग टर्म के लिए अच्छा माना जाता है, इसका इस्तेमाल 1 महीने से लेकर 6 महीने तक के trade के लिए किया जाता है,
- 4) 100 DAYS EMA और 200 DAYS EMA की दो लाइन,-

इसे एक PURE लॉन्ग टर्म के लिए अच्छा माना जाता है, इसका इस्तेमाल 6 महीने या उस से ज्यादा समय तक के trade के लिए किया जाता है,

ध्यान देने वाली बाते –

यहाँ जो कम TIME वाला EMA है उसे FAST MOVING AVERAGE कहा जाता है, और दूसरा जो ज्यादा टाइम frame वाला EMA है उसे SLOW MOVING AVERAGE कहा जाता है,

और ध्यान देने वाली बात ये है कि FAST MOVING AVERAGE में कम DATA POINT को कैलकुलेट करके बनाता है, इसलिए ये करंट price के काफी नजदीक होता है,

इसके आलावा, SLOW MOVING AVERAGE ज्यादा DATA POINT को कैलकुलेट करके बनता है, इसलिए ये CURRENT PRICE से थोड़ा दूर दीखता है,

आगे हम ये जानेंगे कि – इस तरह Moving Average crossover System के आधार पर हम कैसे ट्रेड ले सकते हैं,

1) BUY – HOLD – GO LONG

जब FAST MOVING AVERAGE (SHORT TIME EMA) दुसरे SLOW MOVING AVERAGE (LONG TIME EMA) से अधिक होता है, तो इसका मतलब LONG TERM में स्टॉक का PRICE ऊपर जाने वाला है,

और इसलिए हमें ऐसा crossover दिखने पर स्टॉक को खरीदना चाहिए, और अपनी लॉन्ग पोजीशन बनानी चाहिए,

दूसरा अगर हमारे पास स्टॉक पहले से खरीदा हुआ है, तो हमें स्टॉक में अपनी पोजीशन को और LONG रखनी चाहिए, जब तक कुछ और signal न मिले,

2) EXIT (SQUARE OFF)

जब FAST MOVING AVERAGE (SHORT TIME EMA) दुसरे SLOW MOVING AVERAGE (LONG TIME EMA) से नीचे होता है, तो इसका मतलब LONG TERM में स्टॉक का PRICE नीचे जाने वाला है,

और इसलिए हमें ऐसा crossover दिखने पर स्टॉक को बेच देना चाहिए, और अपनी पोजीशन को SQUARE OFF बनानी चाहिए,

दूसरा अगर हमारे पास स्टॉक पहले से खरीदा हुआ है, तो हमें स्टॉक में अपनी पोजीशन को और LONG रखनी चाहिए, जब तक कुछ और signal न मिले.

Indicators [इंडीकेटर्स] Technical Analysis

INDICATORS क्या होते हैं?

Indicators अपने आप में एक Independent Trading System होते हैं, जो कि संसार के बेहद सक्सेसफुल ट्रेडर्स के द्वारा बनाया गया Technical Trading System माना जाता है,

ध्यान देने वाली बात है कि –Moving average भी एक इंडीकेटर्स ही होता है, और ऐसे ही बहुत ढेर सारे इंडीकेटर्स मार्केट में प्रचलन में हैं,

INDICATORS कैसे दीखते हैं?

इंडीकेटर्स कुछ Mathematical और Statistical कैलकुलेशन होते हैं, जो किसी स्टॉक के टेक्निकल एनालिसिस चार्ट पर अलग अलग line (रेखा चित्र) के रूप में दिखाए जाते हैं,

इंडीकेटर्स मार्केट के ट्रेंड के अनुसार, टेक्निकल एनालिसिस के चार्ट में, ट्रेंड के ऊपर या नीचे, एक line (रेखा चित्र) के रूप में हो सकता है,

Technical Analysis Chart में एक साथ बहुत सारे अलग अलग इंडीकेटर्स को इस्तेमाल में लिया जा सकता है,

इंडीकेटर्स का इस्तेमाल अलग अलग ट्रेडर अलग अलग तरह से मार्केट की दिशा को समझने के लिए इस्तेमाल में लेते हैं,

INDICATORS का अर्थ और इसका इस्तेमाल

Indicators का हिंदी अर्थ होता है – संकेतक,

और इस तरह टेक्निकल एनालिसिस में इंडीकेटर्स यानि संकेतक का इस्तेमाल इसलिए किया जाता है, ताकि चार्ट पर

किसी स्टॉक के बारे में ऐसे संकेत देखे जा सके, जिस से ये पता चल सके स्टॉक के past performance के मुकाबले आज कैसा performance है, और future में कैसे performance कैसा हो सकता है,

INDICATORS कितने होते हैं,

इंडीकेटर्स की कोई निश्चित संख्या नहीं है, ट्रेडर्स को को जब कुछ नए पैटर्न समझ में आते हैं, इसी नए पैटर्न को वे एक इंडीकेटर्स मान कर उसे एक इंडीकेटर्स का नाम दे देते हैं,

और इसी कारण बहुत सारे नए इंडीकेटर्स बनते जाते हैं, और किसी एक इन्सान के लिए सारे इंडीकेटर्स को समझना बहुत बड़ा काम बन जाता है,

कोई व्यक्ति सारे इंडीकेटर्स के बारे में समझने की कोशिश करे तो उसका बहुत ज्यादा समय भी खराब हो सकता है, और अंत में उसे कुछ लोकप्रिय इंडीकेटर्स पर ही वापस आना पड़ेगा,

इसलिए हमें उन्हीं इंडीकेटर्स को समझने की जरूरत है, जो समय के साथ जांचे और परखे (Time Tasted) गए हैं, ताकि हम भी उन इंडीकेटर्स के सही इस्तेमाल करके फायदा उठा सकें,

INDICATORS के फायदे (BENEFITS OF USING INDICATORS)

इंडीकेटर्स के इस्तेमाल करने से ट्रेडर को होने वाले फायदे कुछ इस प्रकार हैं –

- 1) **Price Movement की समझ** – इंडीकेटर्स के इस्तेमाल से हमें किसी स्टॉक के price में होने वाले बदलाव (movement) को अच्छे से समझने बहुत हेल्प मिलता है,
- 2) **Price के UP और LOW लेवल की सुचना** – इंडीकेटर्स के इस्तेमाल से हमें किसी स्टॉक के PRICE के ऊपर और नीचे जाने के लेवल को अच्छे से समझने में बहुत हेल्प मिलता है.
- 3) **TREND की ADVANCE में समझ** – इंडीकेटर्स के इस्तेमाल से हमें मार्केट के ट्रेंड का कन्फर्मेशन मिलने के साथ आगे आने वाले ट्रेंड को भी समझने में बहुत हेल्प मिलता है, यानी इंडीकेटर्स से CURRENT TREND की कन्फर्मेशन मिलने के साथ आने वाले TREND को भी समझा जा सकता है.
- 4) **Confirming Other Technical Tools** – इंडीकेटर्स के इस्तेमाल से हमें technical analysis के दुसरे tools जैसे कि – कैंडलस्टिक पैटर्न, volume और सपोर्ट and रेजिस्टेंस द्वारा दिए जाने वाले signal को भी हम कन्फर्म कर सकते हैं, और इस से हमें double कन्फर्मेशन मिलता है कि हमें कोई ट्रेड करना चाहिए या नहीं.

धन्यवाद

दोस्तों हम आशा करते हैं की यह ईबुक आपको पसंद आया होगा, दोस्तों शेयर मार्केट बहुत बड़ा फिल्ड है, आप इसे पूरी तरह तभी सीख सकते हैं। जब आप इसका अनुभव लेंगे, तो हमेशा सीखते रहेंगे, और सोच समझ कर इन्वेस्ट करेंगे, और छोटी छोटी स्टेप ले, जिससे आपको ज्यादा लांस नहीं होगा, और आप सीखेंगे भी।

gmail- sharesmind441@gmail.com

COPYRIGHT: ALL RIGHTS RESERVED. NO PORTION OF THIS BOOK MAY BE PRODUCED IN ANY FORM, DON'T COPY ANYTHING FROM THIS BOOK OR DON'T SHARE THIS BOOK WITH ANYONE WITHOUT PERMISSION OF AUTHOR.